अव्यक्त सन्देश

(अव्यक्त वतन से प्राप्त अव्यक्त संदेशों का संग्रह)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय
मुख्यालय: पाण्डव भवन, आबू पर्वत, (राजस्थान)

अव्यक्त शिवबाबा द्वारा ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से अव्यक्त वतन से जो दिव्य संदेश प्राप्त हुए, यह पुस्तिका उनका संकलन है।

प्रकाशक :
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय
आबू पर्वत, (राजस्थान) भारत

प्रथम मुद्रण :
१५ सितम्बर, १९९३
प्रतियाँ : १०,०००

मुद्रक :
ओम् शान्ति प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)

२०.	कोमल के बजाए कमाल करने वाले बनो	७०.
२१.	परिवर्तन और प्रवेशता की एक्सरसाइज़	७३
२२.	डेड साइलेन्स के बजाए स्वीट साइलेन्स का अनुभव करो	७७
२३.	एवॅररेडी बनो तो प्रकृति आपका स्वागत करे	८२
२४.	ग्लोबल हास्पिटल उद्घाटन अवसर पर अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश	८५
२५.	योग के प्रयोग से प्रगति की प्रमोशन लो	८६
२७.	त्याग करना छोड़ना नहीं, भाग्य लेना है	८७
२८.	लगाव से मुक्त होना ही अव्यक्त वर्ष मनाना है	९१
२९.	समर्पित जीवन का आधार — हिम्मत	९४
३०.	बच्चों की मेहनत और बाप की मोहब्बत	९६
३१.	वृत्ति और वाणी के साथ-साथ सेवा करो	९९
३२.	हर दृश्य साक्षी दृष्टा बनकर देखो	१०२
३३.	अव्यक्त वर्ष त्रिमूर्ति वरदान का वर्ष	१०३
३४.	सफलता का आधार है — स्वयं परिवर्तन होकर दूसरों को परिवर्तन करने में सहयोगी बनना	१०५
३५.	आकारी से निराकारी और निराकारी से आकारी बनने का खेल	१०६
३६.	सन्तुष्ट रहो और सन्तुष्ट करो	१०९
३७	प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष रूप दिखाओ	११२
३८.	आपरेशन नहीं — शिवमन्त्र स्वरूप बच्चों के लिये छू-मन्त्र है	११४
३९.	एडवांस और एडवाइज़र पार्टी का मिलन	११५

अमृत-सूचि :

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ
१.	हर कर्म ज्ञानस्वरूप होकर करो	५
२.	निर्विघ्न बनने का साधन – सेवा	६
३.	फरिश्ता बनने के लिए याद और सेवा का बैलेन्स रखो	९
४.	स्नेह और सेहत का बैलेन्स रखो	१२
५.	स्व-परिवर्तन से वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा करो	१४
६.	अनन्य वह जिसका अन्य कोई नहीं	१५
७.	डबल लाईट बनने की साधना करो	२०
८.	अपनी पॉवरफुल स्टेज से आशीर्वाद का ठप्पा लगाओ	२४
९.	सबसे बड़ी शक्ति है – संकल्प शक्ति	२८
१०.	ब्रह्मा बाप समान दृष्टि में स्नेह और स्वमान समाया हो	३३
११.	मेरे पन को मिटाने की विधि है – त्याग और वैराग	३७
१२.	नुमाःशाम के समय भक्तों की पुकार सुनो	४०
१३.	लक्ष्य और लक्षण समान करना ही समर्पित होना है	४३
१४.	अन्तर्मन के वाहन से उड़ती कला का अनुभव करो	४७
१५.	सबसे बड़ी शक्ति – स्नेह की शक्ति	५१
१६.	निश्चय, नशा और निशाना – तीनों में फुल मार्क्स लो	५५
१७.	योगी तो हो, अब प्रयोगी बनो	५८
१८.	योग और प्रयोग का बैलेन्स रखो	६३
१९.	फरिश्ता बनने के पहले मायाजीत, प्रकृतिजीत बनो	६७

हर कर्म ज्ञान-स्वरूप होकर करो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज बापदादा विशेष सभी अपने संगमयुगी पद्मापद्म भाग्यशाली मीठे बच्चों को जैसे सम्मुख इमर्ज कर प्राप्ति प्रमाण नम्बरवार बहुत-बहुत स्नेह भरी याद-प्यार और सुन्दर शिक्षा दे रहे थे। बाबा बोले—"भविष्य और वर्तमान समय प्रति विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं कि अब पुरानी दुनिया के परिवर्तन का समय समीप आ रहा है। इसलिए दिन-प्रतिदिन सर्व पिछले और अब के हिसाब-किताब चुक्तु होने की मशीनरी अब तीव्र रूप में प्रैक्टिकल में दिखाई देगी। क्योंकि कर्मों का फल मिलने की सीजन अब फुल फोर्स में चलनी है। इसलिए अनेक प्रकार के भूतों का वार होता रहेगा। जैसे—व्यर्थ संकल्प-विकल्प का भूत, भय का भूत। अनेक प्रकार के दोष का भूत, जैसे—संगदोष, अपने वा दूसरों के संस्कारों के वातावरण के दोष का भूत, अशुद्ध आत्माओं की छाया का भूत, दिलशिकस्त होने का भूत, बुद्धि से राइट-रांग को न समझने कारण जीवन में खुशी, सन्तुष्टता की प्राप्ति की अनुभूति न होने कारण उदासी, नीरसता का भूत, वा स्वयं को असहारेपन वा अकेला समझने का भूत आदि आदि अनेक रूपों से अपने वश में लाने का प्रयत्न करेंगे।

इसलिए इन एडवांस बच्चों को सावधान कर रहे हैं कि कोई भी संकल्प को कर्म में लाने के पहले आदि-मध्य-अन्त को स्वयं सोच-समझ वा कोई श्रेष्ठ आत्मा का साकार में सहयोग ले कर्मों की गति को समझ वा बापदादा द्वारा वेरीफाय कराके फिर कर्म में आओ तो माया के वश हो उल्टे कर्म करने का अल्पकाल का जोश रूहानी होश में बदल जायेगा, साथ-साथ वर्तमान और भविष्य के कड़े दण्ड से बच जायेंगे। क्योंकि कई बच्चे त्रिकालदर्शी स्टेज पर स्थित न होने के कारण जिन साधनों द्वारा कर्मों से वा जीवन से छूटना समझते हैं, वह छूटना नहीं लेकिन लाख गुणा अनेक बार की जीवनबन्ध

स्थिति वा कर्म-बन्धन की फाँसी पर लटकने का कर्म, कर्म नहीं है लेकिन कड़ा विकर्म है—यह समझ नहीं सकते हैं। इसलिए ज्ञान-स्वरूप होकर हर कर्म करने से वर्तमान और भविष्य सरल और उज्ज्वल होगा।

बापदादा बार-बार बच्चों को स्मृति-स्वरूप, समर्थी-स्वरूप बना रहे हैं और फिर से याद दिला रहे हैं कि इस संगम के हर सेकेण्ड और संकल्प की अनगिनत कमाई को, अपने ऊंचे ब्राह्मण जीवन और ब्राह्मण कुल के महत्व को कभी भूलो मत। बापदादा के साथ-साथ अपने अमूल्य जीवन और श्रेष्ठ संगम के समय के सदा गुण गाते खुशी में नाचते चलो। क्योंकि देवताई जीवन से यह ब्राह्मण जीवन बहुत-बहुत श्रेष्ठ है, जो आज तक आपके नाम वाले ब्राह्मण भी अन्त तक पूजे और महान् माने जाते हैं। इसलिए अपने स्वमान को भूलो मत। ऐसे सदा हर्षित, सदा उमंग-उत्साह में रह अन्य का भी उमंग-उत्साह बढ़ाने वाले, हर कदम में पद्मों की कमाई जमा करने वाले मुरब्बी बच्चों, सपूत सिकीलधे बच्चों को याद-प्यार।"

१४.१०.८३

निर्विघ्न बनने का साधन – सेवा

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज सर्व ब्राह्मण आत्माओं की याद-प्यार लेते हुए बापदादा के पास पहुँची तो बापदादा ने नयनों द्वारा वरदानी दृष्टि देते, मधुर मुस्कराहट से मिलन मनाते सर्व का याद-प्यार स्वीकार किया और मधुर बोल बोले—बच्ची, क्या सन्देश और समाचार लाई हो? मैं बोली—बाबा, आजकल तो सब बच्चे साकार मिलन के दिन गिन रहे हैं और साथ-साथ सेवा भी देश-विदेश में चारों ओर जोर-शोर से चल रही है। क्योंकि विदेश में हमारे विशेष भाई-बहन गये हुए हैं और भारत में इस समय ही बहुत उत्सव हैं। इसलिए सब विशेष चान्स ले रहे हैं। याद और सेवा—दोनों लहरें चारों ओर हैं।

बापदादा बोले—"बच्ची, बापदादा बच्चों की सेवा देख सदा हर्षित होते कि कैसे तन, मन, धन और समय लगाकर विश्व-सेवा में उमंग-उत्साह से चल रहे हैं ! यह सेवा का साधन ही निर्विघ्न बनाने का सहज साधन है। लेकिन सेवा की हलचल में रहते याद की अचल स्थिति में स्थित रहते हैं तो स्वयं तथा सेवा में और ज्यादा सफलता का अनुभव होता है। बापदादा तो बच्चों को सदैव सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने के लिए इशारा देते ही रहते हैं। अभी भी सेवा में रूहानियत की अलौकिकता, धारणा रूप की चमक और न्यारे तथा प्यारेपन के निमित्त भाव की झलक का चमत्कार और बढ़ाना है। इस रूहानी चमत्कार से ही जयजयकार होनी है। अब तक सेवा द्वारा तीर तो लगता है लेकिन वह दिमाग तक ही जाता है, दिल पर नहीं लगता है। इसलिए घायल होते हैं लेकिन मरजीवा बन बाप के नहीं बनते हैं। अब ऐसा बल भरो जो बलि चढ़ जाएं। फिर भी कई बच्चे अच्छे-अच्छे भी हैं और सभी बच्चे मोहब्बत से मेहनत करते हैं। इसलिए बापदादा मुबारक देते हैं !"

ऐसे कहते हुए बहुत स्नेह रूप से बाबा देख रहे थे। तो इतने में क्या देखा कि ब्राह्मणों की बहुत बड़ी सभा बाबा के सामने इमर्ज हो गई और बाबा देश-विदेश के सभी बच्चों से सम्मुख मिलन मना रहे हैं। बापदादा की दृष्टि जब फॉरेन के बच्चों पर पड़ी तो बहुत मीठा-मीठा मुस्कराये और बोले—"बच्चों के अति स्नेह और दिल के समाचार बाबा के पास पहुँचते रहते हैं। रूह-रिहान में भी बहुत मीठी-मीठी सच्ची दिल की बातें बाप से करते हैं। सेवा में भी दिल व जान, सिक व प्रेम से चलते रहते हैं। अब तो भारत से गये हुए महावीरों ने और ही सोने में सुहागा भर दिया है। बहुत अच्छी, अथक, स्नेह तथा लगन से सेवा कर रहे हैं और करा रहे हैं। बापदादा मन से, मुख से ऐसे दिलरुबा बच्चों को, हर एक को नाम सहित 'निर्विघ्न भव', 'फरिश्ता भव', 'सहज योगी, स्वत: योगी भव' के वरदान दे रहे हैं।" 'जीते रहो, उड़ते रहो'— ऐसे कहते हुए बाबा विशेष अपनी जानकी दादी, जगदीश भाई, निर्वैर भाई तथा मनोहर बहन को दिल से वरदानों भरी मुबारक दे रहे थे और साथ में अपनी चन्द्रमणि दादी, रमेश भाई और उषा बहन को भी बहुत

ही प्यार दे रहे थे। ऐसे मिलन मनाते हुए भारतवासी बच्चों की ओर देखा और हरेक को मीठी-मीठी दृष्टि देते मिलन मनाते बोले–

"भारत के बच्चों का भाग्य कितना बड़ा है जो भाग्यविधाता को भी साकार में भारत में बुला लिया ! बापदादा तो बच्चों के भाग्य को देख-देख हर्षा रहे हैं। भारत में भी सेवा की लगन बहुत अच्छी है और भारत के वारिस बच्चों ने अनेकों को वर्सा दिलाया है और दिलाते रहेंगे। बाप तो हर बच्चे के गुण गाते रहते हैं। अब देश-विदेश के सभी बच्चों प्रति एक और आश बाप की है कि विश्व में बेहद बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने की सेरीमनी की डेट बच्चे कब निश्चित करते हैं? क्योंकि बाप को बच्चों की दुःखमय, दर्दमय हालत देख रहम आता है कि कब तक यह सहन करते रहेंगे। क्या आप बच्चों की दिल में रहम की लहर नहीं उठती है? बेहद के परिवर्तन का उमंग नहीं उठता? हे देवी और देव, आपको देव-पुजारियों की पुकार नहीं सुनाई देती? झूठ के राज्य में सच्ची भक्त-आत्मायें कितनी दुःखी हो रही हैं, वह दुःख की आवाज नहीं आती है? इसलिए बच्चे, अब सुख के राज्य-तिलक की सेरीमनी मनाओ। प्रत्यक्षता का झण्डा लहरना और बाप का बच्चों को विश्व के राज्य का तिलक देना और साक्षी हो देखना। तो बोलो, राज्य-तिलक का दिन कब लायेंगे? सर्व को सुखी बनाने वाला वरदानी, विश्व-कल्याणी रूप कब प्रत्यक्ष करेंगे?"

ऐसे बहुत मीठे-मीठे बोल, दिल को आकर्षित करने वाले बोल बोलते हुए बापदादा सम्मुख एक-एक को सर्व शक्तियों की लाइट और माइट दे रहे थे। बाद में बापदादा ने विशेष अपनी प्यारी दादी जी को सामने बुलाए, अपनी बाहों की माला पहनाए, गोदी के झूले में झुलाए मस्तक पर होली हस्त घुमाते हुए बोला--"बच्ची बाप समान साकार सैम्पल- स्वरूप है। बाबा की चाबी से चलने वाली चैतन्य महान् मूर्त्ति है। इसलिए सदा फ्रेश फरिश्ता है।" उसके साथ अन्य अनन्य बहनों को भी बापदादा ने विशेष स्नेह से पास बुलाया और बहुत-बहुत स्नेह के सागर में समा लिया। बस, आज तो सम्मुख मिलन मेला ही वतन में था। बाबा बोले–"किस-किसको बुलाऊं, किस-किसको खास

याद करुँ ! एक-एक बच्चा एक-दो से प्रिय है । इसलिए सभी से विशेष स्नेह और प्यार है ।" इस प्रकार सभी बच्चों की याद-प्यार देते और लेते मैं साकार वतन में पहुँच गई । ओम् शान्ति ।

८.५.८८

फरिश्ता बनने के लिए याद और सेवा का बैलेन्स रखो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज जैसे ही मैं वतन में पहुँची तो देखा कि आप सब की याद हमारे जाने से पहले ही बापदादा के पास पहुँच चुकी थी । जैसे ही मैं बाबा के नज़दीक जा रही थी वैसे ही बाबा बहुत मीठी दृष्टि दे रहे थे और मैं उसी दृष्टि के स्नेह में समाती जा रही थी । पहले तो मैं अकेली थी लेकिन जब मैं बाबा के और नज़दीक जा रही थी, तब मुझे लगा कि मेरे पीछे-पीछे और भी हैं । बाबा के पास पहुँचते ही बाबा ने मुझे कहा कि—आओ बच्ची । और फिर अपने सामने खड़ा कर दृष्टि देने लगे । फिर बाबा ने कहा—बच्ची, अब देखना । तो मैं देखने लगी और बाबा भी देख रहे थे ।

हमने देखा कि सिर्फ यहाँ बैठे भाई-बहन ही नहीं लेकिन देश-विदेश के अनेक भाई-बहनें दूर-दूर से बाबा के पास आ रहे थे । उन्हों के आने की रीति बड़ी न्यारी थी ! वतन में सबका आकारी लाइट का रूप तो होता ही है, तो फरिश्ता रूप तो सब का था ही लेकिन आने की न्यारी रीति यह थी कि उनके पांव धरती पर थे लेकिन एक लाइट के रॉड पर थे जो धरती से ऊंची थी । तो उसी रॉड पर सभी फरिश्ते दो-दो या तीन-तीन की लाइन में आ रहे थे । जैसे वे बाबा के पास आते थे वैसे वे बाबा की बांहों में समाते जाते थे । इसी प्रकार बहुत सारे बच्चे देश-विदेश के बाबा की बाहों में समा गये । फिर बाबा ने

पूछा–"बच्ची, यह दृश्य देखा ? इसका राज़ क्या था ? इसका क्या रहस्य था ?" मैं मुस्कराई !

बाबा ने कहा कि–"फरिश्ता बनना माना डबल लाइट बनना अर्थात् बैलेन्स में रहना । लाइट की रॉड जो दिखाई यह बैलेन्स की निशानी थी । रॉड पर सीधे चलकर आ रहे थे । अगर बैलेन्स ज़रा भी कम होता तो डगमग होते ।" फिर बाबा ने कहा कि–जो बच्चे फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट बनते हैं वे सदा बैलेन्स में रहते हैं । वे रॉड पर होते हुए भी ऐसे चल रहे थे जैसे धरती पर चल रहे हों । फिर बाबा ने कहा कि–"जिनके बुद्धि रूपी पांव बैलेन्स के रॉड पर रहते हैं वे बहुत सहज धरती के आकर्षण से परे रहते हैं । रॉड धरती से ऊपर था ना ! तो जो बच्चे याद और सेवा के बैलेन्स में रहते हैं वे एक तो डबल लाइट फरिश्ता बनते हैं और दूसरा फरिश्ता बन बैलेन्स में रहने से वे सदा प्रकृति रूपी धरनी के आकर्षण से, पांच विकारों के आकर्षण से या व्यक्ति और वस्तु के आकर्षण से ऊंचे होते हैं ।"

यह बाबा ने इस दृश्य में दिखाया । तो इस प्रकार बाबा ने बच्चों का स्वागत किया और स्वागत के दृश्य का रहस्य सुनाया । फिर बाबा ने सभी बच्चों को अपनी बाहों में समा लिया । पहले तो सब बच्चे बाबा की बाहों में समा गये । बाबा की बाहें भी इतनी लम्बी होती गयीं जो सबको समा लिया । फिर तो बाबा ने एक-एक बच्चे के सिर पर प्यार का हाथ फेरा । लास्ट बच्चे के ऊपर भी बाबा का हाथ ऐसे पहुँच रहा था जैसे वह एकदम नज़दीक हो । ऐसे नहीं लग रहा था कि इतने बच्चों के सिर पर कैसे बाबा का हाथ पहुँचेगा । फिर बाबा ने एक-एक बच्चे को दृष्टि देते हुए सिर पर प्यार का हाथ घुमाया । बच्चे भी बाबा से दृष्टि लेते बाबा के प्यार में खोते जा रहे थे । फिर बाबा ने कहा कि–"बाबा बच्चों को इतना प्यार क्यों दे रहे हैं ? क्योंकि बाबा देखते हैं कि ये मेरे मददगार बच्चे हैं । तुम बाबा की बाहें हो ना ! बाहें सहयोग की निशानी होती हैं ना ! इसलिए बाबा ने बच्चों को बाहों में समा लिया है और अपने हस्तों से ही मस्तक पर प्यार कर रहे हैं ।"

बाबा ने कहा कि–" चारों ओर बाबा देख रहे हैं कि बच्चे बड़े

उमंग-उत्साह से सेवा की धुन में लगे हुए हैं। मैजारिटी बच्चों के दिल में यही उमंग है कि—बस, जैसे बाबा की आश है हमारे लिये, वैसे ही बाबा को प्रत्यक्ष करके ही दिखाएं। अभी ही, जल्दी से जल्दी बाबा को प्रत्यक्ष करें। बच्चों के ये उमंग-उत्साह के संकल्प के वायब्रेशन्स बाबा के पास पहुँच रहे हैं। इसीलिये बाबा रिटर्न दे रहे हैं। वैसे तो बच्चे निष्कामी हैं। बच्चे नहीं कहते हैं कि रिटर्न चाहिए। लेकिन बाप स्वयं दे रहे हैं। क्योंकि बाबा जानते हैं कि बच्चों ने बहुत मेहनत की है और बड़े उमंग-उत्साह से सेवा में आगे बढ़ रहे हैं। बच्चे ग्लोबल को-ऑपरेशन (Global Co-operation) का कार्य कर रहे हैं और बाप स्नेह देने का कार्य कर रहे हैं। आप सर्व को सहयोगी बना रहे हो और रिटर्न में बाप आपको स्नेह दे रहे हैं।" तो यह रिटर्न बाबा का जैसे दिखाई दे रहा था। बाबा ऐसे ही नहीं मिल रहे थे लेकिन एक-एक के सिर पर बड़े प्यार से हाथ घुमा रहे थे। जैसे कोई बहुत काम करके आता है तो उसकी थकावट मिटाने के लिए सिर पर हाथ घुमाते हैं ना ! वैसे ही बाबा सबकी थकावट मिटा रहे थे।

उसके बाद बाबा ने कहा कि—"बच्ची, यह बाबा का प्यार है ना ! जहाँ प्यार है वहाँ सब बातों को सेकेण्ड में और सहज पार कर लेते हैं। बाबा का प्यार छोटी-मोटी बातों को सहज पार करा देता है। जो प्यार में सब बातों को पार कर देते हैं वे अपार प्राप्तियों के झूले में झूलते हैं। तो आज बाबा सभी बच्चों को तीन शब्दों की गिफ्ट दे रहे हैं—(१) प्यार में रहो, (२) जो बातें सामने आती हैं उन्हें प्यार से सहज पार कर लो और (३) सदा अपार खुशी में, सुख में, आनन्द में, प्रेम में, ज्ञान में—अपार प्राप्तियों के झूलों में झूलो। जब बच्चे ये तीनों शब्द याद रखेंगे तब बैलेन्स रहेगा और जहाँ बैलेन्स है वहाँ सभी फरिश्ते के माफिक ऊंचे होंगे तो कोई भी प्रकार का आकर्षण नहीं होगा।" तो इसी रीति आज बाबा ने हम सब बच्चों को बहुत-बहुत प्यार किया, स्वागत भी किया और इन तीनों शब्दों की गिफ्ट भी दी। बाबा ने कहा कि इन तीन शब्दों को सदा साथ रखना। प्यार के कारण कोई भी चीज पार करने में मुश्किल नहीं होगी। मीटिंग वालों के लिये बाबा ने कहा कि वर्गीकरण की

मीटिंग हो रही है । क्योंकि प्रोग्राम ही वर्गीकरण का हो रहा है । वर्गीकरण का अर्थ वर्गों में फँसना नहीं है लेकिन अपनी सेवा की मौज़ में आगे बढ़ते रहना है । यह निमित्त मात्र वर्ग बनाए जाते हैं । लेकिन बेहद का बाबा है, बेहद की सेवा है और बेहद का नशा है और बेहद की सफलता को पाना है । यह था मीटिंग वालों के प्रति संदेश ।

२६.१२.८८

स्नेह और सेहत का बैलेन्स

(मीठी-मीठी दादी जी के निमन्त्रण प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

अपनी मीठी-मीठी दादी जी का हुज्जत और स्नेह भरा सन्देश ले बापदादा के पास गई । बापदादा से सदा के प्रमाण मुस्कराती मूर्त और रूहानी नजरों से मिलन हुआ और बाबा ने कहा—"बच्ची, आज किन विचारों में मगन हो ? क्या कोई विशेष समाचार है ?" मैं बोली—"बाबा, सब ब्राह्मण बच्चों का जो बाबा से मिलन का संकल्प है वह सुनकर बहुत सोच चलता कि यह कैसे पूर्ण हो और दादी जी के पत्र को पढ़कर तो दिल चाहता है कि कभी हमने दादी को 'ना' नहीं किया है, इसलिए कुछ भी हो पहुँच जाऊं । आप तो जो चाहे कर सकते हो !" हमारा चेहरा देखते बाबा बड़ा राज़युक्त मुस्करा भी रहा था, सुन भी रहा था । फिर बाबा बोले—"बच्ची, क्या तुम नहीं जानती कि बाप को तुम बच्चों से भी ज्यादा बच्चों से मिलन मनाए बच्चों को रिफ्रेश करने का ओना है, उमंग है ! क्योंकि जिम्मेवार तो फिर भी बाप है । साथ-साथ तुम्हारी दादियों की हुज्जत और स्नेह के सन्देश प्रति बाप को मुरब्बी बच्चों का रिगार्ड भी है । क्योंकि निमित्त हैं, समान हैं । फिर भी बापदादा सवेरे-सवेरे एक खेल देख रहे थे । चलो तो, तुम्हें भी दिखाऊं ।"

ऐसे कहते बाबा आगे बगीचे में ले चले । वहाँ क्या देखा कि एक बहुत

बड़ा तराजू था जो दूर से बहुत अच्छा चमक रहा था। बाबा बोले—बच्ची, आगे जाकर देखो। मैं आगे गई तो क्या देखा कि तराजू के दो पलड़ों पर एक तरफ लिखा हुआ था 'स्नेह', दूसरे तरफ लिखा हुआ था 'सेहत' (स्वास्थ्य) और ऊपर डन्डी जो तोलने की होती है, आधार होता है, उस पर लिखा हुआ था 'ड्रामा'। मैं देख ही रही थी तो बापदादा आगे आये और कहा—देखा, किस तरफ का पलड़ा भारी है? तो थोड़ा-सा हिलाने से देखा कि सेहत (तबीयत) का पलड़ा नीचे गया। मैंने बोला—बाबा, सदा तो स्नेह का पलड़ा भारी होता है। आज इसका रहस्य क्या है?

बाबा बोले—"बच्ची, देखो, सब बच्चे कहते हैं बाबा रथ को ले आये। सिर्फ दृष्टि दे या सिर्फ रथ कमरे में बैठ जाए। अब बापदादा तो जो चाहे कर सकते हैं। रथ किसी भी हालत में हो, रथवान उसको भी चला सकता है, काम ले सकता है। लेकिन बच्चे सिर्फ स्नेह, भावना और वर्तमान को जानते; बाप ड्रामा की भावी, सेहत और तीनों काल को जानता है। इसलिए अगर अब जबरदस्ती अधीन कर रथ से काम लिया तो सदा के लिए कमजोरी का कारण बन जायेगा। क्योंकि सिस्टम में अन्तर पड़ता ही है। बच्चे तो हुज्जत रखते लेकिन बाप की प्रवेशता होना ही कितना शक्तिशाली है, कोई साधारण बात नहीं है! यह तो बच्ची की नेचर इजी है, निःसंकल्पता के निजी संस्कार हैं और पुण्य का खाता जमा है। यह पार्ट देखने में इजी लगता है लेकिन बाप जानते हैं कि रथ पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है।"

बाप स्नेहयुक्त के साथ राज़युक्त बन बच्चों को कह रहे हैं कि—बच्ची तो सदा हाजिर है, आदि से अब तक बड़ों से दिल का स्नेह होने कारण कब 'ना' नहीं की है, न कर सकती है। और ही स्नेह में भारी बन जाती। लेकिन रथवान जिम्मेवार है। इसलिए वर्तमान और भविष्य को जान डायरेक्शन दे रहे हैं कि इस सीज़न में रथ को एग्जर्शन (थकावट) से बचाए इजी और रेस्ट देने से अगली सीजन में मुरली द्वारा मिल सकने का फायदा है। क्योंकि अब की शक्ति रथ को सदा के लिए शक्तिशाली बनाने में सहयोगी है। इसमें रथ को और दूसरों को—दोनों को फायदा है। ओम् शान्ति।

५.४.९०

स्व-परिवर्तन से वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा करो

(मीटिंग में आये हुए भाई-बहनों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज जब बापदादा के पास गई तो मीठे बाबा बहुत मीठी दृष्टि से मिलन मनाते हुए बोले—आओ बच्ची, क्या समाचार लाई हो? मैं बोली—बाबा, फारेन वाले तो अब जा रहे हैं। अब भारत के मुख्य भाई-बहनों की मीटिंग आरम्भ हो रही है। यह सुनकर कुछ सेकेण्ड के लिए बाबा जैसे कोई डीप (Deep; गहन) विचारों में चले गये और बाद में बोले—"देखो बच्ची, बापदादा को इन विशेष सर्विसएबल बच्चों प्रति दिल का दुलार है। क्योंकि बाप से बच्चों का प्यार बहुत है। इसलिए दिन-रात सेवा में लगे हुए हैं। बापदादा बच्चों की सेवा की लगन को देख खुश भी होते हैं लेकिन समय के प्रमाण अब स्वयं और सेवा में परिवर्तन देखना चाहते हैं। क्योंकि अब दोनों की गति तीव्र होनी आवश्यक है। इसके लिए जब विशेष आत्मायें निमित्त बनें तब सब में वायब्रेशन जाये।"

बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक को अपने प्रति और दूसरों को सहयोग देने अर्थ दिल से संकल्प उठे और यह लहर फैले। क्योंकि अनेक बार मुरली सुनते, रूहरिहान करते—उस समय तो समझते हैं कि मेरे में वा वायुमण्डल में यह परिवर्तन होना चाहिए। लेकिन 'चाहिए-चाहिए' में बापदादा के दिल की चाहना कहो, शुभ आश कहो—वह रह गई है। अब ऐसे बच्चे चाहिए। जैसे सेवा के निमित्त बनने की हिम्मत रखी तो बापदादा की मदद से सेवा वृद्धि को प्राप्त हो रही है, ऐसे अब फिर ऐसा ग्रुप निकले जो यह दृढ़ संकल्प करे कि—"हम स्व-परिवर्तन के श्रेष्ठ वायब्रेशन से वायुमण्डल को परिवर्तन कर दिखायेंगे, इस सेवा के लिए अगर कुछ अपने नाम का, सेवा की रूपरेखा का त्याग भी करना पड़े तो करके ही छोड़ेंगे।" ऐसा बाप के प्यार का सबूत देने

वाले सपूत बच्चों का ग्रुप बापदादा चाहते हैं—जो सिर्फ 'होना चाहिए' नहीं कहे लेकिन स्वयं समाधान-स्वरूप ग्रुप हो। ऐसे ग्रुप के ऊपर बापदादा के दिल की दुआओं की बरसात स्वत: बरसेगी और स्वयं को आफर करने वालों को बापदादा अपनी तरफ से भी विशेष गिफ्ट के रूप में कुछ एकस्ट्रा मार्क्स दे 'पास विद् ऑनर' बना देते हैं। ऐसे कहते बापदादा आज बहुत प्यार स्वरूप भी थे, साथ-साथ जैसे मार्शल अपनी सेना को उमंग दिला रहे हैं—यह दोनों 'स्नेह' और 'शक्ति' रूप का मेल था। इसके बाद बाबा ने कहा—बच्ची, डिटेल इशारे तो मुरलियों द्वारा दिये ही हैं। इशारे से समझने वाले बच्चों ने इशारे धारण कर ही लिए हैं। ऐसे मिलन मनाए मैं साकार दुनिया में पहुँच गई।
ओम् शान्ति

१२.४.९०

अनन्य वह जिसका अन्य कोई नहीं

(सतगुरुवार के दिन ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

सदा की रीति प्रमाण आज जब मैं वतन में पहुँची तो बाबा सामने ही खड़े थे और बांहें फैलाये 'आओ बच्चे, आओ बच्चे' कह बुला रहे थे। जैसे ही मैं नजदीक गई तो बाबा मेरे को दृष्टि देते हुए भी जैसे और कहीं थे। ऐसे महसूस हो रहा था जैसे बाबा देख मेरे को रहे हैं लेकिन यहाँ हैं नहीं। मैं कैच करने की कोशिश कर ही रही थी कि बाबा कहाँ हैं? तो थोड़े ही समय के बाद बाबा ने पूछा—बच्ची, बाबा आज कहाँ हैं, जानती हो? तो मैं मुस्कराने लगी। बाबा ने कहा—"बच्ची, तुमको देखते हुए भी मेरे को सभी बच्चे याद आ रहे हैं। मैं आप एक को नहीं देख रहा हूँ लेकिन जो मेरे अनन्य बच्चे हैं, वह सब मेरे सामने हैं। मैंने कहा—बाबा, सभी अनन्य बच्चे तो मधुबन में आये हुए हैं। जब मैं यह कह रही थी तो बाबा मुस्कराये और कहा—हाँ बच्ची!

बाबा का मुस्कराना बहुत रहस्ययुक्त था। मैंने कहा—बाबा, आप क्या सोच रहे हैं?

बाबा ने कहा—आज मैं अपने अनन्य बच्चों को चुन रहा हूँ। मैंने कहा—बाबा, आप किस प्रकार के बच्चे चुन रहे हैं? आज बाबा का रूप बहुत हल्का था, इसलिए रूहरिहान कर रहे थे। फिर बाबा ने कहा—"मेरे अनन्य बच्चे वह है जिनका अन्य दूसरा कोई नहीं है। दूसरा, जो अनन्त मौज में, स्वीट साइलेन्स में और अनन्त खुशी में समाये हुए रहते हैं—उन्हें बाबा अनन्य बच्चे कहता है।" मैंने कहा—बाबा, आपको ऐसे कितने बच्चे नज़र आये? कितने बच्चों को आपने चुना? तो बाबा ने कहा—बच्ची, जितने बच्चे अभी होने चाहिए उतने नहीं हैं। मैंने कहा—बाबा, मीटिंग में तो सभी ने चिटकियां लिखकर दी हैं कि हम ऐसा करके दिखायेंगे। तो बाबा ने कहा—हाँ, बच्चों ने चिटकियां तो लिखी हैं! लेकिन यह बाबा ऐसे बोल रहे थे जैसे बहुत डीप (Deep;गहन) खोये हुए हैं। आधा यहाँ हैं, आधा कहीं दूसरी जगह हैं! बाबा ने कहा—"चिटकियां तो बच्चों की बाबा के पास पहुँच गई हैं लेकिन... । चलो, बाबा तुमको एक दृश्य दिखाते हैं।" वतन में पहली बार मैंने नया दृश्य देखा। एक नदी का किनारा था। बाबा हमें नदी के किनारे पर ले चला। उस किनारे पर थोड़ा ही दूर एक कमल के फूल जैसा फूल था। बाबा ने कहा—"वहाँ जाओ। देखो, क्या चीज़ है?" मैं गई तो देखा कि वह कमल का फूल ही था लेकिन बंद था। बाबा ने कहा—तुम इसका चक्र लगाओ। मैं जैसे चक्र लगाती गई तो वह खुलता गया। जैसे थाली के ऊपर थाली आती रहती है, स्टैण्ड घूमता रहता है, जैसे यहाँ इडली बनाने की थालियां खांचे वाली होती हैं, इसी रीति उसमें थालियां ऊपर आती गईं। उनमें दीपक जल रहे थे। फिर बाबा ने कहा—अभी बच्चों को बुलाता हूँ। बाबा ने दृष्टि दी और दृष्टि से ही बहुत बच्चे जैसे सेकेण्ड में वहाँ पहुँच गये। बाबा ने कहा—सभी बच्चे एक-एक दीपक लेकर आओ। थालियां ऊपर आती रहीं और एक-एक दीपक सभी उठाते रहे। दीपक भी कमल-पुष्प के ही आकार का था। उसके अन्दर बाती जल रही थी। बीच में लाइट के कुछ शब्द भी थे। बाबा ने कहा—यह दीपक

लेकर सभी किनारे पर खड़े हो जाओ। जब सब नदी के किनारे लाइन में खड़े हो गये तो बाबा ने कहा—मैं इशारा करुं तो सभी यह दीपक नदी में डालना। बाबा ने इशारा किया तो सभी ने अपना-अपना दीपक उस नदी में डाल दिया।

जब पानी में डाला तो सब अपने-अपने दीपक को देखते रहे कि मेरा दीपक बुझता है या नहीं। यह सीन बहुत सुन्दर लग रही थी। सभी दीपक पानी में तैरने लगे और तैरते-तैरते एक ऐसी जगह थी जहाँ सब दीपक ठहर जाते थे। वहाँ दीपकों की एक डिज़ाइन जैसी बनती जाती थी। बाबा ने कहा—"देखो, सभी ने दीपक डाला है। अभी देखना किसका दीपक पहुँचता है!" कुछेक का दीपक बीच-बीच में अटक रहा था, कुछेक का बुझ रहा था। जिस समय जिसका दीपक रुकता था, बाबा उस समय उस बच्चे को बहुत अच्छी दृष्टि देते थे। जो बच्चा बाबा की दृष्टि को कैच करके अपने दीपक को संकल्प की दृष्टि देते तो उनका दीपक चल पड़ता था। जो सिर्फ दीपक को ही देख रहे थे, उनका अटक जाता था या बुझ जाता था।

बाबा ने इसका रहस्य सुनाया कि—"बच्चों ने जो दृढ़ संकल्प की चिटकी लिखी है, यह है बाप की आशा का दीपक। यह सभी ने दिलाराम बाबा की आश को पूर्ण करने का दीपक जलाया है। अब इस जगे हुए दीपक को चाहिए शुद्ध दृढ़ संकल्प जिससे यह आशा का दीपक मंजिल पर पहुँचे। नहीं तो कहाँ न कहाँ अटक जायेगा।" बाबा ने अटकने के तीन कारण सुनाये। बाबा ने कहा—"

बच्चे तीन 'पर' में अटक जाते हैं। वह तीन 'पर' हैं—(१) पर-चिंतन, (२) पर-दर्शन और (३) पर-मत। आशा का यह दीपक जो नीचे-ऊपर होता है उसका कारण यही तीन बातें हैं। फिर कोई-कोई बच्चे बाबा के श्रेष्ठ संकल्प की दृष्टि को कैच करके इससे मुक्त हो जाते तो दीपक चल पड़ता है। इन तीन 'पर' को निकालने के लिए चाहिए एक पर—'पर-उपकार'। यह है सुल्टा, वह तीन हैं उल्टे। जो पर-उपकार की अर्थात् शुभ भावना, शुभ कामना की दृष्टि देते हैं उनका दीपक न रुकेगा, न बुझेगा। आगे बढ़ते-बढ़ते सम्पन्नता वा सम्पूर्णता की, बाप समान बनने की मंजिल पर पहुँच जायेगा।"

ऐसा सुनाते बाबा ने कहा—"अच्छा, एक दीपक ले आओ। इसमें देखो क्या-क्या है?" दीपक में नीचे था कमल-पुष्प। बाबा ने कहा—यह है न्यारे-प्यारे रहने की स्थिति। दीपक इसमें ही स्थित होता है। दूसरा, उसमें लाइट के शब्द थे। लाइट में लिखत थी—दृढ़ संकल्प। यह दृढ़ संकल्प की ही बाती थी। इसी रीति से दीपक सजा था। बाबा ने कहा—कई बच्चे कहते हैं कि मैंने जो किया या कहा वह पेपर लेने के लिए किया, मैंने कोई सच्चे भाव से नहीं किया। मैंने कहा कि देखें, उसने जो प्रतिज्ञा की है कि क्रोध नहीं करुंगा, ईर्ष्या में नहीं आऊंगा....तो कितना इसमें पास हैं। कई फिर कहते—मैंने कोई परचिंतन थोड़े ही किया, सिर्फ समाचार ही तो सुनाया....। ऐसे हंसी की, बहाने वा पर-दर्शन की अनेक बातों की लिस्ट बाबा के पास है। इसलिए बाबा आज सुना रहे हैं—ऐसी बातें आगे नहीं करना, तब ही आपका दीपक मंजिल पर पहुँचेगा। बीच-बीच में रुकावटें आयें भी तो इन तीन 'पर' को 'एक पर' से अर्थात् पर-उपकार की भावना से एकदम काट देना।

फिर मैंने कहा—बाबा, आज तो भोग लेकर आई हूँ। तो बाबा ने कहा—हाँ बच्ची, मधुबन का भोग! इस ब्रह्मा-भोजन के लिए तो देवतायें भी तरसते हैं। ब्रह्मा बाबा भी मधुबन के भोग को बहुत याद करते हैं। मैंने कहा—बाबा, ब्रह्मा बाबा को मीटिंग में सभी ने बहुत याद किया। बाबा ने कहा—"ब्रह्मा बाबा बच्चों को कितना याद करते हैं—यह तो गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने। बच्चे भी जानते हैं लेकिन नम्बरवार। यह तो बाप देखता है कि ब्रह्मा माँ बच्चों को कितना याद करते हैं!" फिर बाबा ने भोग स्वीकार किया। हमें भी खिलाया। दूसरी सन्देशियां भी भोग लाई थीं, वह भी स्वीकार किया। फिर मैंने कहा—बाबा, कल हमारी मीटिंग में एक बहुत रमणीक बात निकली है। आजकल सेन्टर्स पर जो भोग लगता है उसमें आधे सेन्टर्स पर तो भोग लगाने वाली सन्देशिया हैं, आधे में नहीं हैं। सन्देशियों का पार्ट तो काफी चला है। अभी सबका विचार ऐसा निकला कि सभी सेन्टर्स पर योग में ही भोग लगाया जाए। यह सुनकर बाबा बहुत मुस्कराये और कहा कि—अच्छा, सन्देशियों को रेस्ट देनी है! मैंने कहा—बाबा, रेस्ट नहीं देते हैं। चारों तरफ

एक जैसा हो जाए, इस भाव से किया है। तो बाबा ने कहा—"कोई हर्जा नहीं है, कर सकते हैं। क्योंकि सन्देशियां भी नम्बरवार हैं, कैचिंग पावर भी हरेक की अपनी-अपनी नम्बरवार है।" मैंने कहा—लेकिन बाबा, यह तो उन्हें बाबा से वरदान मिला है, यह वरदान खत्म तो नहीं हो जायेगा! तो बाबा ने कहा—"बच्ची, अविनाशी वरदान कभी खत्म हो सकता है क्या? सन्देशी कभी स्व के प्रति भी वरदान यूज़ कर सकती है। कभी भी सन्देशी को चाहिए तो बाबा के पास आ सकती है। सेवा प्रति नहीं तो स्व के प्रति, रूहरिहान के प्रति भी वरदान को काम में लगा सकती है। अविनाशी वरदान समाप्त थोड़ेही होता है।" मैंने कहा—बाबा, कभी-कभी कोई सन्देशी का पार्ट खत्म भी हो जाता है। तो बाबा ने कहा—बच्ची, इस गुह्य गति को बाप ही जाने। फिर मैंने कहा—बाबा, मधुबन में क्या होगा? तो बाबा ने कहा—"मधुबन में भी कुछ समय ऐसे करना होगा। वैसे मधुबन में तो बाबा आता है, और कहीं नहीं आता। ऐसे मधुबन की बात सेन्टर्स से थोड़ी न्यारी रहेगी। लेकिन थोड़ा समय दो-तीन मास ऐसे ही चले, जिससे चारों ओर एक जैसी लहर हो। मधुबन में कई जरूरी मैसेज होते हैं, वह सन्देशी भोग के अलावा भी बाबा के पास सन्देश लेने आ सकती है।"

फिर बाबा ने कहा—"यह जो जीते-जी मरने आदि का भोग लगाते हैं, संकल्प तो बहुत अच्छा करते हैं लेकिन ऐसा समझकर नहीं लगाओ कि पिछाड़ी में कोई लगाने वाला हो या न हो, इसलिए लगा रहे हैं। लेकिन जो भोग लगाये वह समझे कि मैं मर गई अर्थात् नष्टोमोहा हो गई, फिर किसी में मोह न रहे।" ऐसे कहते बाबा ने सभी को याद-प्यार दी और कहा—"बाबा भी खुश, बच्चे भी खुशनसीब। सदा खुशी में नाचते-नाचते एक-दो को सहयोग देते आगे बढ़ते चलो।" ओम् शान्ति।

२४.५.९०

डबल लाइट बनने की साधना करो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज जब आप सभी का याद-प्यार लेते हुए बाबा के पास पहुँची तो हमें बाबा सामने दिखाई नहीं दिये । लेकिन मैं आगे बढ़ती गई तो कुछ समय आगे बढ़ने के बाद हमने देखा—सामने एक लाइट की पहाड़ी थी और पहाड़ी पर लाइट का एक सुन्दर चबूतरा बना था । उस पर भी लाइट की एक ऊंची चोटी दिखाई दे रही थी जिस पर बाबा बैठे थे । वहाँ पहले मैंने अपने को अकेले देखा लेकिन कुछ समय के बाद हमने औरों को भी देखा । सभी पहाड़ी के चबूतरे के नीचे थे, बाबा ऊपर था । यह सीन बड़ी अच्छी लग रही थी । ऐसी अनुभूति हो रही थी जैसे बाबा हम सबको लाइट-माइट दे रहे हैं । उसके बाद संकल्प चला कि—हमें जाना तो बाबा के पास है, लेकिन बाबा ऊपर हैं, हम नीचे हैं । तो इसी संकल्प से हम भी मुस्करा रहे थे, बाबा भी ऊपर से मुस्करा रहे थे ।

थोड़े समय के बाद बाबा ने कहा—"बच्ची, ऊपर आना चाहती हो ? ऊपर आने का साधन आपके पास है ?" तो हमने कहा—बाबा, हल्के बनकर उड़कर आ जायेंगे । बाबा ने कहा—उड़कर तो आयेंगे लेकिन उड़ाने वाला कौन है ? फिर बाबा ने कहा—"अच्छा, हम आपको एक बहुत अच्छा साधन देते हैं, उस साधन के आधार पर आ जाओ । लेकिन वह साधन अव्यक्त है, व्यक्त नहीं ।" इतने में बाबा ने अपनी बांहें ऐसे कीं । वह बांहें इतनी लम्बी हो गईं जो बांहों की तिल्ली (हथेली) हमारे नजदीक आ गई । बाबा ने कहा—"इस पर आ सकते हो, यही साधन है । अभी देखता हूँ कि कौन इस साधन द्वारा बाबा के पास पहुँच सकता है । इस पर वही पहुँचेगा जिसकी निरन्तर साधना होगी । बिना साधना के इस साधन द्वारा ऊपर नहीं पहुँच सकेंगे । इसके लिए कौनसी साधना चाहिए ?" तो हम सब ने कहा—डबल लाइट बनने की साधना । बाबा

ने कहा—अच्छा, सभी डबल लाइट हो ? तो सभी कांध हिलाकर हाँ-हाँ करने लगे । बाबा यह सब देखते बोले—अच्छा, बाबा अभी आपको दिखाते हैं कि आपकी डबल लाइट की साधना निरन्तर है या अन्तर है !

बाबा ने कहा—इस हथेली पर खड़े होकर ऊपर आ जाओ । तो हरेक हथेली पर खड़े होने की कोशिश करने लगा । बांह तो बाबा की थी लेकिन कोई एक सेकेण्ड में हथेली पर खड़े होते ही सेकेण्ड में ऊपर पहुँच जाता । पहुँचना सबको सेकेण्ड में था । लेकिन कोई पौने तक पहुँचा, कोई आधे तक, कोई बहुत थोड़ा आगे बढ़ा । बहुत थोड़े थे जो सेकेण्ड में ऊपर पहुँच सके । फिर बाबा ने कहा—"देखा, निरन्तर साधना में रहने वाले अर्थात् डबल लाइट रहने वाले कौन हैं ! इसी से ही समझ सकते हो कि डबल लाइट की साधना निरन्तर है, या आधे-पौने तक है या बहुत थोड़ी है या कोई न कोई भारीपन है ! बाबा आप बच्चों को यह रिजल्ट दिखाता है ।"

जो ऊपर पहुँच गये थे वे बाबा के साथ खेल देख रहे थे । साथ-साथ सबके अन्दर रहम का भाव था कि यह भी ऊपर पहुँच जाएं । फिर बाबा ने सबको युक्ति बताई कि एक सेकेण्ड में पावरफुल स्टेज पर खड़े हो जाओ तो तुम भी ऊपर आ जायेंगे । ऐसे कहते बाबा ने सभी को सेकण्ड (दूसरा) चान्स दिया । तो मैजारिटी उस विधि से ऊपर पहुँच गये । फिर भी थोड़े थे जो सेकण्ड चांस में भी नहीं चढ़ सके । तो बाबा ने कहा—अभी तुम चढ़कर के आओ । उसमें तो बहुत मेहनत थी । लेकिन जब सभी चबूतरे के पास पहुँच गये तो बड़ी अच्छी सीन लग रही थी । हम सभी बाबा के चारों ओर खड़े हो गये । बाबा की गोदी तक हमारा सिर पहुँच रहा था, बाबा का सिर ऊपर था । बाबा ने हाथ ऐसे किया तो हम सबका सिर बाबा की गोद में हो गया । ऐसे लगा जैसे हम सब पंखुड़ियां हैं, बाबा का सिर ऊपर फूल के बुर की तरह है । यह सीन भी बड़ी न्यारी-प्यारी थी । उसके बाद बाबा नीचे आये और कहा—बच्ची, अभी बताओ कि आपके स्थूल संसार का और ब्राह्मण संसार का क्या हालचाल है ? मैंने कहा—बाबा, स्थूल संसार में तो मारामारी हो रही है और ब्राह्मण संसार में सबका लक्ष्य है—जो बाबा ने कहा है वह हम करके

दिखायें। तो बाबा हमारा यह जवाब सुनकर बहुत राज़युक्त मुस्कराने लगे और काफी समय तक मुस्कराते रहे। हम भी बाबा का मुस्कराना देखकर मुस्कराती रही। बाबा ने कहा—बच्ची, यही समाचार है? मैंने कहा—हाँ बाबा।

तो बाबा ने कहा—"बच्ची, संसार में तो मारामारी है। लेकिन ब्राह्मण संसार में सिर्फ लक्ष्य है या बाबा ने जो कहा है वह करने के लक्षण भी दिखाई देते हैं?" मैंने कहा—बाबा, हम देखते हैं कि लक्ष्य तो सभी ने रखा है, बाकी लक्षण कहाँ तक आये हैं वह तो उनकी दिल जाने और दिलाराम जाने। तो बाबा बोले—"लक्ष्य तो ठीक है। लेकिन 'लक्ष्य' और 'लक्षण' जो दोनों ही समान होने चाहिए उसमें अन्तर है। लक्ष्य तो रखा है, उमंग-उत्साह भी है कि हमको करके दिखाना है। लेकिन लक्ष्य और लक्षण का बैलेन्स नहीं है। इसलिए संकल्प तक लक्ष्य है लेकिन जो लक्षण प्रैक्टिकल कर्म में आने चाहिए, उसमें नम्बरवार और काफी अन्तर है। जब तक बच्चों ने लक्ष्य को लक्षण में नहीं लाया है और 'लक्ष्य' लक्षण का बैलेन्स नहीं हुआ है तब तक निरन्तर डबल लाइट नहीं रह सकते। कुछ समय डबल लाइट होते हैं, कुछ समय यथा शक्ति। तो अन्तर पड़ जाता है।" लेकिन बाबा क्या चाहता है? बाबा ने कहा—"अभी देख भी रहे हो कि संसार की हालत मारामारी की तरफ, सिविल-वार की तैयारियों की तरफ, परिवर्तन की तरफ बहुत फास्ट गति से बढ़ रही है, अति में जा रही है। तो जैसे समय की गति फास्ट जा रही है, इसी हिसाब से सेवा और स्वउन्नति—दोनों ही इतनी फास्ट हैं? जब दोनों की गति फास्ट होंगी तब परिवर्तन होगा। सेवा और स्वउन्नति, लक्ष्य और लक्षण का बैलेन्स होना चाहिए। उसमें थोड़ा अन्तर दिखाई दे रहा है।" ऐसे कहते बाबा सबको दृष्टि देते फिर मुस्कराने लगे। मैंने कहा—बाबा, अभी आपके मन में क्या आ रहा है? बाबा ने कहा—मैं सभी बच्चों में एक बात देख रहा हूँ। तो मैंने कहा—बाबा, सुनाओ।

तो बाबा बोले—"देखो, तुम बच्चे कहते हो कि इस संसार की हालत बड़ी नाजुक है। बाबा भी देख रहे हैं कि संसार की हालत तो नाजुक है ही लेकिन

संसार की हालत के साथ-साथ बच्चे भी पुरुषार्थ में बहुत नाजुक हैं। तो बाबा दोनों का नाजुकपन देख रहे हैं। देखो, बच्चों का लक्ष्य है कि बाबा की आश पूर्ण करनी है। लेकिन वर्तमान समय जो लहर है वह नाजुकपन की ज्यादा है। कोई शरीर से भी नाजुक हैं, कोई पुरुषार्थ में नाजुक हैं। पुरुषार्थ में नाजुक किस हिसाब से हैं? फास्ट गति का संकल्प करके चलते हैं लेकिन जब सामने कोई बात आती है तो उसमें नाजुकपन यह आता है कि—'चल तो रहे हैं', 'लक्ष्य तो अच्छा है', 'चाहते तो हैं', 'करेंगे जरूर', 'यह तो होता ही है ना, यह तो चलता ही है', 'इतना जो हो रहा है', 'यह तो होगा ही'। बुद्धि में यह नहीं आता कि इतने को भी खत्म करके सम्पूर्ण बनें। यह नाजुकपन के जब संकल्प आते हैं तो कोई न कोई परिस्थिति का भारीपन आ जाता है और सोचते हैं—मेरे में इतनी ही हिम्मत है, इतना ही चल सकती हूँ.... । यह नाजुकपन है। इसके बजाए 'मुझे इसे पार कर सम्पन्न बनकर दिखाना है'—यह है शक्तिशाली संकल्प।

ज्ञान- योग के बाद यह जो रॉयल नाजुकपन आ गया है, इस नाजुकपन के कारण बाबा जो चाहता है कि सेवा और स्वउन्नति का बैलेन्स हो, वह कम दिखाई देता है।" बाबा जैसे यह बहुत एक्ट करके बोल रहे थे। तो यह भी बहुत वन्डरफुल दृश्य लग रहा था। फिर उसके बाद बाबा ने कहा—बाबा तो जानते हैं कि यह सब नाजुकपन खत्म होना ही है। जब यह खत्म होगा तब बाबा विश्व के आगे नाज़ से कहेगा—देखो, मेरे बच्चे कैसे हैं! जो डबल लाइट बच्चे हैं वे विश्व के आगे प्रत्यक्ष हो जायेंगे।

फिर हमने कहा—बाबा, अभी मधुबन में छोटे बच्चे आये हैं। तो बाबा ने कहा—"बच्चे माना माया से बचे हुए हैं। उन्हों को कहना कि तुम बच्चे हो, माया से बचे हुए हो और आगे चलकर भी बचे ही रहना। तुम जैसे अभी ताजे फूल हो, पवित्र हो, माया से बचे हुए हो—तो इसी रीति से सदैव बचे ही रहना। सदा बचपन की लाइफ में अर्थात् कोमल रहना और बचकर रहना। तो बाबा ने कहा—बच्चों को हमारी तरफ से याद देना और कहना कि बाबा की शुरू से लेकर छोटे बच्चों में उम्मीदें रही हैं और बच्चों ने ही माया से

बचकर बाबा की उम्मीदें पूर्ण की हैं। वही बच्चे आज विश्व-कल्याण के निमित्त बने हुए हैं। तो बाबा आप बच्चों में भी शुभ उम्मीदें रखते हैं। तुम बच्चे भी कमाल करके दिखाना।" बाबा ने फिर सभी बच्चों को एक सौगात दी। एक बहुत सुन्दर डिब्बी थी। उस डिब्बी में 'वी'(V) आकार के बहुत चमकीले तिलक थे। तो बाबा ने कहा—यह विजय का तिलक सभी बच्चों को सौगात में देना। ऐसे कहते देश-विदेश के चारों ओर के सभी बच्चों को बाबा ने बाप समान बनने तथा निरन्तर डबल लाइट बनने की दुआओं के साथ याद-प्यार दी। ओम् शान्ति।

२८.६.९०

अपनी पॉवरफुल स्टेज से आशीर्वाद का ठप्पा लगाओ

(रक्षा-बन्धन के निमित्त ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आप सबका याद-प्यार लेते हुए बाबा के पास पहुँची। तो आज बाबा का स्वरूप दूर से ही जैसे विश्व-रक्षक का स्वरूप लग रहा था। बाबा के सामने एक ग्लोब था और उस ग्लोब पर बहुत-सी मनुष्य-आत्मायें थीं जिससे सारा ही ग्लोब भरा हुआ था और बाबा के दोनों हाथ विश्व की सभी आत्माओं के ऊपर थे। मैं जब गई तो यह दृश्य सामने से देखा। बाबा ने मुझे देखते हुए कहा कि—"आओ विश्व-कल्याणकारी बच्ची, आओ। बाप के साथ तुम बच्चों का भी अन्त में यही कर्त्तव्य है। तुम बच्चों द्वारा ही बाप विश्व के आगे प्रत्यक्ष होने वाला है, इसलिए तुम भी यहाँ बाबा के साथ आ जाओ।" तो जैसे ही मैं बाबा के पास पहुँची तो सभी आत्मायें ऐसे लग रही थीं जैसे कोई बहुत प्यासी होती हैं, उनके जो नयन थे वे ऐसे थे जो देखकर के रहम आता था। ऐसे लग रहा था जैसे बहुत प्यासी तड़पती हुई आत्मायें हैं। बाबा

ने कहा—तुम इनको दृष्टि दो। तो जब मैं दृष्टि दे रही थी, जैसे कोई भी देवी का चित्र जब कृपा या आशीर्वाद का दिखाते हैं, उनके नयनों में जैसे दया-कृपा के मोती चमकते हैं—यह रहम की भावना का स्वरूप होता है। ऐसा ही स्वरूप था। बाबा ने कहा—"इस समय तुम अपना फोटो निकालो। इसी समय के फोटो की भक्तों ने कापी की है। लेकिन कुछ भाव वह दिखा सकते हैं, कुछ नहीं।" फिर बाबा ने कहा—तुम चारों ओर घूमकर के ऐसे हाथ घुमाओ। चारों ओर अनेकानेक मनुष्यात्मायें थीं।

बाबा ने कहा—"देखो, कितनी मनुष्यात्मायें हैं! तुम्हें कितनों के ऊपर रहम, कृपा वा आशीर्वाद अभी करनी है। यह विश्व का गोला देखो और बताओ कि कितनी आत्माओं पर तुमने रहम किया है या बाबा का जो आशीर्वाद मिला है, वह कितनों को दिया है!" मैं मुस्कराती रही। मैंने कहा—बाबा, अभी तो मिनट मोटर होना पड़ेगा। तो बाबा ने कहा—"बच्चे मिनट-मोटर के लिए तैयार हैं? एक मिनट में ऐसी पावरफुल स्टेज हो जो आशीर्वाद का ठप्पा लगाया और वह पार हो जाए? मैंने कहा—बाबा, नम्बरवार सभी बच्चे इसी पुरुषार्थ में लगे हुए हैं। तो बाबा ने कहा—"नम्बरवार हैं, यह तो ठीक है। लेकिन हर एक नम्बरवार अपनी सम्पन्न स्टेज पर तो आयेंगे ना। लास्ट दाना भी अपनी सम्पूर्ण स्टेज तक आयेगा। वह आया है? बाबा यही देख रहे हैं कि चाहे लास्ट नम्बर हैं, चाहे फर्स्ट हैं, चाहे रायल फैमली में आने वाले हैं, चाहे राज-अधिकारी बनने वाले हैं, चाहे साहूकार प्रजा में आने वाले सम्पर्क वाले हैं—हर एक बच्चे को अपने नम्बर के अनुसार जो सम्पन्न सम्पूर्ण स्टेज प्राप्त करनी है, उसमें कितनी दूरी है? बाबा यह नहीं देखते कि सभी १००% हो गये हैं, बाबा जानते हैं—सब तो एक जैसे होने नहीं हैं। लेकिन उनकी अपने अनुसार तो सम्पूर्णता होगी ना। उसको सामने रखते हुए बाबा चेक करते हैं कि अभी कितनी दूरी है?

बाबा ने पूछा—आप क्या समझती हो, अभी कितनी दूरी है? मैंने कहा—बाबा मैं तो समझती हूँ कि थोड़ा समय समीप आयेगा तो सेकेण्ड में हो जायेगा। बाबा ने कहा—समय पर तो हो ही जायेगा लेकिन जो मेरे 'पास

विद् आनर' बच्चे हैं वे समय को स्वयं आह्वान करेंगे, ना कि समय प्रमाण सम्पूर्णता को पायेंगे। हमने कहा—बाबा, लगता तो ऐसा ही है कि सभी के मन में जो आपके प्रति प्यार है, जिस समय प्यार में खो जाते हैं तो समझते हैं—बस, कल ही सम्पूर्ण बन जायेंगे। लेकिन जब कोई बात आती है तो थोड़ा-सा दूर हो जाते हैं। बाबा ने कहा—"बाबा यह तो देखते हैं कि कई बच्चों में दिल की सच्ची लगन है, उमंग है, संकल्प है कि करके ही दिखाना है। लेकिन सभी बच्चों में नहीं है। कइयों में है जो बाबा के पास पहुँचता है।" मैंने कहा—बाबा, ऐसे ही लहर फैलती जायेगी। बाबा ने कहा—"लहर फैल रही है। लेकिन लहर फैलने की जो गति है वह जितनी और जैसी होनी चाहिए उसमें थोड़ा अन्तर है।" उसके बाद यह सीन गायब हो गई। फिर बाबा ने कहा—अच्छा बच्ची, चलो तो तुमको एक और सीन दिखाऊं।

हम आगे चले। जैसे तारघर वा टी.पी. रूम होता है तो टिक-टिक की आवाज होती रहती है। उसी रीति से जैसे मशीनरी चल रही थी। मैंने कहा—बाबा, यहाँ कौनसी मशीनरी चल रही है? बाबा ने कहा—"तुमको पता नहीं है कि वतन में कौनसी मशीनरी चल रही है? देखो, बाबा तुम सभी बच्चों के लिए राखियां तैयार करवा रहे हैं। बाबा ने तुम बच्चों के लिए बहुत सुन्दर-सुन्दर राखियां बनवाई हैं। दिखाऊं कौनसी राखियां तैयार कराई हैं?" वह राखियां बहुत सुन्दर थीं। राखी के पट्टे की जगह पर पांच लड़ियां थी और बीच में ५ रंग के बहुत सुन्दर हीरे थे जो ऐसे बने थे जैसे शिव बाबा का शेप (आकार) था। चार हीरे चारों ओर थे और बीच में एक बिन्दी चमक रही थी। बहुत सुन्दर डिजाइन था। बाबा ने कहा—देखो, मैंने कितनी बढ़िया राखियां तैयार की हैं। वह लाइट में बहुत सुन्दर चमक रही थीं। बाबा ने कहा—इन्हें ध्यान से देखो और पढ़ो। तो जो ५ लड़ियां थीं उसमें मोतियों से शब्द लिखे थे। जैसे सफेद-सफेद मोती होते हैं, उसी रीति से सच्चे सफेद मोतियों से ५ शब्द लिखे थे—(१) स्व-रक्षक, (२) कुल-रक्षक, (३) सेवा-रक्षक, (४) मर्यादायें-रक्षक और (५) विश्व-रक्षक। मैंने कहा—बाबा, आपने तो यह राखियां अभी से तैयार करवा ली हैं। हमारे पास तो अभी बनी ही नहीं हैं, मैं

इन्हें लेकर जाऊं? तो बाबा ने कहा—"बच्ची, बाबा के पास तो सब चीजें फटाफट अति शीघ्र बन जाती हैं। तुम्हें चाहिए और ले जाने में तुम समर्थ हो तो ले जाओ।" मैंने कहा—बाबा, समर्थ तो हम हैं लेकिन यह चीजें गुम हो जाती हैं। मतलब रूहरिहान चल रही थी।

फिर बाबाने कहा—"बाबा देखते हैं कि यही ५ चीजें जो हैं, बच्चे अगर उसके रक्षक बनें तो सम्पूर्ण होने में कोई देरी नहीं है। लेकिन कहाँ तक सम्पूर्ण बने हैं, वह बाबा सीन दिखाते हैं।" फिर बाबा गायब हो गये और लाइट के दो हाथ सामने आये। उन हाथों में राखी थी। बाबा ने कहा—अभी सीन देखना। बाबा ने ऐसे ताली बजाई तो सारे ब्राह्मण इमर्ज हो गये। सब राखी को देखकर के बड़े खुश हो रहे थे। बाबा ने कहा—यह जो हाथ है, अभी इससे एक-एक क्रास करो। सभी ने जब क्रास किया तो राखी में जो ५ लड़े थीं उसमें से किसी को तीन फिट आती, किसी को दो फिट आती, किसी की लूज रह जाती, किसी को पूरी फिट हो जाती। तो जिनकी लड़ें लूज रह जातीं वे क्रास करते समय टाइट करने की बहुत कोशिश करते लेकिन होती ही नहीं थी। क्रास तो मिनट में ही करना था। जब सभी क्रास करके गये, फिर बाबा ने कहा—अच्छा, अभी सब हाथ ऊपर करो। तो जिनकी लड़ियां लटकने वाली थीं उनकी दूर से ही लटकती दिखाई दे रही थीं। बाबा ने कहा—"बच्ची, एक काम करो। अभी देखो, मैजारिटी की कौनसी लड़ ज्यादा करके ढीली है?" तो मैंने चक्र लगाकर देखा। मैंजारिटी की 'मर्यादा' की लड़ ढीली थी और उसका असर 'कुल' और 'सेवा' की जो लड़ें थीं, उन दोनों पर पड़ रहा था। मैजारिटी की यह तीन लड़ें ढीली थीं, बाकी दो टाइट थीं।

बाबा ने कहा—"बच्ची, वर्तमान समय बाबा क्या चाहता है? जैसे आप और बातों के ऊपर अटेन्शन देते हो, वैसे अगर मर्यादाओं पर अटेन्शन दो तो स्वउन्नति और सेवा की उन्नति हुई पड़ी है। वर्तमान समय चाहिए मर्यादा सम्पन्न जीवन। इसलिए आप जब सम्पूर्ण देवता बनते हो तब उसमें भी महिमा आती है—मर्यादा पुरुषोत्तम। मर्यादायें ही आगे बढ़ाने का साधन है। कोई न कोई मर्यादा का ढीलापन ही पुरुषार्थ में भी ढीला कर देता है। इससे

मेहनत बहुत करनी पड़ती, सफलता कम होती है। तो अभी जो राखी-बंधन आप मनायेंगे, इसमें विशेष बच्चों को यह मर्यादा के रक्षक की लड़ी विशेष टाइट करनी है। क्योंकि आपको ही मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर सारे वर्ल्ड की मर्यादायें स्थापन करनी हैं। यह मर्यादायें ही सतयुग-त्रेता तक चलेंगी। जब इस समय मर्यादाओं के रक्षक बनेंगे तभी यह सारा कल्प यादगार रहेगा।" तो बाबा ने इस राखी पर विशेष अटेन्शन दिलाया कि—"अमृतवेले से रात्रि तक हर दिनचर्या में जो ईश्वरीय मर्यादायें मिली हैं, उन सब पर चलकर मर्यादा सम्पन्न बनना है। बाबा अभी मर्यादा सम्पन्न संगमयुगी पुरुषोत्तम बच्चे देखने चाहते हैं।" तो बाबा ने कहा—"इस राखी का टाइटल है 'संगमयुगी मर्यादा पुरुषोत्तम'। मर्यादाओं को टाइट करो तो सेवा में और स्व-उन्नति में तीव्रता आयेगी।" ऐसे राखी का सन्देश देते बाबा ने सभी बच्चों को याद-प्यार दिया और पहला जो दृश्य दिखाया—बाबा ने इशारा दिया कि इसी से ही विश्व-रक्षक का जो पार्ट है वह प्रैक्टिकल में आगे बढ़ेगा। ओम् शान्ति।

११.८.९०

सबसे बड़ी शक्ति है—संकल्प-शक्ति

(भाइयों की योग-भट्ठी में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज अमृतवेले बाबा के पास गई तो इस बारी का विशेष दृश्य देखा कि बाबा एक बहुत ऊंचे पहाड़ी के ऊंची प्वाइंट पर फरिश्ते रूप में खड़े थे। पहाड़ी के एक तरफ कई बच्चे पहाड़ी के ही आधार पर झूले में झूल रहे थे। दूसरी तरफ एक लिफ्ट थी, जिस लिफ्ट के आधार पर ऊपर पहुँचने का प्रयत्न कर रहे थे। झूले पर भी जो मस्ती से झूल रहे थे वे भी ऊंचा पहुँचने का ही प्रयत्न कर रहे थे। बीच में जिस स्थान पर बाबा खड़े थे वहाँ से दो किरणें निकल रही थीं और वे किरणें बड़ी सूक्ष्म और शक्तिशाली थीं। जब मैं पहुँची

तो बाबा ऊपर थे और हम नीचे । तो हमारे पहुँचते ही बाबा ने कहा—आओ मेरे संकल्प शक्ति पर विजय प्राप्त करने वाले राजदुलारे बच्चे, आओ ! तो हम बाबा की तरफ ही देख रहे थे । बाबा ने नयनों का इशारा किया । थोड़े समय के बाद बाबा बोले—बच्ची, संकल्प की भाषा जानती हो ? मैं तो बाबा की तरफ देख ही रही थी । बाबा ने कहा—इस समय बाबा के क्या संकल्प हैं, वह तुम कैच कर सकती हो ? तो हम कैच करने का प्रयत्न कर रही थी । उसके बाद ऐसा बोलते हुए फिर बाबा डेड साइलेन्स के स्वरूप में चले गये । वह बहुत पावरफुल स्टेज थी ।

हमने कैच किया कि जैसे बाबा हमको इशारा कर रहा है कि यह जो दो किरणें हैं 'लाइट' और 'माइट' की हैं, इन किरणों के आधार से ऊपर आ जाओ । हमने भी यही संकल्प किया कि इन किरणों के आधार से ऊपर पहुँचना है । जैसे ही संकल्प किया तो लगा जैसे लाइट-माइट के आधार से कोई उड़ता है, ऐसे उड़कर बाबा जहाँ खड़े थे, वहाँ उस प्वाइंट पर मैं पहुँच गई । जब ऊपर पहुँची तो बाबा ने पूछा—तुम अकेली आई हो ? मैंने कहा—नहीं बाबा, आज तो सभी मेरे साथ ही हैं । बाबा ने जैसे ही बच्चों के आह्वान का सिर्फ संकल्प किया तो संकल्प-शक्ति से कोई तो फौरन पहुँच गये, कोई थोड़ा पीछे-पीछे पहुँचे । जब सारा संगठन पहुँच गया तो बाबा संगठन को बहुत मीठी दृष्टि दे रहे थे । दृष्टि देते हुए सभी नीचे इमर्ज हो गये । अब वहाँ से ऊपर आना था । तो बाबा ने सभी से इशारे से ही पूछा—संकल्प कैच कर सकते हो ? तो कोई संकल्प कैच करते ही लाइट-माइट की किरणों के आधार से ऊपर पहुँच गये । कोई झूले तक पहुँचे, कोई लिफ्ट तक पहुँचे । झूले वाले इतना ऊंचा नहीं पहुँच रहे थे और लिफ्ट वाले उनसे थोड़ा ऊंचा पहुँच रहे थे लेकिन उस प्वाइंट तक नहीं पहुँच सकते थे और जो लाइट-माइट की किरणों के आधार पर थे वे टाप पर पहुँच रहे थे ।

बाबा ने झूले तथा लिफ्ट का रहस्य सुनाते हुए कहा कि—"यह जो झूला दिखाया, यह वे बच्चे हैं जो सदा खुशी में झूलते रहते हैं । 'बाबा मिला'—बस, इतना ही बहुत है । ऐसे खुशी के झूले से ऊपर जाने चाहते हैं । शक्ति नहीं है,

खुशी है। खुशी के झूले में झूलते रहते हैं। शक्ति नहीं है जो ऊपर तक पहुँच सकें। लिफ्ट वाले जो हैं वे कोई न कोई आधार पर हैं। सेवा की या कोई न कोई सहयोग मिला तो ऊंचे चढ़ेंगे, नहीं तो बीच में होंगे। यह जो लाइट-माइट की किरणें हैं, वो हैं स्व की ऊंची स्थिति वा सूक्ष्म शक्ति द्वारा ऊपर पहुँचना। यह दृश्य दिखाने के बाद बाबा ने कहा—अच्छा, आओ बच्चे, अभी सब ऊपर आ जाओ। तो सारा संगठन लाइट बन फरिश्ते रूप में एकदम ऊपर पहुँच गया। फिर क्या देखा कि टी.वी. के माफिक हर एक के मस्तक पर मन और बुद्धि की जो गति थी, वह चलती हुई दिखाई दे रही थी।

फिर बाबा ने कहा—"देखो, आप जो निमित्त बने हुए बच्चे हो, उन्हों की विशेषता क्या होनी चाहिए? अभी बहुत समय बीत चुका, इसमें कर्मणा सेवा भी की तो वाचा- सेवा भी की। यह सेवा ऐसी है जैसे साइंस के एटॉमिक बाम्बस या हाइड्रोजन बाम्बस हैं, यह मोटे यन्त्र हैं। इसे कहेंगे आपकी वाणी के यन्त्र। लेकिन आजकल साइंस वाले भी सूक्ष्म में जा रहे हैं। वह भी लाइट की सूक्ष्म किरणों से (लेजर किरणों से) कितने भिन्न-भिन्न अनुभव करा देते हैं। कभी सागर के किनारे का अनुभव करा देते हैं, कभी झूले का अनुभव करा देते हैं, कभी साइलेन्स का अनुभव, कभी जंगल का अनुभव करा देते हैं। तो आजकल की इन्वेन्शन बहुत सूक्ष्म है। इसी रीति से जैसे यह लाइट की रेजेस (किरणों) के द्वारा सब अनुभूति करा सकते हैं—कहाँ भी पहुँचा सकते हैं और कहाँ से भी कनेक्शन जोड़ सकते हैं। अब ऐसे ही आप जो निमित्त आत्मायें हो, उन्हें अभी किरणों द्वारा सेवा करनी चाहिए। सबसे बड़े ते बड़ी शक्तिशाली जो किरणें हैं, वे हैं संकल्प-शक्ति की। तो इस समय बच्चों को संकल्प-शक्ति को यूज़ करना चाहिए।

बाबा ने कहा—"देखो, ब्रह्मा की दो रचनायें गाई हुई हैं। एक मुख-वंशावली और दूसरा कहते हैं ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची। तो रचना रचने की पावर संकल्प में भी है। तो पहले मुख-वंशावली मोटा रूप रहा और अभी संकल्प-शक्ति से रचना हो रही है। अभी जो सारी सेवायें बढ़ रही हैं वह संकल्प-शक्ति से बढ़ रही हैं। तो जैसे ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची वैसे

आप विशेष ब्राह्मण आत्माओं को भी यही सेवा अभी करनी है। संकल्प-शक्ति जो महान् शक्ति है, उसे अभी तक कम यूज़ करते हो। वाणी की शक्ति से तो सेवा हो ही रही है लेकिन अभी इस सूक्ष्म शक्ति को बढ़ाना है। जैसे साइंस के साधन 'टेलीफोन' द्वारा किसी को भी मैसेज दे सकते हो, बुला सकते हो। साइंस के साधनों द्वारा कोई भी कार्य कर सकते हो। वैसे आप संकल्प-शक्ति से भी कर सकते हो। यह वायरलेस का काम संकल्प-शक्ति कर सकती है। आखरीन में यही संकल्प-शक्ति सेवा के निमित्त बनेगी। बेहद की फटाफट जो विहंग- मार्ग की सेवा होनी है, वह भी संकल्प-शक्ति से होगी और एक-दो को आप जो देना चाहते हो, वह संकल्प-शक्ति से जितना दे सकते हो उतना वाणी से नहीं दे सकते।" इसी रीति से बाबा संकल्प शक्ति का महत्व सुना रहे थे।

इसके बाद बाबा ने कहा—"भट्ठी में विशेष इसी संकल्प-शक्ति पर रूहरिहान करना। यह क्या चीज़ है, इसका आधार क्या है— वह निकालना। आप सभी की शुभ इच्छा वा चाहना है कि हमें महीनता में जाकर स्वउन्नति और सेवा की उन्नति करनी है। तो अन्तर्मुखी होकर इस सूक्ष्म संकल्प शक्ति की प्राप्तियों का अनुभव करो। संकल्प शक्ति से क्या-क्या प्राप्ति हो सकती है, उसको प्रैक्टिकल यूज करो। जितना यूज करते जायेंगे उतना संकल्प-शक्ति की महानता का अनुभव होता जायेगा। बोल तो कामन हो गये हैं, बोलने द्वारा तो सभी सेवा कर सकते हैं। लेकिन यह जो सेवा है वो आप लोग कर सकते हो। अभी आवश्यकता इस सेवा की है, जिससे ही एकदम ९ लाख तैयार हो जाएं। वाचा की सर्विस से तो ५४ साल में २ लाख तक पहुँचे हो। लेकिन इतनी जो ९ लाख की संख्या तैयार करनी है, वह इस सेवा से होगी। इसमें स्वउन्नति, विश्व की उन्नति वा सेवा की उन्नति समाई हुई है। स्वउन्नति के प्रति अलग समय दो और सेवा के लिए अलग समय दो—अब इतना समय नहीं है। इसलिए बैलेन्स से एक ही समय पर दोनों ही सेवा करो। क्योंकि जब आप संकल्प-शक्ति से दूसरों की सेवा करेंगे; तो पहले आप संकल्पधारी स्वयं बनेंगे तब तो सेवा होगी। तो स्वउन्नति हो ही

1936
1954
1990

गई। तो यह ऐसी पावर है जिससे स्वउन्नति और सेवा की उन्नति एक ही समय पर करते आगे बढ़ सकते हो।" फिर बाबा बोले—"कई बच्चों के मन में संकल्प है कि—भट्ठियां तो बहुत बार कर ली हैं। बाबा से वायदे भी कई बार कर चुके हैं। लेकिन परिवर्तन बहुत स्लो गति से दिखाई देता है। इसका कारण क्या? जब इच्छा भी है और चाहते सभी हैं, स्व के लिए भी चाहते हैं तो सेवा के लिए भी चाहते हैं। कई बच्चों का संकल्प बाबा के पास आ रहा है, सोचते हैं—ऐसे तो नहीं यह भट्ठी भी ऐसे ही हो जायेगी। तो बाबा आज इसका भी उत्तर देते हैं। जितनी चाहना है उतना प्रैक्टिकल में क्यों नहीं होता?

बाबा ने कहा—"एक तो कायदा बनाते हो कि यह होना चाहिए, यह नहीं होना चाहिए। दूसरा, वायदा भी करते हो। आप बच्चों के दिल के वायदे बाबा के पास पहुँचते हैं। कभी-कभी बाबा दिल के वायदे सुनकर स्नेह में डूब जाते हैं।" लेकिन फिर क्या होता है? तो बाबा ने कहा—"जैसे आप सेवा करते हो तो उसका फायदा आपको दिखाई देता है। आपने सेवा की। सामने वाला खुश हुआ, अच्छा माना। तो यह जो फायदा मिला उस फायदे के कारण टैम्पटेशन होती है कि और आगे सर्विस करें। इसी रीति से जो वायदे करते हो— इस वायदे से हमको फायदा क्या होगा, प्राप्तियां क्या होंगी—सूक्ष्म जो फायदे हैं उसकी लिस्ट सामने नहीं लाते हो। स्थूल फायदे तो सामने आ जाते हैं। लेकिन इससे आत्मा को कितने फायदे होते हैं, प्राप्तियाँ वा अनुभूतियां कितनी हैं—यह इमर्ज रूप में नहीं हैं। तो कायदे पर चलने वा वायदा करने से जो फायदे हैं उनकी लिस्ट सामने रखो, उन्हें इमर्ज करो। अभी वह थोड़ा-सा मर्ज हैं। जब यह सूक्ष्म शक्तिशाली फायदे अपने सामने इमर्ज रखेंगे तब वायदों को प्रैक्टिकल में ला सकेंगे।" उसके बाद बाबा ने रूहरिहान के लिए विशेष दो टापिक दीं।

बाबा ने कहा—"एक तो संकल्प-शक्ति की टापिक पर रूहरिहान करो और इसकी जो विधि है—शुभ भावना और शुभ कामना—इस पर चर्चा करो और योग में फिर इसको यूज करके देखो। सचमुच, यह शुभ भावना, शुभ कामना क्या चीज है और जब दूसरों को हम शुभ भावना देते हैं तो उस समय

क्या स्थिति होती है, कितना इससे हम एक-दो के नजदीक आते, आत्मा के संस्कारों में कितनी समीपता फील होती है—इस अनुभव को बढ़ाओ। पहले रूहरिहान करो, फिर प्वाइंट निकालने के बाद प्रैक्टिकल में उस स्थिति में बैठो।" दूसरा बाबा ने कहा—"सभी कहते तो हो कि बाबा हमारे साथ हैं। लेकिन प्रैक्टिकल लाइफ में सर्व सम्बन्धों का रस सारे दिन में कैसे लें—अभी इस अनुभूति की कमी है। तो भिन्न-भिन्न दिनचर्या के अनुसार, कर्म के अनुसार बाबा के भिन्न-भिन्न सम्बन्धों का अनुभव करो, रस लो। सर्व सम्बन्धों की अनुभूति क्या होती है—इस पर रूहरिहान कर इसकी डीपनेस में जाओ। ऐसे टापिक सुनाते बाबा ने सभी को बहुत-बहुत याद दी।

१४.८.९०

ब्रह्मा बाप समान दृष्टि में स्नेह और स्वमान समाया हो

(जन्माष्टमी के पर्व पर महारथी भाई-बहनों के संगठन में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज अमृतवेले आप सभी की याद-प्यार लेते हुए जैसे ही हम बाबा के पास पहुँची तो देखा—ब्रह्मा बाबा जैसे अपने कमरे में गद्दी पर तकिये के सहारे बैठते थे, वैसे ही बैठे थे। हम वहाँ ही बाबा के पास पहुँची। बाबा मुस्कराते हुए बोले-बच्ची, आज किसको साथ में लाई हो ? मैं मुस्करा ही रही थी। इतने में बाबा ने कहा—आज अष्टमी है ना ! मैंने देखा—यह कहते ही आठ रत्न ब्रह्मा बाबा के सामने इमर्ज हो गये। सभी रत्नों को बाबा दृष्टि दे रहे थे। उस दृष्टि में बहुत स्वमान और स्नेह भरा हुआ था। बाबा एक-एक बच्चे को देखते हुए बोले—आओ मेरे डबल जन्म के साथी, कर्त्तव्य के साथी, देश के साथी और सदा साथ रहने वाले साथी बच्चे ! ऐसे कहते हुए बाबा ने बच्चों का स्वागत किया और कहा कि—"देखो, ब्राह्मण जन्म में भी ब्रह्मा के

जन्म साथी हो, कर्त्तव्य में भी साथी हो। चाहे संगमयुग सेवा के कर्त्तव्य में, चाहे भविष्य में राज्य-कर्त्ता के कर्त्तव्य में--दोनों में साथी हो। ब्रह्मा के जन्म-स्थान तथा राज्य-स्थान के भी साथी हो और परमधाम घर में भी साथी, साथ रहते हो।" बाबा जैसे-जैसे यह कह रहे थे तो बाबा की दृष्टि में स्वमान और स्नेह-- दोनों साथ-साथ समाये हुए थे। इसी रीति जो भी बच्चे इमर्ज थे उनके चेहरे पर भी यह दोनों लहरें दिखाई दे रही थीं, उसी में ही सब खोये हुए थे।

उसके बाद बाबा ने कहा--सभी को सदा साथ की बधाई हो ! तो सभी मुस्कराते रहे। बाबा ने कहा--"शिवबाबा तो कृष्ण बनेगा नहीं, ब्रह्मा बाबा ही बनते हैं। आज विशेष ब्रह्मा सो श्रीकृष्ण का ही दिन है। ब्रह्मा बाबा अकेले कभी नहीं रहते, सदैव अपने बच्चों के साथ रहते हैं। तो जन्म-अष्टमी सिर्फ ब्रह्मा बाबा की नहीं है लेकिन बाबा के साथ विशेष बच्चों की भी है।" सभी मिलकर कहने लगे--बाबा, आपको जन्मदिन की बधाई हो। बाबा ने कहा--आप सबको भी जन्म की बधाई हो। यह बोल ऐसे लग रहे थे जैसे सभी नैचुरल साज़ के रूप में गा रहे हैं। गीत के रूप में नहीं लेकिन साज़ के रूप में बोल रहे थे। उसके बाद बाबा ने कहा--आओ मेरे जन्म साथी, चलो। बाबा उठे और उठते हुए बाबा ने सभी को ऐसे बाहों में लिया तो एक नई सीन इमर्ज हो गई। बाबा वैसे भी ऊंचे हैं, तो ऐसे लग रहा था जैसे बाबा सभी के ऊपर ताज के रूप में हैं और सीन एक सुन्दर छत्र के रूप में दिखाई दे रही थी। बाबा ऐसे ही बाहों में लेते हुए आगे चले। बाबा जहाँ सबको लेकर चले वहाँ बहुत अच्छा दृश्य देखा।

जैसे छोटे बच्चों के लिए एक के ऊपर एक छोटे-छोटे झूले होते हैं, ऐसे झूले थे। वे झूले घूम नहीं रहे थे। उन झूलों के पास जब पहुँचे तो बाबा का स्वरूप और जो भी साथ में थे उन सबका स्वरूप भविष्य देवता का बन गया और सभी छोटे-छोटे राजकुमार और राजकुमारी के रूप में उन सजे हुए झूलों में बैठ गये। करीब अढ़ाई-तीन साल के बच्चे लग रहे थे। झूला सिंहासन की रीति से पिकाक (मोर) की डिजाइन में सज़ा था, उसी पर सब बड़े आराम

से बैठे थे। बड़ी सुन्दर सीन लग रही थी ! फिर बाबा इमर्ज हुए और कहा—"देखो, आप मेरे भविष्य के जन्म- साथी भी हो। क्योंकि अकेला श्रीकृष्ण क्या करेगा। अकेले तो रहना ही नहीं। परमधाम में भल सबकी स्थिति अकेले की होगी लेकिन फिर तो साथ में ही रहना है।" फिर बाबा ने कहा—अच्छा, अभी तुमको एक और दृश्य दिखाता हूँ। थोड़ा आगे चले तो वहीं छोटे-छोटे बच्चे जो झूले में थे, उन्हें राज-दरबार में बड़े रूप में देखा। लेकिन इस बार राज-दरबार की एक विशेषता देखी। एक-एक के सिंहासन के पीछे बहुत सूक्ष्म ५ आकार दिखाई दे रहे थे। वह ऐसे खड़े थे जैसे बड़ों का रिगार्ड रखने के रूप में सेवाधारी खड़े हों। बाबा ने कहा—"बच्ची, जानती हो कि राज-दरबार में यह ५ कौन खड़े हैं? बाबा ने कहा कि यह हैं तुम्हारी दासियां—५ तत्व। यह ५ तत्व सेवाधारी बनकर तुम्हारे राज-दरबार में खड़े हैं। क्योंकि तुम बच्चे अभी ही प्रकृतिजीत और मायाजीत बनते हो। इसलिए यह प्रकृति तुम्हारी दासी बनकर खड़ी है।"

फिर सतयुग का दृश्य समाप्त हो गया और संगम का दृश्य इमर्ज हुआ। उसमें सभी बच्चे इमर्ज हो गये। बाबा सभी बच्चों को देखते हुए बहुत मीठे टोन में बोल बोल रहे थे—"मेरे लाडले, सिकीलधे नूरे रत्न बच्चे, सभी को नई दुनिया के नये जन्म की बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो... !" ऐसे बहुत अच्छे साज़ की रीति से बाबा के यह बोल थे। बाबा ने सभी को बधाई देते हुए स्वमान तथा स्नेह की दृष्टि दी।

उसके बाद बाबा ने कहा—"बच्चे, संगठन बहुत अच्छा किया। बाबा के यह महावाक्य सदा याद रखते रहना कि जैसे अभी उमंग-उत्साह है, ऐसे सदा बना रहे। ऐसा नहीं हो कि यहाँ के वातावरण में उमंग-उत्साह हो और सेवा स्थानों के वातावरण में या दुनिया के वातावरण में आने से फिर यह उमंग-उत्साह कम हो जाए और फिर आप लोग कहो कि सरकमस्टांस ही ऐसे थे, इसीलिए यह हो गया। तो बाबा 'सरकमस्टांस' शब्द नहीं सुनना चाहता है लेकिन 'समथिंग न्यु' देखना चाहता है। जो भी संकल्प करो, बोल बोलो—उसमें 'समथिंग न्यु' करना है। यह भी जन्म-अष्टमी मनाकर जाना।

श्रीकृष्ण के साथ जन्म-अष्टमी तो आप सबकी भी है। लेकिन इस समय तुम्हारे नये उमंग-उत्साह, दृढ़ संकल्प द्वारा यह नई जन्म-अष्टमी है। इस जन्म-अष्टमी को भूलना नहीं।"

बाबा ने कहा—"आप पूछेंगे कि बाबा इसे अष्टमी क्यों कहते हैं? अष्टमी इसीलिए कहते क्योंकि अष्ट राज्य जो चलने हैं, उसमें राज्य-अधिकारी बनने के लिए ही यह नया जन्म 'उमंग-उत्साह' का है। इसीलिए सभी के नये उमंग-उत्साह के दृढ़ संकल्प द्वारा नये जन्म की वा जन्म-अष्टमी की मुबारक बाबा दे रहे हैं!" फिर बाबा ने कहा—"इसके लिए बच्चों को एक-दो के सहयोगी बनकर के एक बात करनी ही होगी, वह क्या करेंगे? शुद्ध संकल्प की बात तो बाबा ने सुनाई ही है। शुद्ध संकल्प है बीज। लेकिन बीज के पहले धरनी तैयार होती है। जब तक धरनी तैयार नहीं होती तो बीज कितना भी शक्तिशाली डालो लेकिन उसका फल नहीं निकलता। श्रेष्ठ संकल्प का बीज तो डालना ही है, सेवा इस विधि से करनी ही है। लेकिन उसके पहले जैसे धरनी को तैयार करने के लिए हमेशा हल चलाया जाता है, ऐसे आजकल बच्चों की वृत्ति जो होनी चाहिए वह बेहद के वैराग की हो। यह बेहद के वैराग की हलचल का हल अपने अन्दर चलाओ तो और सभी हलचलें खत्म हो जायेंगी। अब बेहद के वैराग के हल से धरनी तैयार करो, फिर यह शुद्ध संकल्प का बीज बहुत जल्दी प्रत्यक्ष फल देगा। नहीं तो टाइम भी लगता और मेहनत भी करनी पड़ती है।" फिर बाबा ने इस बेहद की वैराग वृत्ति के लिए तीन बातें बोली—

(१) स्वयं के देहभान या और जो भी भान हों—उनसे बेहद का वैराग।

(२) हद के सेवा भाव से बेहद का वैराग।

(३) सेवा के साधनों से बेहद का वैराग।

बाबा ने यह तीन बातें कहीं। इन तीन बातों से अब अपने अन्दर पुरुषार्थ करके वैराग वृत्ति का हल चलाना है। बाबा ने कहा—इसी बेहद के वैराग वृत्ति की बहुत आवश्यकता है। इसका भी राज सुनाते हुए बाबा ने कहा कि—"तुम्हारा नया राज्य भी तब तक नहीं आ सकता जब तक दुनिया में पहले

बेहद के वैराग की वृत्ति नहीं होगी । परिवर्तन का आधार ही वैराग है । तुम बच्चे बेहद की वैराग वृत्ति से मनुष्य आत्माओं में अभी वैराग वृत्ति पैदा करो, तब परिवर्तन होगा । कुछ भी हो जाता है—वैराग न होने के कारण एक-दो मास के बाद फिर कहते कि यह तो होता ही है । दिल का वैराग नहीं आता, टैम्प्रेरी प्रभाव पड़ता है । इसलिए अब वैराग वृत्ति विश्व में फैलाओ । वह तब फैला सकेंगे जब हरेक बच्चे में अपने अन्दर बेहद की वैराग वृत्ति होगी । आपकी वैराग वृत्ति से वायब्रेशन फैलेगा और उसी से विश्व में मनुष्यात्माओं की वैराग वृत्ति बनेगी । तब ही इस सृष्टि का परिवर्तन होगा ।"

बाबा ने कहा—"बहुत अच्छा संगठन हुआ । बाबा के पास भिन्न-भिन्न उमंग-उत्साह के फूलों की भिन्न-भिन्न खुशबू वतन में पहुँची । बाबा भी बीच-बीच में चक्र लगाते देखते थे और देख रहे हैं ।" इसलिए बाबा की बच्चों के प्रति यही आश है कि अभी बेहद की वैराग वृत्ति बनाओ और इसी वैराग वृत्ति से बहुत जल्दी 'परिवर्तन' का प्रत्यक्ष फल देखेंगे—ऐसे कहते बाबा ने सभी को बहुत-बहुत याद दी । ओम् शान्ति ।

१६.८.९०

मेरे पन को मिटाने की विधि है–त्याग और वैराग

(महारथी बहनों के संगठन में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आप सभी का शुभ संकल्प और समाचार लेते हुए जैसे ही बाबा के पास मैं पहुँची तो बाबा सामने थोड़ा दूरी पर खड़े थे और बाबा के हाथ में दो मालायें थीं । मैं दूर ही खड़ी थी । एक माला राइट हाथ में थी, दूसरी माला लेफ्ट हाथ में थी । जो माला लेफ्ट हाथ में थी वह बहुत रंग-बिरंगी चमक रही थी और वह बहुत सुन्दर आकर्षण वाली हीरों की माला थी । लेकिन जो

माला राइट हाथ में थी उसमें चमक नहीं थी । बाबा ने दूर से ही दिखाया । बाबा ने पूछा—दोनों मालाओं में से तुमको कौनसी माला पसन्द है ? मैं समझ गई कि बाबा पूछता है तो जरूर इसमें भी कुछ राज है । मैं मुस्करा भी रही थी और सोच भी रही थी कि इन दो मालाओं का राज़ क्या है ? हमने कहा—राइट हैण्ड वाली माला अच्छी है । फिर हम थोड़ा आगे गई तो क्या देखा—राइट हैण्ड वाली माला थी रीयल रुद्राक्ष की माला । वह भल चमकती नहीं थी लेकिन थी मूल्यवान । वह रुद्राक्ष की माला राइट हैण्ड में थी । दूसरे हाथ में चमकती हुई माला थी ।

बाबा ने कहा—बच्ची, आज बाबा डबल माला देख रहे थे । हमने कहा—बाबा, इसमें जरूर कुछ रहस्य होगा ! बाबा ने कहा—माला हाथ में लेकर देखो । फिर हमने जब उस माला को अच्छी रीति देखा तो रुद्राक्ष वाली माला का जो दाना था उसमें हर एक दाने पर लिखा हुआ था—मेरा बाबा, विश्व-कल्याणकारी बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा । हर दाने पर मेरा शब्द पहले था । हर एक दाने पर इसी प्रकार बाबा की महिमा का शब्द था । दूसरी माला में भिन्न-भिन्न लिखत थी—मेरा मान, मेरा शान, मेरा स्थान, मेरा वी.आई.पी., मेरा साधन, मेरा जिज्ञासु..... । इसी प्रकार 'मेरा-मेरा' की माला थी और बहुत वैराइटी थी—मेरा नाम, मेरा मान, मेरी बुद्धि..... । फिर बाबा ने कहा—"बताओ कौनसी माला पसन्द है ? बाबा आज यह लिस्ट निकाल रहा था कि हर बच्चे के अन्दर मेरा-मेरा कितने प्रकार का है ! इसलिए तुमको आते ही यह दृश्य दिखाया ।" मैं तो साक्षी हो देख रही थी ।

फिर बाबा ने कहा—बच्चों से अब तक मेरापन मिटा नहीं है । हमने पूछा—कितनी परसेन्ट थी ? तो बाबा ने कहा—अभी नथिंग नहीं है लेकिन समथिंग है । इतना ही जवाब दिया । हमने कहा—"बाबा, अभी इसके लिए ही तो भट्ठी हो रही है ना । तो जरूर समथिंग से नथिंग हो जायेगा ।" बाबा बहुत मीठा मुस्करा रहा था । जैसे एक-एक रत्न को देख मुस्करा रहा था और ऐसा लग रहा था जैसे कि बाबा वहाँ था ही नहीं । मैंने कहा—बाबा, आप कहीं चले गये क्या ? बाबा ने कहा—हम बच्चों को इमर्ज़ कर देख रहा था ।

फिर बाबा ने कहा—नथिंग तो होना है लेकिन इसके लिए बड़े वैराग और त्याग की दरकार है। सबसे बड़ा त्याग है अपनापन का त्याग, बाडी-कान्सेस का अपनापन। मेरा-मेरा जो आता है—मैं ही कुछ करुँ, मेरी बुद्धि अच्छी है। अपनेपन का जो भान आता है वह मेरा-मेरा उत्पन्न करता है। वह अपनापन बिल्कुल ही त्याग हो जाए—इसमें मेहनत लगती है। पहले जब आते हैं तो पहले अपनापन वा मेरापन नहीं होता। पहले नशे में, निश्चय में चूर होते हैं, उसमें लवलीन रहते हैं। फिर धीरे-धीरे मेरा-मेरापन इमर्ज होता है। दूसरे को भी अपनेपन से देखें वा समझें—जैसे मैं हूँ वैसे यह भी एक है। मेरा नाम हो वा उनका हो। लेकिन नाम तो इंस्टीट्युशन का है, नाम तो बाबा का है। तो ऐसी-ऐसी बातें जो पीछे आती हैं वह त्याग को खत्म कर देती हैं। इसलिए इसका वैराग और त्याग चाहिए। वैराग के बिना त्याग नहीं हो सकता और त्याग का भाग्य न मिले—यह तो होता नहीं। किसको प्रत्यक्ष मिलता, किसको थोड़ा देरी से मिलता। तो बाबा ने कहा—नथिंग होना ही है लेकिन जब हर एक के मन में वैराग के त्याग की लहर उत्पन्न हो, तब ही नथिंग होगा।"

हमने कहा—बाबा, हम लोगों का एक संगठन पूरा हुआ, अब दूसरा हो रहा है। हमने कहा—आपको हमारे संगठन से खुशबू तो आ रही है ना। बाबा ने कहा—"हाँ, एक खुशबू आ रही है। इच्छा की खुशबू सभी में है। लेकिन हमें अच्छा बनना ही है, इसमें नम्बरवार हैं। लेकिन होना है।" हमने कहा—कब होगा? बाबा ने कहा—जब इच्छा और अच्छा का बैलेन्स हो जायेगा तब फिर हो ही जायेगा। बाबा ने कहा—"यह पक्का संकल्प करें कि कोई भी हद की इच्छा नहीं रखनी है। एक ही इच्छा रहे—जो बाबा की इच्छा वह मेरी इच्छा। बाबा की इच्छा सर्विस प्रति क्या है, हमारे प्रति क्या है। जो बाबा की इच्छा, वही हमारी इच्छा हो। इसमें समानता हो। यह इच्छा ही 'समथिंग' को समाप्त कर नथिंग कर देगी।" तो पहले वैराग फिर त्याग होगा। हद की इच्छायें समाप्त कर जो बाबा की इच्छा वह मेरी इच्छा रहे तो अच्छा बन ही जायेंगे। ओम् शान्ति।

१७.८.९०

नुमाःशाम के समय भक्तों की पुकार सुनो

(दादियों के संगठन में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

सभी की याद-प्यार लेते हुए आज जैसे ही मैं बाबा के पास वतन में पहुँची तो बाबा बड़े स्नेह के नयनों से मुलाकात कर रहे थे। आज हमने देखा कि बाबा के नयनों में, जैसे नयनों में बीच में बिन्दी है, उसकी जगह पर नयनों के बीच में भिन्न-भिन्न रत्न चमक रहे थे और एक रत्न के बाद दूसरा, फिर तीसरा रत्न दिखाई दे रहा था। बाबा ने कहा—"देखो, बच्ची, बच्चों के नयनों में बाबा है और बाबा के नयनों में आप नूरे रत्न हैं। तो आज मैं बच्चों को नूरे रत्न के रूप में याद कर रहा हूँ।" आज मैं नुमा: शाम के समय गई थी। तो बाबा ने कहा—यह नुमा: शाम का जो समय है, इसमें आप इष्ट बच्चों की वा पूज्य बच्चों की विशेष मैजारिटी भक्त लोग, जो भावना वाले हैं, वो खास आरती करते हैं और बहुत बड़ा आरती का रूप होता है। तो यह नुमा: शाम का जो समय है यह आप इष्ट देव वा देवियों के भक्तों की स्मृति का समय है। फिर बाबा ने पूछा कि—"आप बच्चों को कभी यह महसूसता होती है कि हमारे पूज्य रूप को, हमारे ही भक्त या बाबा के भक्त इतना प्यार से याद कर रहे हैं? जो भक्त हैं वे और सब सहारे देखकर के अभी उन सहारों से किनारा कर रहे हैं और आप इष्ट देवों को ही अपना सहारा समझने लगे हैं। तो आप लोगों को भक्तों का वायब्रेशन पहुँचता है? जैसे कोई बुलाता है या याद करता है तो उसकी याद दिल में पहुँचती है ना। ऐसे नुमा: शाम के समय आप बच्चों को यह फील होता है?" तो मैं मुस्करा रही थी। बाबा ने कहा—"आप सभी बिजी रहते हो ना। इसलिए कम फीलिंग आती है। लेकिन जैसे जैसे आपकी मन-बुद्धि फ्री होगी, तो आपका यह अनुभव बहुत बढ़ेगा। और ऐसे महसूस करेंगे जैसे भक्त आत्मायें बाबा के साथ-साथ हम इष्ट देवताओं का भी आह्वान कर रही हैं।" फिर बाबा ने कहा—अच्छा, समाचार सुनाओ, कैसे

आई हो ? मैंने कहा—बाबा, समाचार तो आपके पास पहले ही पहुँच जाता है, मैं क्या सुनाऊं ।

तो बाबा ने सभी बच्चों को एक टाइटल देते हुए कहा कि—"आप सभी हो 'विधि-विधान रचता बच्चे' । बाबा आज ऐसे विधि-विधान रचता बच्चों को देख रहे हैं । विधि भी बहुत अच्छी बनाई है और विधान भी बहुत अच्छे बनाये हैं । लेकिन विधि-विधान रचता तो बने, अभी क्या करना है ? रचता बनना तो सहज है लेकिन पालना करना, उसमें थोड़ा नैचुरल अटेन्शन देना पड़ता है । विधि-विधान रचता तो बने, लेकिन जो रचना रची है उसकी पालना करने से ही विश्व के पालनहार बनेंगे । यहाँ से ही पालना करने के संस्कार जो जितना भरता है उतना ही वहाँ विश्व की पालना करने के निमित्त बनता है ।" तो बाबा ने कहा—"रचता बने हो, बाबा को बहुत खुशी है । लेकिन अभी यह अन्डरलाइन करना कि रचता के साथ-साथ पालनहार भी बनना है । आप विधान की पालना करना तो आपको देखकर के दूसरों में नियमों को पालन करने की हिम्मत आयेगी ।" यह कहते हुए फिर बाबा ने कहा—चलो, तुमको एक बहुत अच्छी सीन दिखाता हूँ ।

मैं बाबा के साथ-साथ गई तो देखा कि जैसे यहाँ हम सब राउण्ड में बैठे हैं, वैसे वहाँ भी राउण्ड में बहुत सुन्दर सभा लगी थी । मैंने सोचा—बाबा ने वही सभा इमर्ज की है : बाबा बोले—बच्ची, क्या सोच रही हो ? मैंने कहा—बाबा, आपने यहाँ तो वही सभा इमर्ज की है । बाबा ने कहा—इस सभा की विशेषता देखो । इतने में मैंने देखा—हर एक जैसे यहाँ साकार रूप में बैठे हैं ऐसे ही बैठे थे लेकिन हर एक के सामने उनका आकारी रूप चमकता हुआ दिखाई दे रहा था और हर एक के पीछे सम्पूर्ण ब्रह्मा बाबा जैसे कि सबके सिर पर हाथ फिरा रहे थे । बाबा ने कहा—"बच्ची, इसका रहस्य समझा ? अभी आप सबका जो सम्पूर्ण स्वरूप है, वह आपका आह्वान कर रहा है । जैसे साकार ब्रह्मा बाबा को देखा, बाबा को यह फीलिंग आती थी कि बस, अभी मैं सम्पूर्ण बना कि बना, फिर सम्पूर्ण बनने के बाद मैं जाकर किशोर बनूँगा । तो फरिश्ते-स्वरूप की और राज्य की—दोनों फीलिंग बाबा के सामने जाने से

ही होती थीं। जैसे साकार बाबा को अपना अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप, जो सम्पूर्ण कर्मातीत है, वह आह्वान कर रहा था, खींच रहा था और बाबा को यह फीलिंग आती थी। इसी रीति से आप बच्चों को भी यह फीलिंग आनी चाहिए कि हमारा ही सम्पूर्ण कर्मातीत स्टेज का स्वरूप आह्वान कर रहा है।" बाबा ने आगे कहा—"देखो, कितना मीठा, प्यारा लगता है यह कर्मातीत स्वरूप ! तो यह आपका स्वरूप ही आपका आह्वान कर रहा है कि कब मैं और आप समाकर एक हो जाएं ! इसीलिए यह सीन दिखाई।

बाबा को लाख गुणा बच्चों पर खुशी है। क्योंकि जब तक अपने आप रुचि नहीं होती है तो बाबा प्रोग्राम भी देता तो कहते—बाबा, एक साल कैसे सर्विस बन्द करेंगे। लेकिन अभी मिलकर आपस में बनाया है, इसीलिए आप लोगों को फील नहीं होगा।" फिर बाबा ने कहा—"हमेशा यही समझना कि मेरा बैकबोन सम्पूर्ण अव्यक्त ब्रह्मा बाबा है और मुझे सदैव बाबा को ही देखना है। बाबा को ही देखकर चलेंगे तो ला-मेकर रहेंगे। अगर दूसरे को देखा तो ला-ब्रेकर बन जायेंगे। इसीलिए सदैव यह समझना कि मुझे ब्रह्मा बाबा को ही फालो करना है—बाबा ने क्या किया ! बस, बाबा, बाबा...ही कहते रहेंगे तो कभी भी यह एक साल तपस्या का बड़ा नहीं लगेगा। संकल्प भी नहीं आयेगा कि—यह क्या, कोई फंक्शन ही नहीं करना है, कोई सेवा ही नहीं करनी है !"

"देखो, ब्रह्मा बाबा ने भी एक साल से भी ज्यादा समय आप लोगों को बेहद की सेवा के वैराग वृत्ति का साक्षात्कार कराया। आप खुद भी कहते थे कि बाबा सब कुछ सुनते हुए भी और कहीं हैं। तो यह क्या है ? सेवा तो की लेकिन सेवा में भी न्यारा-प्यारा रहा। यह बेहद की वैराग वृत्ति और सम्पूर्ण स्वरूप के आह्वान की आकर्षण खींचती रही। इसी रीति से आप लोग भी ब्रह्मा बाबा को सदैव सामने देखना। और किसको नहीं देखना। तो ला-मेकर बनेंगे, ब्रेकर नहीं बनेंगे।" उसके बाद बाबा ने कहा—"जो भी सभी बैठे हैं उनको आज मैं, उनके अपने ही सम्पूर्ण स्वरूप की सौगात दे रहा हूँ, यह सौगात सदा याद रखना। इससे आपको बल मिलता रहेगा।"

२०.८.९०

लक्ष्य और लक्षण समान करना ही समर्पित होना है

(टीचर्स बहनों के प्रथम ग्रुप में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आप सभी का याद-प्यार लेते हुए वतन में बाबा के पास पहुँची। मैं बाबा की ओर बढ़ रही थी और बाबा हमारी ओर आ रहे थे—ऐसे बाबा से मिलन हुआ। बाबा ने मुस्कराते हुए बोला—बच्ची, आज क्या समाचार लाई हो? तो मैंने कहा—बाबा, आज चार ज़ोन की समर्पित बहनें इक्ट्ठी हुई हैं, उन सबकी याद लाई हूँ। बाबा मुस्कराया और कहा—समर्पित बहनें आई हैं! बाबा जैसे 'समर्पित' शब्द को अन्डरलाइन करके बोल रहे थे। बाबा ने पूछा-बताओ, समर्पण की निशानी क्या है? मैं बाबा के आगे क्या सुनाऊं—मुस्कराती रही। तो बाबा ने सुनाया कि—"समर्पण उसको कहते हैं जो आदि (पहले) दिन से अपने लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण कर चलते आ रहे हैं। जिनका लक्ष्य और लक्षण समान है—उनको कहते हैं समर्पण।" मैंने कहा—बाबा, यह तो सबका होगा ही।

तो बाबा ने कहा—"नहीं बच्ची, पहले दिन का जो लक्ष्य होता है वह बहुत उमंग-उत्साह का, ऊंचा होता है। फिर जब लक्षण धारण करने पड़ते हैं तो उसमें लक्ष्य के प्रमाण लक्षण में फर्क पड़ जाता है। क्योंकि जिस लक्ष्य से आते हैं उस लक्ष्य को प्राप्त करने वा मंजिल तक पहुँचने के लिए बीच में जो रास्ता तय करना पड़ता है, उस रास्ते में जो साइड-सीन आती हैं, जिसको आप परिस्थितियां कहते हो, वह लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण करना भुला देती हैं। पहले सभी का लक्ष्य रहता है कि जीवन को श्रेष्ठ बनाना है। लेकिन चलते-चलते 'जीवन बनाने' का लक्ष्य 'जीवन बिताने' के लक्ष्य में चेंज हो जाता है। पीछे जा नहीं सकते, आगे चल नहीं सकते—इसलिए चलना ही है। यह लक्ष्य और लक्षण में फर्क पड़ जाता है।" यह राज़ जैसे बाबा सुना रहे

थे। बाबा ने कहा—"बाबा, इसको ही कहते हैं लक्ष्य और लक्षण सदा समान रहे। जब तक सम्पूर्ण मंजिल तक पहुँचें तब तक जो लक्ष्य रखा है वही सदा चलता रहे।" हम सुनती रही।

फिर बाबा ने कहा—"सभी से यह पूछना कि सेन्टर पर रहने वाली समर्पित बहनें हो या संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क—इन पांचों में समर्पित हो? अर्पण हैं या समर्पण हैं?" मैंने कहा—बाबा, यह तो सभी समर्पण की लिस्ट में हैं। तो बाबा ने कहा—"सभी ने अपनी जीवन अर्पण तो की है। लेकिन जीवन अर्पण करने के बाद यह ५ बातें अर्पण करना—इसको कहते हैं समर्पण अर्थात् सब-कुछ अर्पण। तो अर्पण की लिस्ट में हैं या समर्पण हैं—यह सभी अपने आपको चेक करें।" क्योंकि यहाँ और तो कोई बुद्धि को काम नहीं है। रिफ्रेशर कोर्स करने आये हैं ना। अभी सिर्फ स्टडी है और चेकिंग का टाइम है। तन, मन—दोनों से बाबा ने फ्री कर दिया है। न जिज्ञासु सम्भालने हैं, न सेन्टर का कोई काम है। तो यह जो समय मिला है इसमें एकदम अन्तर्मुखी होकर अपनी चेकिंग करो कि—सचमुच, समर्पण और अर्पण में क्या अन्तर है! मैं अर्पण हूँ या समर्पण हूँ? समर्पण हूँ तो कितने परसेन्ट? किन-किन बातों में समर्पण हूँ? उसकी परसेन्टेज कितनी है?" यह महीन रूप से चेक करेंगे तो चेंज करने का भी उमंग आयेगा। इसलिए दूसरा कोई करे, उसके पहले स्वयं ही चेक करना और चेंज करना।"

फिर बाबा ने कहा कि—बाबा को एक बात की बहुत खुशी है। मैंने कहा—बाबा, किस बात की आपको खुशी है? तो बाबा ने कहा—"बाबा को खुशी है कि इतनी कुमारियां आत्मघात से बच गई! स्युसाइड (Suicide) करना—वह तो है जीवघात; लेकिन विकारों में फंसना—यह है आत्मघात। तो इतनी मेरी कुमारियां आत्मघात से बच गई! साथ-साथ ब्रह्माकुमारी बनने की, योगी जीवन बिताने की हिम्मत रखी है—यह दूसरी खुशी है! तो बाबा बच्चों की हिम्मत पर खुश हैं। यह हिम्मत तो बहुत अच्छी रखी है। लेकिन हिम्मत का रिटर्न है—बाबा की मदद। बाबा जो बच्चों की हिम्मत देखकर मदद देता है वह लेने में थोड़ा-सा कमी कर देते हैं। बाबा जितनी मदद देता

है, वह मदद अगर बच्चे लेते जायें और चलते जायें तो पहाड़ जैसी परिस्थिति भी स्वस्थिति में बदल जाए। लेकिन बाबा जो मदद देता है उसको लेने के लिए दो बातें चाहिए–(१) एक तो 'एकानामी' की बुद्धि चाहिए, (२) 'एकाग्र' बुद्धि चाहिए।" एकानामी में बाबा ने कहा–"व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ कर्म, व्यर्थ समय की एकानामी हो। यह दोनों विशेषताएं जिनमें हैं, उन्हें बाबा की मदद हजार गुणा मिलती है और उस मदद से उड़ते रहते हैं। लेकिन संकल्प की, समय की, बोल की, कर्म की जो एकानामी नहीं करते वह कभी एकाग्र-बुद्धि नहीं हो सकते और जहाँ एकाग्रता नहीं है वहाँ बाबा की मदद कैच नहीं कर सकते।"

बाबा ने कहा–"आप बच्चे मुझे बहुत अच्छे लगते हो। बहुत सहज उड़ भी सकते हो। लेकिन मेहनत क्यों करते ? उसका कारण यह है कि बाबा जो मेहनत से बचाने की मदद देता है वह कैच नहीं करते, फिर मेहनत की लाइफ हो जाती है। इसलिए सभी बच्चों को कहो कि बाबा बच्चों के बहुत-बहुत स्नेही हैं और मददगार हैं। तुम बच्चों को कुछ भी सोचने की, मेहनत करने की जरूरत ही नहीं है। जैसे बाबा चला रहा है ऐसे चलते चलो। बाबा को बच्चों पर रहम भी आता है, स्नेह भी आता है। बाबा के चेहरे पर रहम और स्नेह–दोनों ही दिखाई दे रहे थे।" फिर बाबा ने कहा–"बाबा का आप बच्चों से जिगरी प्यार है। भले वह जिगर में कभी रखते हैं या नहीं रखते हैं लेकिन बाबा के जिगर में तो सभी बच्चे हैं ही। अच्छा, चलो तो तुमको एक दृश्य दिखाऊं।"

बाबा हमें ले चला। तो सामने क्या देखा कि एक बहुत बड़ा हाल है। पहले वह हाल खाली था, सिर्फ बीच में एक दीपक जल रहा था। वह जगा हुआ दीपक बहुत सुन्दर लग रहा था। बाबा ने कहा–बच्चों को मैं वतन में बुलाता हूँ। बाबा ने संकल्प ही किया तो सभी बच्चे वतन में पहुँच गये और हाल में राउन्ड की रीति से बैठते गये। चार सर्कल बन गये और बीच में दीपक जग रहा था। सभी का अटेन्शन दीपक की तरफ था। मैं कोशिश कर रही थी कि देखे यह दीपक क्या है ! बाबा ने हमारा संकल्प कैच करते हुए

बोला—बच्ची, तुम दीपक को देखना चाहती हो ? तो मैंने कहा—हाँ बाबा ! बाबा ने कहा—देखकर आओ ।

मैंने देखा—"जिस स्टैण्ड पर दीपक रखा था उसका शेप हार्ट की रीति से था, उसके ही बीच में दीपक था । उसमें जो लौ (ज्योत) जग रही थी वह एकदम सीधी थी, उसका प्रकाश चारों ओर बहुत अच्छा फैल रहा था । उसके नीचे एक लिखत थी—"बापदादा की आशा का दीपक" । यह नजदीक से ही पढ़ने में आता था ।" तो बाबा ने कहा—"देखो, बाबा बच्चों से क्या चाहता है ? बाप की बच्चों प्रति कौनसी आश है ? बाबा की यही एक आश है कि मेरा हर एक बच्चा जो है वह राजा बन जाये !" मैंने कहा—बाबा, यह तो बहुत खुशी की बात है ! प्रजा कौन बनना चाहता है ! तो बाबा ने कहा—राजा बनने के लिए जैसे इस दीपक का इतना तेज प्रकाश एकाग्र है, ऐसे यह आशा का दीपक सदा एकाग्र जगता रहे । फिर बाबा ने कहा—अच्छा, दूसरी एक सीन दिखाता हूँ ।

इतने में क्या हुआ—जैसे यज्ञ करते हैं तो यज्ञ में जौ-तिल आदि डालते हैं और उससे बहुत खुशबू आदि निकलती है, आवाज भी होता रहता है । ऐसे ही जो चारों ओर बैठे थे, उनकी तरफ से दीपक की जगह पर कुछ पड़ रहा था । हाथ नहीं दिख रहे थे लेकिन चारों तरफ से कुछ आ रहा था । उसमें से कुछ भस्म हो रहा था और कुछ जैसे आधा कच्चा दूर जाकर पड़ता है, ऐसे चारों ओर यह सीन हो गई । मैंने कहा—बाबा, इसमें यह क्या पड़ रहा है ? तो बाबा ने कहा कि—"यह बाबा की एक आश पूर्ण करने का दीपक दिल में जगाते हैं तो और सब हद की आशायें इसमें स्वाहा हो जाती हैं । हद की आशायें तो अनेक हैं लेकिन बाप की आशा एक है । जब बच्चों के दिल में यही एक आशा रहती है कि—बस, बाबा की आशा को पूर्ण करना है, मुझे राजा बनना ही है । तो बाबा की एक आशा पूर्ण करने से सब आशायें उसमें स्वाहा हो जाती हैं ।" 'राजा', प्रजा से कैसे चलता है, कैसे प्रजा के सम्बन्ध-सम्पर्क में आता है तथा राजाई संस्कार क्या है—इसका अनुभव करो । यह कर्मेन्द्रियां भी आपकी प्रजा हैं !"

ऐसे रहस्य सुनाते हुए बाबा ने कहा कि—"एक-एक हद की आशाओं को खत्म करने की कोशिश करेंगे तो आशा-तृष्णा ऐसी चीज है जो बढ़ती जायेंगी, कम नहीं होगी। लेकिन एक बाबा की आशा को पूर्ण करना माना हद की सब आशायें फटाफट स्वाहा होना।" ऐसे कहते जैसे बाबा हर एक बच्चे को यही गिफ्ट दे रहे थे कि बाबा की आशा का दीपक जगाओ। यह गिफ्ट ही सहज पुरुषार्थी बना देगी। ऐसे कहते बाबा ने सभी को बहुत-बहुत याद दी। ओम् शान्ति।

२८.८.९०

अन्तर्मन के वाहन से उड़ती कला का अनुभव करो

(टीचर्स बहनों के दूसरे ग्रुप में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आप सभी के दिल का याद-प्यार लेते हुए आज जब मैं बाबा के पास पहुँची तो देखा—जैसे साकार में बाबा खड़े होकर दृष्टि देते थे, ऐसे ही दूर से खड़े होकर दृष्टि दे रहे थे। उसी दृष्टि को लेते हुए मैं बाबा के नजदीक पहुंची। आज बाबा ने स्नेह और शान्ति की शक्ति के रूप से दृष्टि दी और सबकी याद ली। फिर बाबा ने कहा—आओ मेरे अन्तर्मन वाहक बच्चे, आओ! मैं बाबा की ओर देख रही थी। बाबा बोले—बच्ची, तुम जानती हो कि इस नुमः शाम के समय बाबा क्या कर रहे थे? बाबा ने बताया—मैं पंछियों को उड़ा रहा था। मैं मुस्कराने लगी। बाबा ने पूछा—"जानती हो, कौनसे पंछी? देखो, लोग तो सफेद कबूतरों को उड़ाते हैं। लेकिन बाबा अपने स्नेही, समीप, शक्तिशाली, उड़ती कला वाले पंछियों को उड़ा रहे थे और देख रहे थे कि कितना उड़ते पंछी हैं और कितने समय में कितनी स्पीड तक उड़ सकते हैं।"

मैंने पूछा—बाबा, आपने जो पंछी उड़ाये, वो उड़कर कहाँ गये? बाबा ने

कहा—"मैंने एक ग्रुप को भक्तों के पास भेजा, दूसरे को वैज्ञानिकों के पास भेजा, तीसरे ग्रुप को धर्म-नेताओं के पास भेजा और चौथे ग्रुप को आजकल के राजनेताओं के पास भेजा। क्यों भेजा? क्योंकि सभी वर्गों की आत्मायें बहुत निराश हो चुकी हैं। ऐसे निराश बच्चों को शुभ आशा, श्रेष्ठ आशा, खुशी की आशा देने के लिए बच्चों का ग्रुप भेजा।" तो मैंने पूछा—बाबा, फिर रिजल्ट क्या हुई? बाबा ने कहा—"रिजल्ट भिन्न-भिन्न प्रकार की रही। जैसे उड़ते पंछी थे, ऐसी रिजल्ट थी।" फिर बाबा ने जो पहले अन्तर्मन-वाहक बच्चे कहा था, उसका रहस्य बताते हुए कहा—अन्तर्मन से ही उड़ेंगे, यही वाहन है। तो अन्तर्मन-वाहक बच्चों को उड़ाया। कोई तो सेकेण्ड में उड़ गये, कोई को उड़ने में थोड़ा समय लगा। जैसे कभी-कभी कोई पंछी अपने पंखों को थोड़ा हिलाता है, फिर उड़ता है। तो कोई को कुछ सेकेण्ड लगा, कोई को कुछ मिनट लगे और कोई उड़े लेकिन चक्कर लगाकर वापस आ गये।"

बाबा ने आगे कहा—"बाबा बच्चों से अब यही चाहते हैं कि बच्चे अन्तर्मन यानी श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति से, इसी मन के वाहन से सेवा करें। यही सेवा का सबसे अच्छा साधन है। इसे चाहे शुभ भावना कहो, चाहे शुभ कामना कहो या श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति कहो—यही सेवा का साधन है, सेफ्टी का भी साधन है और माला में समीप आने का भी साधन है। इसलिए बाबा अभी अन्तर्मन-वाहक बच्चों को देखना चाहते हैं। तो अब विश्व के सर्व वर्गों की इस अन्तर्मन-वाहक स्थिति से या श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति से आप सेवा कर सकते हो।" बाबा ने आज अन्त:वाहक शरीर नहीं कहा, अन्तर्मन-वाहक कहा। क्योंकि अन्त:वाहक शरीर का अर्थ है कि अन्तर्मन ही वाहक बने। लोगों ने इसको ही कहा है—अन्त:वाहक शरीर। बाबा ने कहा कि यह अन्तर्मन-वाहक यह स्टेज आप बच्चों की अभी होनी चाहिए। जब यह आशा के दीपक जगायेंगे, तब निराश आत्माओं में यह संकल्प पैदा होगा कि कोई ठिकाना, कोई सहारा मिलने वाला है। यह श्रेष्ठ आशा का दीपक आपके श्रेष्ठ संकल्प द्वारा निराश आत्माओं में जगेगा।

बाबा ने कहा—"सभी ने बहुत अच्छे प्रोग्राम बनाये हैं। बाबा को बहुत

खुशी है कि सभी ने एक संकल्प से दिल से यह प्रोग्राम स्वीकार किया है कि हम अभी तपस्या वर्ष मनायेंगे। लेकिन यह संकल्प तो हो गया बीज। बीज तो पड़ गया। अब यह बीज फल कब देगा?" बाबा ने कहा—"बीज फल तब देता है जब उसको पानी दिया जाए, धूप-गर्मी दी जाए, उसकी पालना की जाए। तब ही बीज फल बनकर सामने आता है। तो अब सभी बच्चे अपने आपसे यह संकल्प करो कि हमने जो बीज धारण किया है, उसे फल के स्वरूप में लाना है। फल यही निकलेगा कि सभी आत्माओं की निराशा बदलकर श्रेष्ठ आशा के रूप में बदलेगी, परिवर्तन होगा। चाहे स्वयं में आत्माएं निराश हैं, चाहे सेवा में निराश हैं, चाहे और आत्माओं से निराश हैं—उन सबमें श्रेष्ठ आशा का परिवर्तन होगा। निराशा श्रेष्ठ आशा में परिवर्तन होगी। तो यह तपस्या वर्ष का फल निकलेगा। लेकिन इसके लिए बीज की सदा पालना करते रहना। ऐसा न हो कि किसी भी कारण से 'बीज' बीज ही रह जाए, फल प्रत्यक्षरूप में न आये। इसलिए अपने संकल्प द्वारा प्रैक्टिकल कर्म से पालना करते रहना।"

इसके बाद बाबा ने कहा कि आप लोगों ने प्लैन तो बनाया ही है कि तपस्या वर्ष में क्या करना है। तपस्या वर्ष अर्थात् एक तरफ योग-अग्नि में भस्म करना। जैसे यज्ञ में जौ-तिल आदि भस्म करते हैं और उसके फलस्वरूप वातावरण की शुद्धि होती है। तो ऐसे एक तरफ भस्म करना और दूसरे तरफ सच्चा सोना बनना और सुनहरी गोल्डन दुनिया लाना। यह इस तपस्या के यज्ञ-कुण्ड से फल निकलेगा! यह तपस्या वर्ष यज्ञ-कुण्ड का वर्ष है, सफलता-कुण्ड का वर्ष है। यह स्मृति रखने से संकल्प रूपी बीज का फल सहज प्राप्त होगा। बाबा इस तपस्या वर्ष के लिए अपना प्लैन बता रहे हैं। बाबा आप बच्चों के दृढ़ संकल्प के ऊपर बार-बार हर कर्म में वारी जायेंगे। वारी जाना माना मेहनत से छुड़ाकर वरदान और सूक्ष्म सहयोग देना। तुम बच्चे बाबा की श्रीमत पर वारी जायेंगे अर्थात् तपस्या करेंगे और बाबा तुम बच्चों के ऊपर विशेष वारी जायेंगे, जिससे ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी"—बाबा यह बहुत प्यार से बोल रहे थे। फिर बाबा ने एक दृश्य

दिखाया।

हम लोग जो यहाँ कर रहे हैं, उसे ही बाबा ने एक दृश्य के रूप में दिखाया। जैसे हम लोग यहाँ कुमारियों का समर्पण-समारोह करते हैं तो चमकीली चुन्नी और छत्र पहनाते हैं, ऐसे ही बाबा ने दृश्य दिखाया कि सभी तपस्या में बैठे हैं और लाइट की चुन्नी सभी के ऊपर पड़ी है। उस चुन्नी के ऊपर छोटे-छोटे लाइट के बहुत सुन्दर भिन्न-भिन्न फूल चमक रहे थे। सारी चुन्नियां वैराइटी फूलों से सजी हुई थीं और हर एक के ऊपर ताज भी लाइट का चमक रहा था। बाबा ने कहा—इस दृश्य से समझा कि बच्चे क्या कर रहे हैं? बाबा ने सुनाया—"बच्चे, अपने को सजनी बनाए दिव्य गुणों के श्रृंगार से, श्रेष्ठ संकल्पों से सज रहे हैं और सभी स्व-परिवर्तन से वायुमण्डल को, विश्व को परिवर्तन करने का ताज धारण कर रहे हैं। तो यही कर रहे हो ना! तो अभी अपने को सदा श्रृंगारे हुए रूप में ही देखना। हर संकल्प, हर कर्मेन्द्रिय में लाइट की चुन्नी पड़ी हुई हो। चुन्नी से जैसे सारा शरीर ही (बैठते समय) ढक जाता है, ऐसे ही यह लाइट की चुन्नी से सदा सजे सजाये रहना और यही सोचना कि मैं ऐसे साजन की सजी-सजाई सजनी हूँ! स्व-परिवर्तन की जिम्मेवारी का ताज सदा धारण करने से सफलता की माला आपके गले में सदैव पड़ी हुई अनुभव होगी। तो आप यह कर रहे हो और इसे ही दृढ़ता की स्टैम्प लगाकर करते रहना।"

फिर बाबा ने कहा—मेरे बच्चे बड़ी मेहनत करके आये हैं! हमने कहा—बाबा, मेहनत तो मोहब्बत में बदल गई। तो बाबा ने कहा—"नहीं, बच्चों ने बहुत मेहनत की है। लेकिन जितनी मेहनत की उससे ज्यादा फल मिल गया।" बाबा ने पूछा—मेहनत ज्यादा की है या फल ज्यादा मिला? मैंने कहा—बाबा, फल ज्यादा ही मिल रहा है। बाबा ने कहा—"कोई-कोई बच्चे मेहनत को ज्यादा याद कर रहे हैं। लेकिन बच्चों को जो फल मिला है यह ड्रामा में गोल्डन लाटरी, गोल्डन चांस है! तो जब मेहनत याद आये तो गोल्डन लाटरी, गोल्डन चांस को याद करना। फल को सामने रखने से मेहनत समाप्त हो जायेगी।" फिर बाबा ने इस ग्रुप के लिए एक बहुत बढ़िया सौगात दी।

वह सौगात थी—एक कमल का पुष्प और उस पुष्प के ऊपर एक दीपक। कमल-दीप। कमल के ऊपर वह दीपक एकरस जग रहा था। बाबा ने कहा—यह है कमल-दीप, दृढ़ संकल्प का दीपक, न्यारे, निराले और प्यारे बनने की निशानी। यह कमल-दीप बाबा सभी बच्चों को सौगात रूप में दे रहे हैं। ओम् शान्ति।

३.९.९०

सबसे बड़ी शक्ति–स्नेह की शक्ति

(टीचर्स बहनों के तीसरे ग्रुप में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज जैसे ही मैं वतन में पहुँची तो क्या देखा कि बाबा के एक तरफ हमारी दादी जी थी और दूसरी तरफ दादी जानकी थी। दोनों के साथ बाबा बैठे थे और बहुत बिजी थे। जैसे ही पहुँची तो बाबा का अटेन्शन मेरी तरफ नहीं था लेकिन अपने ही कार्य में बिजी थे। मैं जब आगे पहुँची तो बाबा ने नयन-मुलाकात की और पूछा—बच्ची, क्या सन्देश लाई हो? मैंने कहा—बाबा आज तो सभी बच्चों की शुभ आशा है कि बाबा से मिलन हो। बाबा इन दोनों दादियों को देखकर मुस्कराने लगे और कहा कि—आप दोनों वतन में किसलिए आई हो? इन्होंने भी कहा—बाबा आपको ले जाने के लिए आये हैं। बाबा मुस्कराये और दोनों का हाथ पकड़कर कहा—अच्छा, चलो। हम तीनों जैसे बाबा के साथ चल रहे थे बाबा ने कहा—"बच्ची, वैसे तो बाबा का आना समय पर ही होता है। लेकिन बाबा हमेशा कहते हैं कि स्नेह की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है। स्नेह से बच्चों ने कहा है, तो बाप बच्चों के सदा आज्ञाकारी सेवाधारी हैं, इसलिए 'ना' भी नहीं कर सकते। लेकिन सिर्फ चक्कर लगाकर आयेंगे।" दादियों ने कहा—बाबा, कुछ भी हो—आप चलो तो सही! तो बाबा ने कहा—'जी-हजूर'। दादियां बाबा के यह शब्द सुनकर

स्नेह में डूब गईं। फिर मैं तो गुम थी लेकिन मुझे ऐसे महसूस हुआ कि बाबा आये और जल्दी से ही वापस गये। (बाबा ने सन्देशी में प्रवेश हो ३-४ मिनट बच्चों को दृष्टि दी और हाथ हिलाते हुए वापस चले गये) मैं वतन में ही थी और दादियां गुम थीं। थोड़े समय के बाद बाबा वतन में पहुँचे और कहा—बच्चियां कहाँ गईं? मैंने कहा—बाबा, आप ही छोड़कर आये हो। तो कहा—नहीं, आज बाबा का तो काम है।" ऐसे कहते ही फिर दादी और दादी जानकी दोनों को बाबा ने इमर्ज किया और फिर अपने काम में लग गये। आज बाबा का अटेन्शन हमारी तरफ कम था और दादियों की तरफ ही ज्यादा था। मैंने कहा—बाबा, आखिर काम क्या है? तो बाबा ने कहा—आज मैं एक बहुत सुन्दर और विचित्र माला बना रहा हूँ।

दादियों के हाथों में भी पैड था और बाबा के हाथ में भी पैड था। फिर बाबा ने दादियों से पूछा—काम पूरा हुआ? तो दादियां मुस्कराने लगी। फिर बाबा ने सुनाया—"देखो बच्ची, आज बाबा इन बच्चियों से मिलकर एक कार्य कर रहे हैं। बाबा ने कहा है कि २५ ऐसे नाम निकालो जो हर इशारे को, समय को समझते हुए, जो बाप का या बड़ों का इशारा हो, उसे बिना संकोच, बिना संकल्प के, परिणाम अच्छा होगा या बुरा होगा या कैसा होगा—बिना यह संकल्प चलाये जो इशारा मिले वह प्रैक्टिकल में करे—ऐसे नाम बाबा इन दादियों के साथ मिलकर निकाल रहे थे। बाबा को ऐसे २५ नाम चाहिएं।" मैंने कहा—बाबा २५ ही क्यों चाहिए? ज्यादा भी तो हो सकते हैं। तो बाबा ने कहा—"२५ ही चाहिएं जो बिल्कुल संस्कारों से, बुद्धि से और कैचिंग पावर से समीप हों, जो कहा और किया। ऐसे २५ नाम चाहिएं। मैंने कहा—बाबा, वह नाम तो निकल गये होंगे। वो लिस्ट तो दिखाओ। तो बाबा ने कहा—अभी १२-१३ निकले हैं। मैंने कहा—बाबा, यह १२-१३ तो बहुत कम हैं। हम तो २५ को भी कम समझ रही थी। बाबा ने कहा—"१२-१३ में भी थोड़ा-सा बीच में पतला धागा दिखाई दे रहा है। जैसे माला में जब तक दाने से दाना नहीं मिलता है तो धागा दिखाई देता है, ऐसे धागा थोड़ा-सा दिखाई देता है।" मैंने कहा—बाबा, यह तो बहुत बड़ा पेपर है जो १२-१३ में भी धागा

दिखाई देता है।

फिर बाबा ने कहा—"माला तैयार तब होगी जब हर एक यह ऑफर करे कि मैं माला में आने के लिए तैयार हूँ। कितना भी बाबा या दादियां नाम निकालेंगी लेकिन जब तक बच्चों ने स्वयं ऑफर नहीं की है तब तक माला तैयार नहीं हो सकती। इसलिए दिल से खुद ऑफर करो कि मैं इस माला का मणका हूँ, अधिकारी हूँ। फिर यह माला जल्दी तैयार हो जायेगी।" मैंने कहा—बाबा, यह तो सभी ने दृढ़ संकल्प किया है कि हम बाबा के इस संकल्प को पूरा करके ही दिखायेंगे। जैसे ही मैंने यह कहा तो बाबा बिल्कुल गम्भीर हो गये, जैसे डीप विचारों में चले गये। मुझे देख भी रहे थे लेकिन देखते भी जैसे नहीं देख रहे थे। बाबा ने कहा—"बच्ची, कोई बड़ी बात नहीं है, होना ही है। यह भी माला तैयार हो ही जायेगी।" फिर बाबा ने यह बात सुनाकर कहा—मैं देखूँगा कि कौन-कौन बच्चे ऑफर करते हैं, फिर बाबा फाइनल करेगा। ऐसे कहते हुए यह दृश्य पूरा हो गया।

फिर बाबा ने कहा—बच्ची, और क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा—समाचार तो एक ही है। सभी के दिल में यह इच्छा तो है कि अब इतना समय बीत गया, बाकी आगे कितना होगा! सभी को यह आता है कि—बस, बाबा और हम, और है ही क्या! बाबा ने कहा—"संकल्प तो दृढ़ है। लेकिन इस दृढ़ संकल्प को अब सील लगानी है। जैसे गवर्मेन्ट किसी चीज़ को फाइनल सील कर देती है तो कोई खोल नहीं सकता है। ऐसे बाबा ने कहा—दृढ़ संकल्प का ठप्पा तो लगाते हो लेकिन उसे आलमाइटी गवर्मेन्ट की सील लगा दो जो एकदम ५ हजार वर्ष के बाद खुले। इतनी पक्की सील हो तब ही प्रैक्टिकल होगा। अभी संकल्प तक है, यह तो ठीक है। लेकिन यह कर्म में तब आयेगा जब इस दृढ़ संकल्प को सील लगायेंगे।" फिर बाबा ने कहा—"इसके लिए सभी बच्चे यही याद रखें कि मुझे सहज स्वभाव, सरल स्वभाव और निर्माण स्वभाव वाला बनना है। अगर यह स्वभाव धारण किया तो फिर यह प्रैक्टिकल में आ सकता है। अगर इसमें से किसी की भी कमी है तो दृढ़ संकल्प केवल संकल्प तक रह जाता है, कभी वाणी तक भी आ

जाता है। लेकिन संकल्प, वाणी और कर्म तीनों में एकरस रहे—इसके लिए स्वभाव बहुत सहज, सरल और निर्माण बनाओ। फिर कोई मुश्किल नहीं है।" फिर बाबा ने कहा—अच्छा, चलो अभी तुमको एक दृश्य दिखाता हूँ।

एक हाल में कर्टेन (पर्दा) था। वह कर्टेन हमारे जाते ही खुला। उसमें बडी वन्डरफुल सभा थी और एक बैनर लगा था जिसमें लिखत थी—स्वराज्य सभा। उसमें देखा कि एक कुर्सी पर कोई बहन बैठी थी। उसकी भृकुटि में आत्मा से चारों ओर किरणें निकल रही थीं और वह बिन्दी (आत्मा) बहुत चमक रही थी। वह जिस कुर्सी पर बैठी थी, उस पर लिखा था—आत्मा राजा। फिर थोड़ी देर बाद आर्डर से कर्मेन्द्रयां वहाँ पहुँच गईं और कर्मेन्द्रियों की जैसे दरबार लग गई। मन, बुद्धि, आंख, नाक, कान आदि—यह अलग-अलग कर्मेन्द्रियां दरबार में दिख रही थीं। थोड़े समय के बाद आत्मा राजा ने बोला—हे सहयोगी कार्यकारी ! सुनाओ, क्या हालचाल है? जैसे राजा अपनी सभा में पूछता है। तो मन, बुद्धि, आंख, नाक आदि सबसे आत्मा राजा पूछ रहे थे। बाबा ने इसका रहस्य सुनाते हुए कहा—"ऐसे स्वराज्य-अधिकारी बनकर अपने कार्यकर्त्ताओं कर्मेन्द्रियों से सिर्फ रात्रि में समाचार नहीं पूछना है, लेकिन मैं आत्मा राजा हूँ—इस सीट पर बैठकर फिर सहयोगी कार्यकारी कर्मेन्दियों से कार्य करो और कराओ। इस स्मृति के समर्थी की कुर्सी पर बैठकर राजा बनकर के बीच-बीच में इन सहयोगी कार्यकर्त्ताओं से हालचाल लो और आर्डर करो। तो इस स्वराज्य के नशे में हद के सब नशे खत्म हो जायेंगे और यह बेहद का नशा हर कार्य में पद्म गुणा सफलता दिलायेगा।"

फिर बाबा ने कहा—"बच्ची, जैसे बाबा बच्चों का आज्ञाकारी है, ऐसे बच्चे भी बाप के हर संकल्प में आज्ञाकारी बनें। इसके लिए बाबा बच्चों को एक सौगात देते हैं।" वह सौगात थी—कंगन। कंगन भी बहुत वन्डरफुल नया था। सोने का कंगन था और उसके बीच में बहुत महीन बिन्दी-सा हीरा चमक रहा था। उस हीरे से ८ रंग की लाइट निकलकर सारे कंगन को चमका रही थी। तो बाबा ने कहा—"यह ८ रंग की लाइट है अष्ट शक्तियों की लाइट और यह जो हीरा है, यह है श्रेष्ठ आत्मा, हीरो एक्टर, श्रेष्ठ पार्टधारी आत्मा की

निशानी और हर संकल्प, हर सेकेण्ड आज्ञाकारी बनने का यह कंगन है। एक संकल्प में भी आज्ञा मिस न हो। हर संकल्प, हर सेकेण्ड में यह स्मृति रखो कि मैं आज्ञाकारी आत्मा, श्रेष्ठ आत्मा हूँ। यही संकल्प बुद्धि में धारण करो तो माला जल्दी बन जायेगी। २५ तो क्या १०८ भी बन जायेंगी। लेकिन अभी कंगन फिट नहीं है। इसलिए आज यह आज्ञाकारी बनने का कंगन बापदादा सौगात में दे रहे हैं। इन अष्ट शक्तियों द्वारा सदा आज्ञाकारी रहने के संकल्प को बल मिलता रहेगा।" ऐसे कहते बाबा ने सभी को याद-प्यार देते और लेते मैं साकार वतन में पहुँच गई। ओम् शान्ति।

२२.१०.९०

निश्चय, नशा और निशाना–तीनों में फुल मार्क्स लो

(युगलों की भट्ठी में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आप सभी का याद-प्यार लेते हुए हम बाबा के पास पहुँची। जितना ही आप सबने दिल से बाबा के प्रति याद-प्यार दिया, उससे ज्यादा बापदादा ने आप सबके प्रति याद-प्यार दी। लेकिन आज के दिन का दृश्य न्यारा था। आज जैसे ही मैं बाबा के सामने पहुँची तो देखा कि बाबा बैठे हुए थे और बाबा के मस्तक से तथा दोनों नयनों से तीन लाइट्स दूर से ही हमारी तरफ आ रही थी। उन्हीं तीन लाइट्स के अन्दर जैसे रास्ता था रास्ते के उसी लाइट के रास्ते के अन्दर मैं जा रही हूँ–ऐसे अनुभव हो रहा था। जैसे ही मैं बाबा के समीप पहुँची तो बाबा ने दृष्टि देते हुए कहा–आओ मेरे शान्ति और शक्ति-स्वरूप बच्चे, आओ। मैं तो मुस्करा रही थी। तो बाबा बोले–बाबा ने कहा–"बच्ची, तुमने देखा, बाबा क्या कर रहा था? मैं तो मुस्करा रही थी। तो बाबा बोले–"बाबा बच्चों को और सारे विश्व की आत्माओं को नयनों

द्वारा शान्ति और मस्तक की लाइट द्वारा शक्ति दे रहे हैं। क्योंकि वर्तमान समय के अनुसार सभी को शान्ति भी चाहिए और 'शक्ति भी चाहिए। इसलिए बाबा ने दिखाया—कैसे बाबा के मस्तक से जो लाइट निकल रही थी, वह शक्तिशाली थी और नयनों की लाइट शान्ति की थी !"

फिर बाबा ने पूछा—"आप बच्चे इस समय विशेष किस कार्य पर हो ? आजकल क्या कर रहे हो ?" मैंने कहा—बाबा, इस समय तो मधुबन में भट्ठी और मीटिंग चल रही है। लेकिन बाबा का स्थूल भाव नहीं था। तो मैंने कहा—बाबा, हम भी आप जैसे ही कर रहे हैं। क्योंकि बाबा को तो फालो करने वाले हम बच्चे ही हैं, जो बाबा का कार्य वही हमारा कार्य।" तो बाबा ने मुस्कराया और कहा—"कार्य तो सभी बच्चे कर रहे हैं, लेकिन.....। जैसे कोई बिजनेसमैन वा आफीसर होते हैं तो उनकी सीट मुकर्र होती है। यदि वे सदा ही सीट पर नहीं बैठते, आना-जाना करते हैं तो वह अपना कार्य पूरा नहीं कर सकते। इसी रीति बच्चे कार्य तो कर रहे हैं लेकिन सदा सीट पर सेट नहीं हैं, बीच-बीच में चक्कर काटते हैं। चक्कर काटने के कारण लिंक टूट जाता है। अभी उस लिंक को तोड़ना नहीं है। यह निरन्तर हो जाए, अन्तर न आये—इसके अभ्यास में और अन्डरलाइन करनी है।"

फिर बाबा ने पूछा—अच्छा, आपके संसार का क्या हालचाल है ? तो मैंने कहा—बाबा, अभी मीटिंग और भट्ठी दोनों चल रही हैं। बाबा ने कहा—"भट्ठी में जो बच्चे आये हैं, बाबा उनके निश्चय को देखकर बहुत खुश हैं। सभी बच्चे मैजारिटी निश्चय में पास हैं। तीन स्टेज वाले मेरे बच्चे हैं। पहली स्टेज है निश्चबुद्धि, जिसमें सब पास हैं। दूसरी स्टेज है नशा और तीसरी स्टेज है निशाना। निश्चय में तो फुल पास हैं लेकिन उसी निश्चय का प्रैक्टिकल नशा चेहरे और चलन से स्वयं को और दूसरों को दिखाई दे—इसमें ७५% बच्चे ठीक हैं, यह भी अच्छी रिजल्ट है। लेकिन निशाने में ४०% बच्चे पास हैं, बाकी पुरुषार्थी हैं। निशाना अर्थात् एक बाबा से बुद्धि ऐसे लगी हुई हो जैसे बाबा कहते—फाँसी पर बुद्धि लटकी हुई है। जैसे ही संकल्प करो, निशाना लग जाए अर्थात् उसी स्थिति में स्थित हो जाओ—इसमें अभी ४०% बच्चे

पास हैं।" फिर बाबा ने कहा—"अच्छा, अभी बाबा क्या निशाना चाहते हैं? चलो, तुम्हें एक दृश्य दिखाता हूँ।"

बाबा हमें एक हाल में ले चले। उस हाल में एक बहुत बड़ा सर्कल था। वह सर्कल ऐसे बना हुआ था जो आमने-सामने एक-दो को देख सकते थे। दो लाइनों में—एक तरफ सभी का फरिश्ता रूप था, जो कमल के आसन पर था और दूसरे तरफ साकारी रूप था। इस सर्कल में देश-विदेश के चारों ओर के बहुत से ब्राह्मण थे। बाबा ने सभी को इमर्ज किया। फिर बाबा ने कहा—बच्ची, मेरे साथ सर्कल के बीच में चलो। बाबा बीच में सभी को दृष्टि दे रहे थे। कोई-कोई बच्चे बाबा की दृष्टि से बाबा के संकल्प को कैच कर रहे थे और कोई-कोई पूरा कैच नहीं कर रहे थे। साकारी और आकारी शरीर के बीच में मस्तक के ऊपर से एक लाइट का रास्ता था, बाबा जब दृष्टि देते थे तो कोई-कोई आत्मा साकारी शरीर से लाइट के रास्ते से जाते आकारी शरीर में चमकने लगती थी। लेकिन कोई-कोई समझ नहीं पा रहे थे कि बाबा हमसे क्या चाहते हैं! बाबा जो संकल्प की भाषा से कह रहे थे वह थोड़े बच्चे कैच कर सके। जिन्होंने कैच किया वे तो अशरीरी होकर फरिश्ते रूप में, लाइट-माइट के रूप में चमक रहे थे, उनका साकारी स्वरूप जैसे गायब था।

सर्कल पूरा होते ही बाबा ने कहा—बच्ची, देखा? मैंने कहा—बाबा, यह तो बहुत थोड़े निकले। बाबा ने कहा—"इसी को निशाना कहते हैं। सेकेण्ड में साकारी शरीर से निकलकर आकारी हो जाएं। संकल्प किया कि मैं फरिश्ता हूँ—तो फरिश्ते रूप में चले जाएं। इसी को बाबा निशाना कहते हैं। यह निशाना सेकेण्ड में हो और बाबा के संकल्प को भी कैच करे।" बाबा ने कहा—"कमल-पुष्प भी इसीलिए दिखाया है। जिसको शरीर से सेकेण्ड में न्यारे और प्यारे होने का अभ्यास होगा वही सेकेण्ड में अशरीरी बन सकते हैं। अर्थात् जो सारा दिन कमल-पुष्प की स्थिति में स्थित होंगे वही सेकेण्ड में अशरीरी बन सकते हैं। ऐसे निशाने वाले बच्चे अभी तक ४० प्रतिशत हैं।" फिर बाबा ने कहा—"अभी यह प्रैक्टिस करो। याद में बैठते हो तो मनन में चले जाते या रूहरिहान में चले जाते हो। लेकिन जिस समय अशरीरी

बनने चाहो उस समय सेकेण्ड में उस स्थिति में स्थित हो जाओ । जो संकल्प करो, सेकेण्ड में उसी में स्थित हो जाओ ।" इसी निशाने का अभ्यास करने के लिए बाबा ने यह तपस्या वर्ष दिया है । इसीलिए बाबा कहते हैं—अभी इस अभ्यास में सम्पन्न होना है । हैं नहीं, होना है । यह अन्डरलाइन करो—निशाने में हम सेकेण्ड में पास हों । लास्ट में निशाने वाले ही फुल पास होंगे ।"

फिर बाबा ने कहा—जो भी युगल आये हैं, परिवार में रहते न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास में चल रहे हैं, चलते रहेंगे । बाबा की आशा है सभी मेरे बच्चे दुनिया की स्टेज पर ऐसे फरिश्ते दिखाई दें, जो सब देखकर आश्चर्य खायें कि यह कहाँ से आये ! ऐसी सीन बाबा विश्व की स्टेज पर बच्चों की देखना चाहते हैं । बाबा की इस शुभ आशा को बाबा के यह युगल-मूर्त बच्चे अवश्य पूरी करेंगे । बाबा को एक बात की खुशी है—जो दुनिया असम्भव कहती है, उसको सम्भव करके दिखाने वाले मेरे विजयी बच्चे हैं । विजयी बच्चों को इसकी मुबारक है ! आगे के लिए बाबा की इस शुभ आशा को भी यह बच्चे अवश्य पूर्ण करेंगे । इसकी भी बाबा ने मुबारक दी और सभी को कहा कि 'विजयी भव' रहेंगे । यह वरदान देते सभी को बाबा ने बहुत-बहुत याद-प्यार दिया । ओम् शान्ति ।

७.२.९१

योगी तो हो, अब प्रयोगी बनो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आप सभी भाई-बहनों का और विशेष प्यारी दादी जी का याद-प्यार लेकर आज अमृतवेले बाबा के पास गई तो जाते ही बाबा ने नयनों से और मुस्कराहट से स्वागत किया तथा मिलन मनाया । साथ-साथ बाबा बोले—आओ मेरे त्रि तख्त-नशीन बच्चे, आओ ! बाबा ने कहा—मेरे तख्त-नशीन बच्चे सदा ही स्वउन्नति और सेवा की उन्नति में लगे हुए हैं और

सदा ही लगे रहेंगे। उसके बाद बाबा ने कान्फ्रेन्स का समाचार पूछा। वैसे बाबा तो सब-कुछ देखते ही हैं फिर भी पूछते हैं। हमने समाचार सुनाया तो बाबा मुस्कराये और कहा—देखो बच्ची, दुनिया वाले तो हलचल में हैं। सोचते हैं—पता नहीं क्या होगा? (उन दिनों इराक ने कुवैत के ऊपर कब्जा कर लिया था। इस कारण इराक तथा अमरीका के साथ युद्ध चल रहा था। यह युद्ध खाड़ी युद्ध के नाम से मशहूर था) और तुम बच्चों ने हिम्मत रखकर कार्य किया तो अच्छा तो सदा होता ही है लेकिन और ही अच्छे ते अच्छा हो गया।"

बाबा ने कान्फ्रेन्स के पहले इशारा दिया था कि कान्फ्रेन्स करो लेकिन सिम्पल और ब्युटीफुल करो, एकस्ट्रा शो, एकस्ट्रा खर्चा मत करो। तो ऐसा ही हुआ। इस बार सभी बहुत ही नजदीक आये, सबको घर की फीलिंग आई। मैंने कहा—बाबा, इस बार सभी ने अपना अनुभव सुनाते यही कहा कि यह स्वर्ग है, स्वर्ग है। तो बाबा ने कहा—"पहले अच्छा है, अच्छा है कहते थे, अभी स्वर्ग तक आये हैं, फिर बाद में 'परमात्मा है, परमात्मा है'.....—यह कहेंगे। अभी जीवन्मुक्ति तक पहुँचे हैं, फिर जीवन्मुक्ति-दाता तक पहुँच जायेंगे। फिर बाबा ने कहा कि—"वो हैं चिंता में, कहीं ये वार वर्ल्ड-वार में बदली न हो जाए और तुम हो चिंता-मुक्त। तुम्हें तो युद्ध की स्मृति भी नहीं है। तुम जानते हो जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है, जो होने वाला है वह अच्छा ही होने वाला है। तुम्हारी तकदीर की लकीर में सब अच्छा लिखा हुआ है।" इसी रीति बाबा ने पहले समाचार पूछा फिर कहा कि—"बाबा भी खुश हैं। सभी बच्चों ने समय, संकल्प, समर्थी अनुसार सेवा की और इसकी रिजल्ट में अनेक आत्मायें समीप आईं और आगे भी समीप आती रहेंगी।"

फिर हमने कहा—बाबा, अभी तो तपस्या वर्ष शुरू होने वाला है। तपस्या वर्ष में सेवा के प्रति बाबा की क्या प्रेरणा है, यह सभी पूछते हैं? तो बाबा ने कहा—"बच्ची, बाबा ने तो इशारा दे दिया है कि तपस्या वर्ष में सेवा और स्वउन्नति—दोनों का बैलेन्स रखना है। अभी सेवा का तरफ ज्यादा है और स्वउन्नति का कम है। तपस्या वर्ष माना बैलेन्स।" स्व-उन्नति के प्रति बाबा ने कहा कि—सभी बच्चे जब से बाप के बने हैं तब से तपस्वी तो हैं ही, योगी

तू आत्मा हैं ही लेकिन इस तपस्या वर्ष में विशेष प्रयोगी बनना है । योग तो लगाते हो, योग ही आपकी जीवन है लेकिन योग से जो भी प्राप्तियां हैं उन एक-एक प्राप्तियों को प्रयोग करना है । एक-एक प्राप्ति का, गुण का, सम्बन्ध के अनुभव का, स्वरूप का, सेवा का अनुभव करो । जैसे आनंद-स्वरूप की स्थिति में बैठते तो हो लेकिन उस आनंद-स्वरूप से क्या सेवा हो सकती है—उसका प्रयोग करो । वातावरण में आनंद की अनुभूति फैल जाए । जिस भी गुण के स्वरूप में स्थित हों, उसका वैसा ही वातावरण बने । जैसे वातावरण में कोई भी खुशबू फैलती है तो पता पड़ता है, ऐसे एक-एक गुण का प्रयोग करो ।"

बाबा ने कहा—"लाइट तो बने हो लेकिन अब लाइट-हाउस बनकर चारों ओर लाइट फैलानी है । लाइट-हाउस लाइट द्वारा दूसरों की सेवा करता है । तो तपस्या वर्ष में अभी यह सेवा करो अर्थात् लाइट की किरणें फैलाओ । जैसे साइंस वाले इन्वेन्शन करते हैं और इस इन्वेन्शन द्वारा क्या लाभ हो रहा है—वह भी देखते हैं । साइंस की यही विशेषता है कि साइंस प्रत्यक्षफल दिखाती है । इसीलिए साइंस का प्रभाव पड़ता है । तो ऐसे ही साइलेन्स का प्रभाव दिखाओ । तपस्या माना प्रयोगशाला । तो इस प्रयोगशाला में आप लोग यह अनुभव डीप (गहन) करो कि आपका प्रभाव कहाँ तक, कितने समय तक पड़ता है । प्रकृति के ऊपर भी इसका टेस्ट (Test) करो । तीसरा, बाबा ने कहा—"तपस्या माना अभी तक जो भी छोटे-मोटे अंश-मात्र भी संस्कार हैं उन्हें बदली करो । आपके संस्कार -परिवर्तन से ही संसार बदलना है । तो आप ब्राह्मणों का काम है—पहले इस तपस्या की अग्नि में अपने रहे हुए अंश-मात्र भी जो पुराने संस्कार हैं उन्हें खत्म करके बाप समान संस्कार बनाना । तो इस संस्कार-परिवर्तन से नये संस्कार और नया संसार बनेगा ।

चौथा, कई ब्राह्मण सोचते हैं कि सेवा नहीं होगी तो हम फ्री हो जायेंगे । हर मास क्या करेंगे ? क्या तपस्या ही तपस्या करेंगे ? तो बाबा ने कहा—"इस तपस्या वर्ष में आपस में हर सप्ताह गेट टूगेदर (Get-together; स्नेह-मिलन) करो । जैसे वी.आई.पीज का करते हो ऐसे ब्राह्मण आपस में स्नेह-मिलन करें

और किसी न किसी नई विधि से क्लास हो, रूहरिहान हो। जो एक रविवार को करो वह दूसरे रविवार को चेंज कर दो। जो भी प्रयोग करने से प्रैक्टिकल अनुभव हों उस पर ही रूहरिहान चले। कोई नई टापिक पर हर सप्ताह के लिए सभी को होम-वर्क मिले। इससे सभी में नवीनता के कारण उमंग-उत्साह बना रहेगा।" फिर बाबा ने सेवा के बारे में कहा कि—"इस वर्ष बड़े फंक्शन नहीं करने हैं। जिसमें बहुत ज्यादा बिजी हो जाते हो, वह नहीं करो। वर्गीकरण की रीति से भी बहुत समय सेवायें की, वह भी नहीं करो। लेकिन जो भी आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आये हैं उन्हें समीप लाकर अनुभूति कराओ। इतना समीप लाओ जो उनको माइक बनाओ और आप माइट बनो। अभी ऐसे माइक तैयार करो। आप लोग बैकबोन बनो, वो प्रैक्टिकल स्टेज पर आयें। ऐसे सम्पर्क-सम्बन्ध में अभी तक जो भी आये हैं उनकी लिस्ट तो आपके पास है ही। अब तक टाइम न मिलने से उनकी पीठ नहीं कर सकते थे। अब बड़े फंक्शन न होने से टाइम बचेगा, इसमें उन्हें विशेष समीप लाकर प्रेरणा दो और उनसे सेवा कराओ"। दूसरा, बाबा ने कहा कि—" ऐसी कई संस्थायें होती हैं, फंक्शन वा कान्फ्रेन्स होती हैं—तो उन्हों की बनी बनाई स्टेज पर पार्ट बजाओ। आप अपनी स्टेज तैयार नहीं करो, सिर्फ आप अपनी स्व की स्टेज बनाओ। अपने संकल्प की शक्ति से आह्वान करो। जितना-जितना आप माइट बनेंगे उतना आपकी बुद्धि एक्सटर्नल (बाह्यमुखता) में नहीं जायेगी, इन्टरनल पावर में रहेगी। फिर अपनी स्टेज पर स्थित होकर उन्हों की स्टेज पर जायेंगे तो उन्हें और भी ज्यादा लाभ प्राप्त होगा।" इस प्रकार बाबा ने सेवा के लिए डायरेक्शन दिये।

फिर आज दादियों ने खास याद-प्यार दिया था। कई सोचते हैं—दोनों ही दादियां इक्ट्ठे ही क्यों बीमार हुई हैं! तो बाबा ने कहा—"हिसाब-किताब तो चुक्तू होना ही है। लेकिन दोनों एक साथ जो बीमार हुई हैं—इसमें भी कई राज़ हैं। दोनों ही मूर्त्तियां बन गई हैं। ऐसे तो टाइम नहीं मिलता है लेकिन यह भी साक्षात्कारमूर्त्त बनने का टाइम मिला है। अभी जो वी.आई.पीज आये वे सभी साक्षात मूर्त्ति के रूप में साक्षात्कार करके गये। ड्रामानुसार

हिसाब-किताब तो चुक्तू हो ही रहा है लेकिन बाबा ड्रामा को देखते हर्षित होकर बता रहे थे कि—"यह भी एक न्यारा मिलन रहा। दादियों के एक सेकेण्ड की दृष्टि की छाप भाषण वालों से भी ज्यादा पड़ी। वैसे तो दादियां मौन नहीं रख सकती। तो यह भी मौन में रहने का चांस मिला है।" तो बाबा ने सुनाया कि इनकी एक सेकेण्ड की दृष्टि जो काम कर सकती है, वह एक घण्टे का भाषण नहीं कर सकता। हिसाब-किताब चुक्तू के साथ-साथ जो इनकी दृष्टि ने सेवा की है उसका सभी वर्णन करेंगे। तपस्या वर्ष शुरू होने के पहले ड्रामा ने इन्हों को तपस्वी-मूर्त का सैम्पल बनाया है। यह एकदम उपराम होकर सेवा भी कर रही हैं, उपराम भी हैं। सेवा की जिम्मेवारी होते उपराम वृत्ति है। तो जो सोचते हैं कि तपस्या वर्ष में इतनी सेवा होते हुए न्यारे-प्यारे कैसे रहेंगे, उनके लिए यह सैम्पल हैं। सेवा भी हो रही है, बैकबोन भी बनी हैं लेकिन न्यारी और प्यारी भी हैं। ऐसे ही हल्के रहकर सेवा कर सकते हो। कोई भी यह कह नहीं सकता कि इतनी सेवा होते हम उपराम वा न्यारे-प्यारे कैसे रहें।" फिर बाबा ने सभी दादियों को, सभी देश-विदेश के भाई-बहनों को बहुत-बहुत याद-प्यार दी। बाबा ने कहा—सभी बच्चों ने बहुत-बहुत अच्छा हीरे तुल्य पार्ट बजाया। सभी ने दादियों को बैकबोन रखा और स्टेज पर आकर बहुत-बहुत-बहुत अच्छा पार्ट बजाया। इसलिए सभी को हीरे तुल्य मुबारक हो। जो भी निमित्त बने, फारेन के चाहे इन्डिया के—सभी को मुबारक दी और विशेष चन्द्रमणि दादी को बाबा ने बहुत-बहुत प्यार किया।

२०.२.९१

योग और प्रयोग का बैलेन्स रखो

(मधुबन-निवासियों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज विशेष आप सबकी याद लेकर बाबा के पास गई तो बाबा ने पूछा—बच्ची, आज कैसे आई हो ? हमने कहा—बाबा, आज और भी कई काम थे लेकिन और कार्य के साथ-साथ मधुबन निवासियों की याद लाई हूँ। तो बाबा ने कहा कि—"वैसे तो मेरे सभी बच्चे भाग्यवान हैं। क्योंकि भाग्यविधाता बाप के बच्चे हैं, इसीलिए सभी भाग्यवान हैं। लेकिन मधुबन वाले जो हैं इन्हों का भाग्य में भी विशेष भाग्य है।" मैं मुस्करा रही थी। बाबा ने कहा—मधुबन निवासियों के कितने प्रकार के भाग्य हैं, वो समझते हैं ? बाबा ने कहा—"मधुबन वालों का एकस्ट्रा (Extra) भाग्य क्या है ? मधुबन वालों का हार्ड-वर्क है लेकिन जिम्मेवारी का नहीं। बाबा ने कहा—"वैसे आप लोग भी सेन्टर पर रहती हो लेकिन आप लोगों को जिम्मेवारी है। निमित्त तो बाबा है ही लेकिन फिर भी आप लोगों को जिम्मेवारी देखनी पड़ती है। मदोगरी आई, नहीं आई—देखना पड़ता है। लेकिन मधुबन वालों को तो बना-बनाया मिलता है। दूसरा, क्लास के स्टूडेन्ट कम हुए, कोर्स वाले नहीं आए.. कितनी जिम्मेवारी होती है। लेकिन मधुबन वालों को तो बने बनाये जिज्ञासु मिल जाते हैं। सबकी अपनी-अपनी ड्युटी है। कोई जिम्मेवारी की ड्युटी नहीं है लेकिन हार्ड-वर्क है।"

इसी रीति बाबा ने कहा—"बाहर के वायुमण्डल को परिवर्तन कर आप लोगों को वहां का (सेंटर का) वायुमण्डल बनाना पड़ता है। लेकिन यहां मैजारिटी ब्राह्मण रहते हैं, योग के प्रोग्राम चलते रहते हैं। तो यहां वातावरण बनाना नहीं पड़ता है लेकिन बने हुए वातावरण में खुद को और ही सहयोग मिलता है। क्योंकि बड़ी-बड़ी महान् आत्माएं भी यहां ही रहती हैं, बाबा भी यहां ही आता है और ब्रह्मा बाबा ने इस भूमि को तपस्या का वरदान भी दिया है। तो यहां बने- बनाये वायुमण्डल का भाग्य मिलता है और वहां आप लोगों

को ये वायुमण्डल बनाने का अटेन्शन देना पड़ता है।" तो बाबा ने कहा—"ये भाग्य में भाग्य हुआ ना। तो मधुबन वालों के भाग्य को देखकर बाबा बहुत हर्षित होते हैं। बच्चे भी हर्षित होते हैं लेकिन नम्बरवार।"

फिर बाबा ने पूछा—अभी तपस्या वर्ष में मधुबन में क्या-क्या प्रोग्राम चल रहा है? हमने सुनाया—योग का प्रोग्राम बना है, हरेक ने अपना-अपना टाइम फिक्स किया है। तो बाबा ने कहा—"योगी तो हैं, योग तो प्यार से लगाते हैं, अपने उमंग-उत्साह से बैठते हैं। लेकिन बाबा अभी भी बैलेन्स देखना चाहता है। जितना योग लगाने से प्यार है, उतना प्रयोग करने से प्यार नहीं है। बैलेन्स नहीं है। तो प्रयोग और योग का बैलेन्स बाबा चाहते हैं। दूसरा, बाबा ने कहा—"मधुबन से प्यार है, बाबा से भी जिगरी प्यार है। लेकिन बाबा बैलेन्स में देखना चाहता है। बाबा से प्यार है लेकिन उस प्यार के पीछे दृढ़ संकल्प से अपनी कमी या जो भी संस्कार है उसे न्योछावर करने में मात्रा कम है।" तीसरा, बाबा ने कहा—"रमणीक तो हैं लेकिन रमणीकता और गंभीरता—इसका बैलेन्स नहीं है। रमणीकता में जल्दी आ जायेंगे लेकिन एकदम उस समय गंभीर हो जायें, तो ये नहीं है। रमणीकता और गंभीरता की मात्रा समान नहीं है। बाबा ये दोनों की समान मात्रा देखना चाहते हैं।" बाबा ने पूछा—और क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा—बाबा, याद और प्यार ही लाई हूँ। फिर बाबा ने कहा—"मधुबन वाले खेल बहुत प्यार से करते हैं। उन्हें खेल बहुत पसन्द आता है। तो मैं सभी बच्चों को इमर्ज करता हूँ और एक खेल कराता हूँ।"

तो खेल में पहले एक ऊंची पहाड़ी थी। वहां पहाड़ी की चोटी पर बाबा बैठे थे। वैसे तो बाबा फरिश्ता रूप है ही लेकिन एकदम लाइट-माइट रूप से बाबा बैठे हुए थे और बाबा की दोनों आंखों से और भृकुटि से तीन लाइट निकल रही थीं और ये किरणें थोड़ा आगे आकर हाथ बन गई। उन किरणों के बीच में लिखा था—'पीस, प्योरिटी और प्रासपर्टी'। ये लाइट की तीन किरणें तीन वरदानी हाथ बन गये। पहाड़ी के नीचे सभी बच्चे थे। एक बहुत बड़े बगीचे में जैसे मेले में स्टाल लगते हैं, ऐसे भिन्न-भिन्न स्टाल बने हुए थे।

एक स्टाल में देखने की चीजें थीं, दूसरे स्टाल में सुनने की चीजें थीं, तीसरे स्टाल में एक ऐसी मशीन थी—उससे जो बोलो उसका उत्तर देती थी। चौथा स्टाल घूमने-फिरने का स्थान बगीचे जैसा था। सभी का लक्ष्य वही था कि बाबा के पास पहुँचें। लेकिन जब ये चार स्टाल देखे तो अपने लक्ष्य को भूल गये और कोई सुनने में चला गया, कोई देखने में चला गया, कोई बोलने में और कोई घूमने में चला गया। घूमते हुए वे जो सोच रहे थे वह कम्प्यूटर समान सबके मस्तक पर आ रहा था।

इस प्रकार तीन चार प्रकार के सोच चल रहे थे। किसी का सोच चल रहा था कि ऊपर तो जाना ही है, बाबा के पास पहुँचना ही है, सभी तो इक्ट्ठे पहुंचेंगे ही नहीं, नम्बरवार पहुंचेंगे, तो थोड़ा देखकर के फिर पहुंच जायेंगे। किसी का विचार ये चला कि ये अनुभव करना चाहिए, ये भी अनुभव करेंगे, फिर वो भी अनुभव कर लेंगे, अनुभव जरूर करना चाहिए। किसी का ये विचार चला—बाबा से मिलना, यह तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, अपना ही बाबा है, थोड़ी देरी से गये तो क्या हुआ। चौथे का ये विचार चला—स्पीड से आगे बढ़ेंगे और पहुंच ही जायेंगे। ये विचार कम्प्यूटर के समान सबके मस्तक पर आ रहे थे। इसके बाद सभी नम्बरवार ऊपर पहुँचे। बाबा ने सबसे पूछा—बच्चो, क्या-क्या देखा ? तो बच्चों ने सुनाया—बाबा, देखने वाली सीन बहुत अच्छी थी। किसी ने कहा—बाबा, जो बातें सुनीं वो बड़ी अच्छी थीं। हरेक ने अपना-अपना बाबा को सुनाया। बाबा मुस्करा रहे थे।

फिर बाबा ने कहा—"मैंने ये खेल क्यों दिखाया ? मैंने ये खेल इसीलिए दिखाया कि तपस्या माना बेहद का वैराग। तो बेहद के वैराग में अभी भी किसीको सुनने की, किसीको बोलने की, किसी को देखने की, किसी को चक्कर लगाने की आदत है। तो ये आदत तपस्या पावरफुल नहीं करने देती। ये साइड सीन्स अपनी तरफ खींचती हैं। साइड सीन में फंसने के कारण अपने लक्ष्य तक पहुंचने में लेट हो गये।" तो बाबा ने कहा—तपस्या माना ऐसे आकर्षण के जो भी संस्कार हों—चाहे बोलने के, चाहे देखने के या घूमने के—ये जो चारों आकर्षण हैं संस्कार में समाए हुए, इनको खत्म करो। जब

तक इनको खत्म नहीं किया है और इन किनारों को सहारा बनाया तो बाबा का सहारा सदैव नहीं ले सकेंगे।" जैसे साइड सीन को सहारा बनाया तो बाबा के पास पहुंचने में लेट हो गये। बहुत कम थे जिन्होंने साइड सीन को सहारा नहीं बनाया और बाबा के पास पहुंच गये।"

बाबा ने कहा—"बाबा ये रिजल्ट दिखाता है कि अभी भी इन बातों की आकर्षण समाप्त करो। जब तक यह संस्कार आपने समाप्त नहीं किया है—तो जो लक्ष्य है 'बाबा के समान' बनने का, सम्पूर्ण बनने का या सम्पन्न बनने का—उस लक्ष्य में आप समय पर नहीं पहुंचेगे, नम्बरवन नहीं पहुंचेगे, लाइन में आ जायेंगे।" तो बाबा ने कहा कि—"यदि बैलेन्स होगा तो ये साइड सीन की आकर्षण या संस्कारों की आकर्षण समाप्त हो जायेगी और बाबा के तरफ पहुंच जायेंगे, बाबा द्वारा दिये गये लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। बाबा अब ये तपस्या चाहता है। अभी थोड़ा-थोड़ा संस्कार का जो किनारा पकड़ा हुआ है उस किनारे को छोड़ो।" बाबा ने कहा कि—"मधुबन वालों की जिम्मेवारी है। मधुबन को तो कहते ही हैं लाइट-हाउस। तो मधुबन विश्व का लाइट-हाउस है। इसलिए आप इन सहारों से किनारा करो तो विश्व के सहारे के निमित्त बनेंगे और बाबा के सहारे का भी अनुभव कर सकेंगे।" फिर बाबा ने कहा कि—" बाकी तो सब दिल से, उमंग-उत्साह से सेवा करते हैं और सेवा का प्रभाव ही दूसरों के ऊपर पड़ता है। सेवा के उमंग-उत्साह में मधुबन नम्बरवन है। इसी रीति से सभी बातों में नम्बरवन लो।"।

ओम् शान्ति।

२१.२.९१

फरिश्ता बनने के पहले मायाजीत, प्रकृतिजीत बनो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज डबल फॉरेनर्स का याद-प्यार लेकर हम बाबा के पास पहुँची तो जाते ही बाबा ने मुस्कराते हुए, मिलन मनाते हुए कहा—आओ मेरे विघ्न-विनाशक बच्चे, आओ।" बाबा मुस्करा रहे थे। बाबा ने कुछ कहा नहीं लेकिन बाबा के संकल्प और दृष्टि के इशारे से हमने देखा कि आप सभी को बाबा ने वतन में इमर्ज किया। डबल विदेशियों के साथ-साथ मधुबन निवासी भी थे और जो भी यहाँ हैं, वे सभी थे। बहुत बड़ा संगठन था। पहले कोई नहीं था लेकिन एक सेकेण्ड में बहुत बड़ा संगठन इमर्ज हुआ। वो संगठन बाबा से दूर था, एकदम समीप नहीं था। बाबा ने पूछा—बच्ची, क्या देख रही हो? मैंने कहा—ये तो सभी बहुत बड़े संगठन रूप में वतन में पहुँच रहे हैं। बाबा ने कहा—और ध्यान से देखो, क्या है? मैंने फिर और ध्यान से देखा लेकिन सिर्फ ब्राह्मण ही दिखाई दिये। बाबा ने फिर कहा—और ध्यान से देखो। मैंने फिर देखा तो एक बहुत बड़ा गेट था और गेट के दो इस तरफ, दो उस तरफ और एक बीच में—ऐसे लाइट के आकार में, (लेकिन चमकती हुई लाइट के नहीं थे, राख जैसा सफेद कलर था। फरिश्तों का रूप तो हजारों चन्द्रमा के समान चमकता हुआ होता है। तो यह ऐसे नहीं थे लेकिन राख जैसे कलर के थे) आकृतियां खड़ी हुई थीं। मैंने देखा—उस गेट से सभी ब्राह्मण नम्बरवार आ रहे थे। जैसे ही ब्राह्मणों ने गेट से क्रास किया तो वह पांच जो थे, जैसे नमन के रूप में झुक कर सभी का स्वागत कर रहे थे। मैं देख रही थी कि ये क्या है? बाबा ने कहा—बच्ची, ध्यान से देख रही हो? फिर लाइट के शब्दों में एक बैनर के रूप में दृश्य सामने आया कि 'ये माया-जीत हैं'। माया अर्थात् पांच विकार जैसे सरेन्डर के रूप में स्वागत भी कर रहे थे और नमन भी कर रहे थे।

फिर थोड़ा आगे बढ़े तो देखा—पांच और थे, उन्हों के हाथ में मालाएं थीं। थोड़ी ऊंची स्टेज बनी थी, ये पांच उस पर माला लिए हुए खड़े थे। जैसे बहुत बड़ा राजा आता है तो सर्वेन्ट्स या दरबारी कैसे झुकते हैं, ऐसे ही जब सब ब्राह्मण आगे बढ़ रहे थे तो वे पांच झुक कर नमन कर रहे थे और ये पांच उनको नम्बरवार माला डाल रहे थे। सभी को माला पड़ी और फिर सभी बाबा के आगे आ रहे थे। तो फिर प्रश्न उठा—ये माला लिए हुए पांच कौन थे? फिर वह लाइट का बैनर आया। उसमें लिखा था—ये हैं प्रकृतिजीत। वो मायाजीत और ये प्रकृतिजीत और वह जो माला थी, वह भी सफलता की माला थी। तो हरेक ब्राह्मण को प्रकृति सफलता की माला डाल रही थी। जब सभी बाबा के सामने आये तो जैसे बाबा बांहें पसार कर खड़े होते हैं—ऐसे खड़े थे और सभी बाबा की बांहों में आ गये। यह दृश्य ऐसे बन गया जैसे अंगूर का गुच्छा होता है। इस प्रकार सब बाबा के आसपास गुच्छे के रूप में आ गए। यह सीन बहुत सुन्दर लग रहा था। फिर देखा, जो बाबा की बांहों में समाए हुए थे वो फरिश्ते रूप में थे। जैसे-जैसे बाबा उनको दृष्टि देते गये वे फरिश्ता रूप छोड़कर परमधाम में शिव-बाबा के आसपास बिन्दी रूप में आत्माओं का गुच्छा बन गया। इस प्रकार पहले स्वागत हुई माया से, फिर प्रकृति से, फिर फरिश्ते रूप में बाबा की बांहों में, फिर बाबा के आसपास परमधाम में आत्माओं का बिन्दु रूप में गुच्छा जैसे बन गया।

फिर बाबा ने कहा—"बच्ची ! देखा, ये है तुम्हारी सम्पूर्ण अंतिम स्टेज।" लेकिन अभी माया कभी-कभी मिक्की माउस के रूप में, कभी बिल्ली, कभी कुत्ता, कभी हिरण बनकर आती है, कभी शेर के रूप में आती है। तो ये माया मिक्की माउस के जैसे खेल कराने बीच-बीच में आती है। लेकिन अंत में ये माया तुम्हारा स्वागत करेगी और तुम्हारे आगे सरेन्डर होगी और तुम मायाजीत और प्रकृतिजीत बनेंगे। पांच विकार माया के, पांच तत्व प्रकृति के, जब इन १० के ऊपर जीत होगी तब बाबा की बांहों में फरिश्ते होकर समा जायेंगे। फिर परमधाम में जायेंगे तो भी बाबा के समीप होंगे, बाबा के साथ फरिश्ते रूप में भी साथ होंगे और परमधाम घर में भी बाबा के समीप होंगे।"

तो यह था दृश्य का अर्थ।

फिर बाबा ने कहा—"सभी डबल विदेशी बच्चों की एक विशेषता पर बाबा बलिहार जाते हैं। बच्चे बाबा पर और बाबा बच्चों की विशेषता पर बलिहार जाते हैं।" तो बाबा ने पूछा—तुम जानती हो, कौनसी ऐसी विशेषता है डबल विदेशी बच्चों की कि जिस पर बाबा बलिहार जाते हैं? बाबा ने सुनाया—"बच्चों ने हिम्मत बहुत अच्छी रखी है। बच्चों की हिम्मत कम नहीं है। इसलिए हिम्मत की विशेषता से, चाहे कुछ भी भिन्नता है, लेकिन हिम्मत रखकर भिन्नता को मिटाकर एक परिवार बनकर एक मत पर एक हो गये हैं। इस हिम्मत पर बाबा भी बलिहार जाते हैं। और यही कहना कि बाबा का इस वर्ष विशेष डबल विदेशी बच्चों के प्रति एक ही शुभ आशा कहो या शुभ भावना कहो, शुभ संकल्प है। बाबा से सबको बहुत प्यार है और प्यार भी दिल का है, सच्चा है। लेकिन बाबा ने कहा—प्यार के बीच में माया कभी कभी अचल से थोड़ा अलबेला कर देती है। तो इस वर्ष में किसी भी प्रकार से, चाहे पढ़ाई में, चाहे बाबा के प्यार में, चाहे ब्राह्मण जीवन की मर्यादा में—तीनों ही बातों में अलबेलेपन को एकदम हमेशा के लिए खत्म करना है। ये अलबेलेपन की आहुति इस तपस्या वर्ष के लगन के अग्नि में डालनी है।" बाबा ने कहा—"प्यार है, प्यार के पीछे सब-कुछ कर सकते हैं। क्योंकि हिम्मत है। लेकिन माया अलबेलेपन के कारण आती है, अलबेलेपन के कारण ही और कई बातें सामने आती हैं। तो इस वर्ष सबको अलबेलेपन की आहुति देनी है।"

२१.३.९१

कोमल के बजाए कमाल करने वाले बनो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज आप सबका याद-प्यार लेते हुए बापदादा के पास पहुँची तो बापदादा दूर से ही मुस्कराते हुए नयनों की मुलाकात कर रहे थे। निमित्त हम थे लेकिन आप सभी भी हमारे में याद-प्यार के रूप में समाये हुए थे। तो बाबा ने नयनों से सभी का स्वागत किया और पूछा—बच्ची, आज विशेष क्या सन्देश लाई हो ? मैं मुस्कराने लगी तो बाबा ने कहा कि—"तुम आज विशेष, जो मेरे इस कल्प वृक्ष के बहुत ही सुन्दर कोमल और नरम-नरम हरे पत्ते हैं, उन्हों का सन्देश लाई हो ! देखो, जब वृक्ष में नये-नये पत्ते निकलते हैं तो वे बड़े सुन्दर और कोमल होते हैं। लेकिन इस मेरे कल्प वृक्ष के अन्दर जो नये पत्ते हैं, वे कोमल नहीं हैं। क्योंकि कोमल एक नरम की रीति से कहा जाता है और दूसरा, छोटी दिल वाले को भी कोमल कहते हैं। जो जल्दी में नरम और गरम हो जाते हैं, जिन्हें दिल में रोना आ जाता है—उसे कोमल कहते हैं।" तो बाबा ने कहा—"मेरे यह नये पत्ते कोमल नहीं हैं लेकिन कमाल करने वाले हैं। बाबा को भी जो नये बच्चे आते हैं उनके लिए बहुत प्यार है।" मैंने कहा—बाबा, उस दिन जब आप इनसे मिले थे तो इन्हें टोली नहीं मिली, मिस हो गया। किसी को याद नहीं आया।" तो बाबा ने कहा—"कोई बात नहीं, अगर भूल गया तो इसमें भी कोई भला होना होगा। इस भूल में क्या भला है। चलो, वह तुम्हें दिखाता हूँ।" इतने में बाबा ने कहा—यहाँ खड़े होकर दूर से तुमको साकार वतन की सीन दिखाता हूँ।

हम ऊपर वतन में खड़े थे और साकारी वतन का दृश्य नीचे बहुत अच्छा लग रहा था। नीचे एक ग्लोब दिखाई दे रहा था। उस ग्लोब में माउण्ट आबू एक बिन्दू के रूप में था जिस पर लाइट पड़ रही थी और माउण्ट आबू में पाण्डव भवन, उसमें ओम् शान्ति भवन दिखाई दे रहा था। बाबा ने हमें ओम् शान्ति भवन बड़ा करके दिखाया। जैसे यहाँ हम क्लास के रूप में सभी बैठे

हैं, ऐसे ही सभी को बैठे हुए देखा । ओम् शान्ति भवन के बाहर जो रिंग-रोड है, बाबा ने ऊपर से इशारा किया कि सभी बच्चे इस रिंग-रोड पर आ जाओ । हम ऊपर से देख रही थी, सीन बहुत अच्छी दिखाई दे रही थी । रिंग रोड पर बहुत से छोटे-छोटे विमान खड़े हुए थे, उनका शेप (आकार) मस्तक जैसा था, ऊपर मरगोल जैसे था । तो बाबा ने ऊपर से ही सभी को इशारा दिया कि—सभी एक-एक विमान में बैठ जाओ, नये बच्चे पहले बैठो । तो नये बच्चे विमान पर बैठे और स्टार्ट किया । उस विमान में साकार शरीर नहीं थे, आत्मा बैठे ड्राइव कर रही थी । संकल्प से स्टार्ट किया । सभी का विमान संकल्प से स्टार्ट तो हो गया लेकिन हरेक की स्पीड अलग-अलग थी । कोई तो बिना रुके, बिना मोड़े सीधा ऊपर आ रहे थे और कोई-कोई की स्पीड बीच में थोड़ी कम हुई, फिर तेज की और कोई की स्पीड बहुत ढीली थी । धीरे-धीरे सब अपनी स्पीड अनुसार ऊपर आकर पहुँचे । जो पहले आते गये वे आकर आकारी फरिश्ता होकर बाबा की बांहों में जैसे समा गये । धीरे-धीरे सभी आकर पहुँच गये । बाबा की बांहें बड़ी होती गई । सभी बहुत खुश थे, खुशी उनके चेहरे से दिखाई दे रही थी । तो बाबा ने पूछा—सभी बच्चों ने यह दिलखुश मिठाई खाई ? तो सभी ने कहा—हाँ बाबा !

फिर बाबा ने कहा—"अच्छा, देखो, बाबा ने तुम्हें विमान में बुलाकर दिलखुश मिठाई खिला दी । तो अभी हमेशा यह मिठाई खाना और बाबा की बांहों में समा जाना । जब भी कोई बात आये तो यह सीन इमर्ज करना कि मैं बाबा की बांहों में, दिल में समाई हूँ ।" पुराने बच्चे सभी नीचे थे । नये ऊपर आ गये थे । बाबा ने कहा—"बच्चे, इन्तजार कर रहे हैं । बच्चे सोच रहे हैं हमारा टर्न कब आयेगा ।" फिर बाबा ने चुटकी बजाई तो सभी विमान स्टार्ट करके जल्दी-जल्दी पहुँच गये । बाबा ने कहा—आज विशेष नयों का टर्न है, पुरानों को तो सिर्फ दृष्टि लेनी है । नये बच्चे लवलीन थे, पुरानों को देख ही नहीं रहे थे । पुराने सभी आटोमेटिकली अर्ध चन्द्रमा के रूप में खड़े हो गये । बाबा उन्हें बहुत मीठी-मीठी दृष्टि दे रहे थे । फिर यह सीन पूरी हो गई ।

फिर बाबा ने कहा—"बच्चे, डबल फारेनर्स जो हैं उनकी एक विशेषता बाबा को अच्छी भी लगती और कभी-कभी थोड़ा खेल भी करते हैं। इन्हों की विशेषता है कि जिसमें भी जायेंगे—पूरा जायेंगे, अधूरा नहीं। यदि ज्ञान के नशे में चढ़ेंगे तो फुल, दूसरे नशे में भी फुल। यह आधे में रहने वाले नहीं हैं, या तो इधर र. तो उधर। इसलिए जो भी ज्ञान-मार्ग में चलते हैं वह बहुत फास्ट जाते हैं। लक्ष्य यह होता है कि पाना है तो पूरा पाना है। थोड़े में खुश नहीं होते हैं। यह विशेषता बाबा को अच्छी लगती है। लेकिन जब उस तरफ जाते हैं तो भी फुल चले जाते हैं—यह देखकर बाबा को थोड़ा रहम आता है। फास्ट जाने की इच्छा रखते हैं, हिम्मत भी है, उमंग-उत्साह भी है। डबल विदेशी बच्चों की दूसरी विशेषता भी है जो छोटी-सी बात को महसूस जल्दी करते हैं। डोंट केयर (Don't care; अनदेखा) नहीं करते हैं। महसूसता की शक्ति अच्छी है। वर्णन भी करेंगे, छिपायेंगे नहीं—इसमें भी अच्छे हैं। लेकिन जो महसूस करते हैं उसको परिवर्तन करने की शक्ति थोड़ी कम है। वह अभी एकस्ट्रा बढ़नी चाहिए, फिर यह बिल्कुल ही फास्ट और फर्स्ट नंम्बर में आ सकते हैं। इसलिए डबल विदेशी बच्चों को कहना कि परिवर्तन-शक्ति को बाबा और भी अन्डरलाइन करके कहते हैं कि इसे बढ़ाओ।"

फिर बाबा ने मधुबन निवासियों को और दादियों को याद दिया। परदादी को भी बहुत प्यार दिया। दादियों प्रति कहा—मोहब्बत की मेहनत कर रही हैं, इसीलिए इन्हों को फील नहीं होता है। मोहब्बत की शक्ति मिल रही है। मधुबन निवासियों के लिए कहा कि—"इनको एकस्ट्रा लिफ्ट है। सबके दिल की दुआयें मिल रही हैं। दुआओं का स्टाक बहुत जमा होता है। जो भी भोजन खाता है, कारोबार देखता है उनके दिल से मधुबन निवासियों के लिए दुआयें निकलती हैं। दुआओं का स्टाक बहुत-बहुत जमा है।" (अंकल आंटी ने बापदादा को कमल का फूल भेजा था) बाबा ने कहा—कमल का फूल बाबा के पास पहुँचा। यह बच्चे तो हैं ही कमल लेकिन कमल के साथ अमल करने वाले भी हैं। यह एग्जाम्पल हैं। जो एग्जाम्पल बनता है वह एग्जाम (परीक्षा) में पास होता है। फिर बाबा ने सभी को बहुत-बहुत याद दी। ओम् शान्ति।

१६.५.९१

परिवर्तन और प्रवेशता की एक्सरसाइज़

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज आप सभी देश-विदेश के बच्चों का बाबा प्रति याद-प्यार लेते हुए वतन में पहुँची । तो बाबा बहुत ही शक्तिशाली दृष्टि देते हुए मुस्कराते हुए मिले और मिलते ही पूछा—बच्ची, तुम्हारी दुनिया का क्या हालचाल है ? मैंने कहा—बाबा, एक तरफ तो तपस्या चल रही है, दूसरे तरफ इलेक्शन का हंगामा चल रहा है । तो बाबा ने कहा—"तुम बच्चे तो कितने निश्चिंत हो ! उन्हे तो इलेक्शन और सलेक्शन (Election; चुनाव, Selection; चुने जाने) का फिक्र है लेकिन तुम्हें तो स्वयं भगवान् ने सलेक्ट (Select; चुन लिया) कर लिया । तुम्हें इस सलेक्शन के लिए कुछ करना पड़ा ? तुमने तो सिर्फ दिल से कहा 'मेरा बाबा' । तो इस एक ही दिल के शब्द से बाबा ने सेकेण्ड में आप बच्चों को चुन लिया अर्थात् सलेक्ट कर लिया । तो तुम्हारी सलेक्शन कितनी बढ़िया है ! भावी बन गई । कहते भी हैं—भावी टाली नहीं जाती । तो यह भगवान् के सलेक्शन की भावी बन गई जो हर कल्प रिपीट होती रहेगी । आपके दिल की भावना ने ड्रामा की भावी बना दी । तो कितना सरल हुआ !" हमने कहा कि बाबा हम तो ऐसे कर भी नहीं सकते जैसे यह लोग इलेक्शन में करते हैं । तो बाबा ने कहा कि—"तुम्हारी हिम्मत ऐसा नेता बनने की नहीं है और तुम यह कर भी नहीं सकते । इसलिए जिनमें वो हिम्मत नहीं है, रुचि नहीं है उन्हें ही बाबा ने सहज सलेक्ट कर लिया ।"

फिर बाबा ने पूछा—और क्या समाचार है ? मैंने कहा—बाबा, चारों ओर तपस्या चल रही है, हर एक अपने-अपने यथाशक्ति तपस्या में आगे बढ़ रहे हैं । तो मेरा यह शब्द बोलना और बाबा का बहुत ही रहस्ययुक्त मुस्कराना । मैं बाबा को देखती रही—बाबा के दिल में कुछ आ रहा था । मैंने कहा—बाबा, आप बहुत मुस्करा रहे हैं । तो बाबा ने कहा—"बच्चों ने लगन तो लगाई है लेकिन अग्नि नहीं लगी है । लगन अग्नि रूप बन जाये—जिसमें यह पुरानी

दुनिया स्वाहा हो जाए। तो लगन तो ठीक है लेकिन अभी अग्नि रूप अर्थात् ज्वाला रूप बनकर के इन आत्माओं को मुक्ति दिलाओ। जब आपकी लगन अग्नि रूप बनेगी तब इस अग्नि में यह सब स्वाहा होगा। इसके लिए कितनी तेज पावरफुल ज्वाला चाहिए– जिसमें सारी प्रकृति, आत्माओं के पाप कर्म सब परिवर्तन हों ! यह गायन है कि यज्ञ-कुण्ड से ज्वाला निकली और उसमें सारी पुरानी दुनिया परिवर्तन हो गई। तो परिवर्तन किस आग में होगा ? ते आग चाहिए ना ! तो आप लोग अभी लगन तक पहुँचे हो या अग्नि तक पहुँचे हो ?" मैंने कहा–दोनों ही हर एक में यथा शक्ति होंगे। बाबा ने कहा–"अब हर एक का ज्वाला रूप वतन तक पहुँचे, वह नहीं पहुँचा है। बाकी हर एक अपने वेस्टेज (Wastage;व्यर्थ) को बचा रहे हैं, इसलिए बाबा मुबारक देते हैं ! समय निकालने का अटेन्शन है, बैठने का अटेन्शन है। लेकिन अभी तपस्या अग्नि रूप चाहिए।"

फिर बाबा मुस्कराने लगे और कहा कि मेरे सामने सभी बच्चे आ रहे हैं–मैं उनकी रिजल्ट देख रहा हूँ और मुस्करा रहा हूँ। बाबा ने कहा–"अगर बच्चों को भाषण करने की स्टेज बड़ी मिले तो खुश होते हैं। हर एक समझता है कि मेरे को बड़ी स्टेज का चांस मिले। तो जैसे सेवा की बड़ी, ऊंची स्टेज में जाने का प्रयत्न करते हैं, कोशिश करते हैं, सोचते हैं कि हमें भी चांस हो तो हम कर सकते हैं। ऐसे ही याद की भी इतनी लगन हो कि मैं याद में ऊंची स्टेज लूँ। यह भी उमंग-उत्साह रहे कि योग की स्टेज में मुझे बड़े ते बड़ी ऊंची स्टेज लेनी है। लेकिन इसमें चांस लेने वाले चांसलर बहुत कम हैं।" इसलिए बाबा देख रहे थे कि दोनों तरफ कितने-कितने चांसलर हैं ! यही दृश्य देखकर मुस्करा रहे थे। फिर बाबा ने कहा–अच्छा, यह तपस्या जो कर रहे हो, तपस्या माना क्या ? तपस्या माना परिवर्तन और परिवर्तन की निशानी है सफलता। तो तपस्या कर रहे हो लेकिन इसकी जो निशानी है–हर कार्य में सफलता, वह सफलता की स्टेज आगे बढ़ रही है ? संकल्प, बोल, सम्पर्क-सम्बन्ध में तपस्या की प्रैक्टिकल निशानी सफलता दिखाई दे, तब बाबा कहेगा कि तपस्या अभी लगन से अग्नि रूप में परिवर्तन हो रही है। तपस्या में बैठते हो,

यह तो ठीक है । लेकिन बाबा प्रैक्टिकल में योग का प्रयोग अर्थात् हर कार्य में सफलता देखना चाहते हैं ।" फिर बाबा ने कहा—चलो, बाबा आज आपको एक्सरसाइज़ दिखाता है ।

आगे चले तो एक बहुत बड़ा मैदान था, उसमें सामने लिखा हुआ था—'परिवर्तन और प्रवेशता ।' बाबा ने कहा—अभी मैं सभी बच्चों को साकार रूप में इमर्ज करता हूँ । तो सेकेण्ड में सभी इमर्ज हो गये । बहुत अधिक संख्या थी । बाबा ने कहा—सभी तपस्या में बैठ जाओ । सभी तपस्या में बैठ गये । बाबा सामने खड़ा था । बाबा ने कहा—अभी जैसे मैं करता जाऊं, वैसे कैच करके तुम भी फालो फादर करो । ब्रह्मा बाबा का भी साकार रूप था, शिव बाबा नहीं थे । तो क्या देखा ? ब्रह्मा बाबा के मस्तक से एक दिव्य मीठी लाइट निकली । जैसे लेज़र बिम के शो में सीधी किरणें निकलती हैं, ऐसे लाइट की किरण एकदम सीधी निकलीं और बादलों के भी ऊपर जो बाबा का सम्पूर्ण फरिश्ता रूप था, उसमें वो लाइट सीधी जाकर प्रवेश हुई । फिर वहाँ पहुँचकर वो लाइट, लाइट के रास्ते से मूलवतन में चली गई और वहाँ सितारे के माफिक चमकने लगी । थोड़े टाइम के बाद वहाँ से आकारी रूप में आई, फिर एक सेकेण्ड में साकारी रूप में आ गई । तो यह आना और जाना देखा । इसको ही बाबा ने कहा—परिवर्तन और प्रवेशता । फिर बाबा ने कहा—अभी तुम बच्चे फालो फादर करो । तो सभी बच्चे यह एक्सरसाइज़ करने लगे । जिसकी प्रैक्टिस थी वे तो शरीर से निकल फरिश्ते-रूप में टिक गये । कोई-कोई को समय लग रहा था । तो यह सीन बाबा भी देख रहे थे और हम भी बाबा के साथ साक्षी होकर देख रही थी । सभी के भिन्न-भिन्न अनुभव थे । बाबा ने सभी से पूछा—साकार से फरिश्ता और फरिश्ता से निराकारी आत्मा रूप में स्थित होने में सेकेण्ड से भी कम टाइम लगा या ज्यादा लगा ?

फिर बाबा ने सुनाया कि—"फरिश्ता रूप में वही स्थित हो सकता है जिसका देह के साथ लगाव का रिश्ता न हो । यदि व्यर्थ संकल्प भी चलते हैं, तो यह भी बुद्धि का, मन का लगाव है । तो फरिश्ता माना सिर्फ देह के

सम्बन्ध का रिश्ता नहीं लेकिन मन का, बुद्धि का, वैभव का, वस्तु का—यह कोई भी रिश्ता न हो। यदि कोई भी रिश्ता है तो तपस्या की लगन अग्नि का रूप नहीं बन सकती। कोई न कोई लगाव अटका देगा, शरीर से परे होने नहीं देगा। इसलिए तपस्या में पहले तो अपने ये रिश्ते अर्थात् देह के जो लगाव हैं—उसे कट करो। जब यह लगाव कट होगा तब ही देह के सम्बन्ध भी आटोमेटिक कट हो जायेंगे। फिर परिवर्तन और प्रवेशता की प्रैक्टिस होगी तो सेकेण्ड में साकारी से फरिश्ता और फरिश्ता से बिन्दी रूप में स्थित हो जायेंगे, सेकेण्ड में अथॉर्टी होकर जायेंगे-आयेंगे। अभी इस एक्सरसाइज़ की आवश्यकता है। तो अब इस गुह्य रीति से तपस्या करो। केवल मैं आत्मा हूँ, शान्त-स्वरूप हूँ....— यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन एक सेकेण्ड में जाओ-आओ, अशरीरी हो जाओ — यह अभ्यास करो तब लगन 'अग्नि' रूप हो सकती है। लगन में सब पास हैं। नम्बरवार हैं लेकिन फिर भी ठीक हैं। अभी लगन को 'अग्नि' रूप बनाने के लिए यह एक्सरसाइज़ बहुत-बहुत आवश्यक है।"

फिर बाबा ने डबल विदेशी बच्चों को याद किया और उन्हों के प्रति कहा कि—"तपस्या का अटेन्शन और उमंग विदेश में भी अच्छा है। अभी इस एक्सरसाइज़ को और आगे बढ़ाना है।" बाबा ने कहा—"डबल विदेशी बच्चों को बाबा मुबारक भी देते हैं क्योंकि इन्हों में महसूसता की शक्ति अच्छी है। महसूसता शक्ति के कारण जो भी भूल करते हैं, वह कट हो जाती है। ऐसे ही चलाते नहीं हैं, महसूसता शक्ति से अपना बोझ कम कर देते हैं। यह विशेषता है। इसी कारण लिफ्ट मिल जाती है। अभी और भी सूक्ष्म रीति से अपनी भी चेकिंग, सेवा में भी चेकिंग करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे और विशेष अटेन्शन देते हुए आगे बढ़ेंगे तो सफलता को प्राप्त करेंगे।" विदेशी बच्चों ने बाबा को महसूसता और परिवर्तन के पत्र लिखे थे। तो बाबा ने यह उनके पत्र के रेसपाण्ड में जवाब दिया।

दादी जानकी ने भी विशेष बाबा को थैंक्स लिखी थी। तो बाबा ने कहा—"हिम्मत बच्ची की, मदद बाबा की। सर्व परिवार की दुआओं से तन

में, मन में, धन में—तीनों में आगे बढ़ रही है, बढ़ती रहेगी। फिर बाबा ने कहा—जिन्होंने शुक्रिया-शुक्रिया दिल से गीत गाया है, तो बाबा भी दिल से गीत गा रहे हैं 'बच्चे शुक्रिया'। परदादी को भी खास बाबा ने याद दी और कहा—"विजयी बनकर आगई। जब से पैदा हुई है तब से विजय का तिलक है ही। विजयी बनकर के सेवा करके आ गई।" फिर बाबा ने सभी दादियों को याद दी और कहा—निमित्त दादियां जो हैं उन्हों पर दुआओं की बारिश होती रहती है, इससे बहुत आगे जा रही हैं। बेफिक्र हैं, इसलिए कोई बड़ी बात नहीं है।" विशेष टीचर्स का जो एकाउन्ट का काम चल रहा है उसके प्रति बाबा ने कहा कि—"टीचर्स को यह नहीं समझना चाहिए कि यह कोई जरूरी काम नहीं है। अगर इसे जरूरी नहीं समझेंगे तो भी फुल का सर्टीफिकेट नहीं मिलेगा। इसमें भी नालेजफुल बनना है। अगर कोई भी कार्य में फुल नहीं तो सक्सेसफुल नहीं। यह काम कोई रमेश भाई का नहीं है, यह भी यज्ञ की सेवा कर रहा है।" बाबा रमेश भाई तथा उनके सभी साथियों की स्नेह की मालिश कर रहा है। फिर सभी को याद-प्यार देते हुए कहा कि—लगन को अग्नि रूप में परिवर्तन करो और ऊंची स्टेज लो। ओम् शान्ति।

१५.७.९१

डेड साइलेन्स के बजाए स्वीट साइलेन्स का अनुभव करो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा अव्यक्त सन्देश)

आज आप सभी का याद-प्यार लेकर जैसे ही मैं बाबा के पास पहुँची तो क्या देखा—बाबा तपस्वी रूप में बैठे हुए थे। आसन भी लाइट का ही था। बाबा का यह रूप देखते मैं उसी स्थिति से आगे बढ़ती गई और जैसे ही मैं नजदीक पहुँची तो बाबा कुछ बोल नहीं रहे थे लेकिन नयनों की भाषा से जैसे हम सबका स्वागत भी किया और नयनों की भाषा से मुझे अनुभव

हो रहा था कि बाबा कुछ कह रहे हैं। मैं बाबा के सामने खड़ी हो गई। तो क्या देखा कि बाबा के स्थिति प्रमाण फीचर्स भिन्न-भिन्न बदलते गये। पहले बहुत मीठा स्नेह-स्वरूप था, जो स्नेह का स्वरूप फेस पर स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उसके बाद कुछ समय में स्नेह-स्वरूप बदल शक्ति-स्वरूप अनुभव हुआ। वह भी फीचर्स से स्पष्ट पता लग रहा था कि इस समय बाबा शक्ति-स्वरूप की स्थिति का अनुभव करा रहे हैं। नैन-चैन, मुस्कराहट—सबसे शक्ति-स्वरूप दिखाई दे रहा था। उसके बाद फिर तीसरी स्थिति—स्वीट साइलेन्स स्वरूप का अनुभव हो रहा था। डेड साइलेन्स नहीं, लेकिन स्वीट साइलेन्स—यह स्थिति बहुत ही न्यारी-प्यारी थी।

इन तीनों स्थितियों का अनुभव कराते हुए बाबा बोले—"बच्ची, यही तपस्या है। एक सेकेण्ड में इन भिन्न-भिन्न स्थितियों का अनुभव करने से सहज ऊपर की ऊंची स्टेज पर पहुँच जायेंगे। सबसे पहली स्टेज—बाप के स्नेह का सर्व सम्बन्ध से अनुभव करना है, तब ही लास्ट 'स्वीट साइलेन्स' की स्टेज पर पहुँच सकेंगे। क्योंकि स्नेह नहीं तो शक्ति के प्राप्ति की भी अनुभूति नहीं कर सकेंगे। जब शक्ति-रूप बनेंगे तब ही स्वीट साइलेन्स स्थिति में सहज स्थित हो सकेंगे। स्वीट साइलेन्स स्थिति को ही बीजरूप स्थिति भी कहते हैं, जिस स्थिति में सर्व रस भरा हुआ है। डेड साइलेन्स में कोई सर्व रस का अनुभव नहीं होता लेकिन स्वीट साइलेन्स में सब समाया हुआ रहता है। जैसे—बीज में सब समाया हुआ होता है। अपने को बाप समान ऊंचे ते ऊंची स्थिति में हूँ—ऐसे अनुभव करेंगे।" इसी प्रमाण बापदादा ने तपस्या की तीनों स्थितियों का प्रैक्टिकल स्वरूप दिखाया और कहा कि—"चलते-फिरते भी इन तीनों स्टेज का अनुभव कर सकते हो। जिस समय बुद्धि फ्री है तो स्वीट साइलेन्स के रूप में चले जाओ और जिस समय ऐसा कोई विशेष कार्य सामने आता है तो शक्ति-रूप बन कार्य में तत्पर रहो और जिस समय बुद्धि बिज़ी है तो बाप के स्नेह-स्वरूप में समाते हुए कार्य करते चलो। डबल लाइट का अनुभव करेंगे और सहज ही लास्ट स्टेज 'स्वीट साइलेन्स' तक पहुँच जायेंगे।"

फिर बाबा ने पूछा कि क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा—बाबा, आजकल विशेष तपस्या चल रही है। तो बाबा ने २-३ बार प्रश्न पूछा कि क्या तपस्या में बैठे हैं? मैंने कहा—हाँ। तो बाबा बोले—तपस्या में बैठे हैं या मौज मना रहे हैं? क्योंकि तपस्या अर्थात् मौज मनाना, भट्ठी अर्थात् शीतलता का अनुभव करना। इसके बाद बाबा को दूसरा समाचार सुनाया। (आप सबको मालूम हो कि आबू में ही निकट में एक सालगांव है। वहाँ की २३ एकड़ जमीन बाबा के बच्चों ने ली है। तो उसके सम्बन्ध में वहाँ का प्लैन भी बाबा को सुनाया)

समाचार सुनकर बाबा बोले—"जो प्लैन बना रहे हैं वह अच्छा है। सदा ये लक्ष्य रखना कि सिम्पल भी हो और ब्युटीफुल भी हो और विशेष ध्यान ये देना कि कोई भी आवे तो ऐसे अनुभव करे कि ये स्थान दुनिया से न्यारा और प्यारा है। वहाँ के वायुमण्डल का प्रभाव उनकी स्थिति में परिवर्तन लाये, जिससे अनुभव करें कि यहाँ कुछ नवीनता और विशेषता है। पावरफुल वृत्ति से ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो सबको अलौकिक-अव्यक्त अनुभव हो और ऐसे समझें कि इसी स्थान से ही सब-कुछ मिल सकता है।" फिर बाबा को नाम सुनाया। नाम तो बहुत निकले थे लेकिन बाबा को 'ज्ञान-सरोवर' अच्छा लगा। साथ में बाबा ने कहा कि कोई इंग्लीश नाम भी रख सकते हैं—'होली हेपी हाउस'।

उसके बाद बाबा को विदेश-यात्रा के प्रोग्राम का समाचार सुनाया कि हम, दादी और निर्वैर भाई, यात्रा पर जा रहे हैं। बाबा मुस्कराये और कहा—क्या तपस्या वर्ष में इतने सब विदेश-यात्रा के प्रोग्राम बना लिये! हम मुस्कराते रहे। बाबा ने कहा—"डबल विदेशियों को रिफ्रेशमेन्ट पसन्द आती है, इस कारण उसके निमित्त जा रहे हैं। बाबा डबल विदेशियों के उमंग-उत्साह को देख सदा खुश होते हैं। उन्हों के उमंग-उत्साह के पंखों ने आप सबको प्लेन की यात्रा तक पहुँचा दिया। इसलिए उन्हों के उमंग-उत्साह को बढ़ाना आवश्यक है।" फिर बाबा ने सभी तरफ के डबल विदेशियों को विशेष याद-प्यार दी। फिर मैंने बाबा को सुनाया कि ग्लोबल हाउस बन गया है।

बाबा बोले—"वह तो बनना ही था। ये भवन बहुत सेवा करेगा। अभी तक कुछ लोग समझते हैं कि इन्हों की युनिवर्सल सेवा नहीं है लेकिन सेवा अच्छी है। तो फॉरेन में स्थान बनने से चारों ओर के फॉरेन के आई. पीज. सम्बन्ध में आयेंगे। जैसे मधुबन में फॉरेन से आते हैं और यहाँ का प्रभाव लेकर के जाते हैं तो फर्क पड़ता है। लेकिन फॉरेन से आई. पीज. इंडिया में मुश्किल से आ सकते हैं। फॉरेन से फॉरेन में सहज जा सकेंगे और प्रभावित हो नाम फैलायेंगे। जैसा नाम है—'ग्लोबल हाउस', तो इससे युनिवर्सल सेवा का प्रभाव पड़ेगा। तो बनना था, बन गया। इसके लिए मुबारक हो !" साथ-साथ बाबा ने विशेष यू.के. और जो भी सर्व विदेश के बच्चे निमित्त बने हैं उन्हों के प्रति कहा कि—"बच्चों ने स्नेह के बूँद-बूँद से बिन्दु बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए ये स्थान बनाया है। स्नेह की बूँद बच्चों की और प्रसिद्ध होंगे बिन्दु बाप।" साथ में दादी जानकी के लिए विशेष कहा कि बच्चों को अमृतवेले मस्तक पर हाथ घुमाता हूँ और सभी साथी सेवाधारियों को स्नेह और शक्ति की माजुन खिलाता हूँ। इसलिए ये कार्य बहुत जल्दी और सहज अच्छा हो गया।

ऐसे समाचार की लेन-देन के बाद बाबा को चारों ओर की तपस्या-भट्ठी कैसे उमंग-उत्साह से चल रही है, ये सुनाया। तो बाबा ने बहुत अच्छा एक दृश्य दिखाया। एक ही स्थान पर एक साकार शरीरधारी बैठा हुआ था लेकिन आसन लाइट का था। दूसरा—फरिश्ता स्वरूप भी बैठा हुआ था और फरिश्ते रूप से चारों ओर लाइट निकलती हुई दिखाई दे रही थी, जैसे लाइट के कार्ब में ही फरिश्ता बैठा हुआ है। तीसरा—एक सतयुग का विमान दिखाया। चौथा—एक लाइट का सर्कल था, जिसके बीच बिन्दु चमक रहा था। बाबा ने पूछा—बताओ ये क्या दिखा रहे हैं ? मैं मुस्कराई। बाबा ने कहा कि—"ये चार प्रकार के वाहन है। जैसे कोई भी स्थूल वाहन चलाने वाले जब चाहें, जितनी स्पीड में जाने चाहें, जितना समय चलाना चाहें, उतना समय उसी स्पीड से चला कर स्टॉप कर देते हैं। ऐसे आपका यह साकार शरीर भी एक वाहन है। इसमें भी जिस समय चाहो, उस समय प्रवेश हो कार्य करो अर्थात् वाहन

से काम लो, जब चाहे ब्रेक लगाओ, स्पीड से चलना हो तो स्पीड में चलो और फिर कार्य समाप्त होते ही इसके भान से न्यारे हो जाओ। इस शरीर को वाहन समझ के प्रवेश हो और न्यारे हो जाओ। ऐसे ही फरिश्ते शरीर में भी जब चाहो तब प्रवेश हो फरिश्ते स्थिति का अनुभव करो। सतयुग के विमान में भी जब चाहो बैठ सैर करो।" उसके बाद बाबा ने जो चौथा लाइट का सर्कल दिखाया था उसको स्पष्ट करते हुए कहा कि—"ये है सम्पूर्ण स्थिति का वाहन। इस सम्पूर्ण स्थिति के वाहन पर बिन्दु लाइट बन चारों ओर लाइट के चक्र द्वारा लाइट फैलाते रहो। तो ये सर्कल लाइट फैलाने का सूचक है। बिन्दु रूप में स्थित हो चारों ओर लाइट फैलाना—यही अंतिम स्थिति का वाहन है। लोग अंत: वाहक शरीर कहते हैं लेकिन आपकी अंतिम स्थिति ही आपका वाहन है। तो ये अभ्यास अभी से बहुतकाल से करो—जिस समय जिस स्थिति के वाहन में प्रवेश होने चाहो उस समय प्रवेश हो जाओ—ये ही तपस्या का सम्पूर्ण स्वरूप है। ऐसा अभ्यास अभी से होने से अंत में ये साकार शरीर आपको खींचेगा नहीं। क्योंकि प्रवेश होने और न्यारे होने का अभ्यास मदद करेगा। इसलिए ये अभ्यास न्यारे और प्यारे बनने का अति आवश्यक है। क्योंकि अन्त में विनाश के समय चारों ओर हाहाकार होगा। तो इस अभ्यास द्वारा आपको सहज शरीर छोड़ने में बहुत मदद मिलेगी। शरीर का भान, स्वभाव-संस्कार का भान—कोई बन्धन खींचेगा नहीं।"

इसके बाद बाबा ने मधुबन वालों को विशेष याद किया, याद-प्यार दी और कहा कि सेवा की पद्म गुणा मुबारक तो बाबा सदा देते हैं लेकिन इस समय सब बड़े उमंग-उत्साह से तपस्या कर रहे हैं और तपस्या का वायुमण्डल लाइट-हाउस और माइट-हाउस समान फैल रहा है और फैलेगा। महारथी भाइयों के संगठन के प्रति भी बाबा को याद दी तो बाबा ने कहा कि—"ये तपस्या नहीं, मौज है। संगमयुग है ही मौजों का युग। इसलिए तपस्या कोई भारी चीज़ नहीं है। इसलिए सहज मौज मनाना।" दादी जी और सर्व दादियों को विशेष बाबा ने याद-प्यार देते हुए कहा कि १२ मास ही अथक सेवाधारी का मैडल मिला हुआ है। ओम् शान्ति।

२४.१०.९१

एवररेडी बनो तो प्रकृति आपका स्वागत करें

(सतगुरुवार के दिन ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज अमृतवेले आप सबका याद-प्यार लेते हुए वतन में पहुँची तो हमारे जाने से पहले ही सभी की याद-प्यार बापदादा के पास पहुँच गई थी। फिर भी विधिपूर्वक मैंने भी याद-प्यार दी और वतन में बहुत सुन्दर न्यारा दृश्य देखा—सामने एक बहुत अच्छा लाइट का सिंहासन था और वह लाइट से ही सजा हुआ था। सिंहासन देखते हुए मैं सोचने लगी कि बाबा कहाँ हैं? इतने में ही देखा कि सिंहासन के ऊपर बाबा का फेस दिखाई दिया जो बहुत ही सूक्ष्म लाइट-माइट स्वरूप था। वह सिंहासन हार्ट के शेप (आकार) का था, उसके बीच में बापदादा मुस्करा रहे थे।

बाबा ने देखते ही कहा—"आओ मेरे बेफिक्र बादशाह, आओ!" मैं मुस्करा भी रही थी और ऐसे मधुर मिलन में मगन थी। कुछ समय के बाद फिर बाबा ने कहा कि—मेरे बादशाह बच्चे, तख्त-नशीन बन जाओ! तो मैं जब आगे बढ़ी तो मैंने देखा—मैं अकेली नहीं हूँ, आप सभी में से कई हमारे साथी बन गये और जैसे हम संगठित रूप में हार्ट के तख्त पर बैठी तो बाबा के हाथ फैलते हुए सबके सिर पर आ गये। फिर बाबा ने कहा—"देखो, बाबा तो बेफिक्र बादशाह है ही लेकिन रीयल बादशाह तो आप बच्चे ही बनते हो"। मैंने कहा—बाबा, बादशाह बनाने वाला तो और भी बड़ा बादशाह हो गया। तो बाबा ने कहा—"नहीं बच्ची, मैं तो वर्ल्ड सर्वेन्ट हूँ। तुम मेरे बच्चे बादशाह हो।" मैं मुस्कराती रही। फिर बाबा बोले—तुम्हें पता है कि बादशाहों का स्वागत कैसे होता है? तो मेरा संकल्प चला कि वह तो कई बार देखा है। हम लोग तो कई बार सतयुग में उसी प्रैक्टिकल लाइफ से होकर आये हैं। फिर बाबा ने कहा—"तुमने जो देखा है, उससे यह भिन्न है। आज मैं तुमको

उससे न्यारा दिखाऊंगा।" इतने में दृश्य चेंज हो गया।

हम सभी जैसे तख्त से नीचे चल रहे थे। तो तीन प्रकार का स्वागत देखा। पहला-पहला स्वागत देखा—प्रकृति के ५ तत्व ५ फरिश्तों के रूप में हम सबका स्वागत कर रहे थे। उनके हाथ में बहुत सुन्दर मालायें थीं और वे ऐसी वन्डरफुल मालायें थीं जो जितना आगे जाएं उतनी बड़ी माला हम सबको पड़ती जाए। फिर हम आगे बढ़े तो दूसरा स्वागत देखा—सेवा की सफलता के हार, सफलता जैसे हमारा स्वागत कर रही है। फिर उसके आगे बढ़े तो तीसरा जो स्वागत था—वह थी हमारी ही सम्पूर्ण स्टेज, जो हमारा स्वागत कर रही थी। जैसे दो व्यक्ति गले मिलते हैं तो आपस में मिलकर दो एक हो जाते। इसी रीति से 'सम्पूर्ण स्टेज' संगमवासियों का स्वागत कर रही थी और मिलकर जैसे कि एक हो रहे थे। यह तीन रूपों की स्वागत बाबा ने दिखाई और कहा—बताओ, ऐसा स्वागत सतयुग में होगा? मैंने कहा—बाबा, संगम तो है ही अलौकिक। बाबा ने कहा—"यह है बेफिक्र बादशाहों का स्वागत। अभी तो प्रकृति हलचल मचाती है ना लेकिन यह प्रकृति भी आपका स्वागत करेगी, सफलता भी स्वागत करेगी और सम्पूर्ण स्टेज भी स्वागत करेगी।"

फिर बाबा ने पूछा—"बताओ, ऐसे बेफिक्र बादशाहों का स्वागत अभी कितना नजदीक है? १०साल या ५ साल, कितना समय लगेगा?" तो मैं मुस्कराती रही। बाबा ने कहा—"ऐसा स्वागत अभी हुई कि हुई! बस, सिर्फ तुम बच्चे कहो—बाबा, एवररेडी! सिर्फ एवररेडी का स्विच ऐसे करो तो जो अभी दृश्य देख रही थी वह सब प्रैक्टिकल सेकेण्ड में हो जायेगा, देरी नहीं लगेगी। परिवर्तन में भल थोड़ी देरी लगेगी लेकिन आपके स्वागत में देरी नहीं लगेगी। परन्तु सभी बच्चे एवररेडी चाहिए। क्योंकि मेरे को तो सबको साथ ले जाना है, एक को भी छोड़कर नहीं जाऊंगा। इसलिए यथाशक्ति, अपनी-अपनी स्टेज अनुसार जब सभी एवररेडी बनें, तब यह दृश्य प्रैक्टिकल में हो।" फिर बाबा ने एवररेडी बनने के लिए तीन शब्दों की स्मृति दिलाई और कहा—"यह तीन शब्द सदा अपनी दिनचर्या में याद रखना—(१) स्वयं की स्मृति, (२) संयम की और (३) समय की स्मृति। रोज़ स्वयं की स्मृति का

तिलक लगाओ, संयम जो हैं उनका श्रृंगार करो और बापदादा के साथ-साथ समय को भी सामने रखो कि समय क्या बता रहा है, किस गति से चल रहा है। जब यह तीनों ही पहचान सम्पूर्ण हो जायेंगी तब यह स्वागत प्रैक्टिकल में हो जायेगा।"

फिर तो बाबा ने समाचार पूछा कि क्या-क्या तैयारियां कर रहे हो ? हमने कहा—बाबा, हॉस्पिटल की बहुत अच्छी तैयारियां हो गई हैं। बाबा ने कहा—"समय पर बच्चों ने सब तैयारियां की, इसलिए दिल व जान, सिक व प्रेम से मुबारक हो। जिन बच्चों ने समय पर सफलता प्राप्त की है, ऐसे बच्चों की बापदादा अपने हस्तों से मसाज़ कर रहा है।" बाबा ने कहा—सभी को मेरी याद-प्यार देना। फिर आप जो भी आये हैं उन्हों की याद-प्यार दी। तो बाबा ने कहा—यह मेरे बड़े चतुरसुज़ान बच्चे भाग-भाग कर आये हैं"। यह बच्चे इनश्योर (Insure) करने में बड़े होशियार हैं। बाबा ने कहा—"पता है यह कौनसी इनश्योरेन्स कम्पन्नी है ? यह है फॉर एवर इनश्योरेन्स कम्पन्नी (For ever Insurance Company), जन्म-जन्म के लिए इनश्योर करने वाली कम्पनी। ऐसी कम्पनी आपको और कोई भी नहीं मिलेगी। वहां एक जन्म के लिए तो इनश्योर कर लेंगे, परन्तु यह है अनेक जन्मों के इनश्योरेन्स की गारन्टी। तो जिन्होंने भी इनश्योरेन्स कम्पनी में अपना इनश्योर कराने में होशियारी दिखाई है, ऐसे स्नेही, सहयोगी और सदा योगी बच्चों को मुबारक देना, याद-प्यार देना।" जो देश-विदेश के बच्चे यहाँ नहीं आये हैं उन सबको भी बाबा ने याद किया। बाबा ने कहा—"चाहे शरीर से यहाँ नहीं हैं लेकिन बाबा के साथ हैं। वतन में वह भी बैठकर मेरे साथ सब देखेंगे। तुम बच्चों ने तो थोड़ों को निमन्त्रण दिया है लेकिन मैं सभी को वतन में निमन्त्रण देकर अपने साथ सब दिखाऊंगा।" फिर बाबा ने देश-विदेश के सभी बच्चों को बहुत-बहुत याद-प्यार दी और कहा—तपस्या वर्ष की मुबारक देना। तपस्या वर्ष के सफलता की, सेवा की मुबारक हो ! ओम् शान्ति।

ग्लोबल हास्पिटल के उद्घाटन अवसर पर अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश

आज के शुभ दिवस पर प्यारे बापदादा ने कहा कि–"यह हॉस्पिटल नहीं लेकिन यह होली स्थल है, होली प्लेस है। जैसे किसी भी होली प्लेस में अपने किये हुए पाप कर्म माफ कराने के लिए जाते हैं, तो यह हॉस्पिटल प्रैक्टिकल होली-प्लेस का काम करेगा। क्योंकि यहाँ पिछले किये हुए कर्मों का हिसाब-किताब शरीर से भी चुक्तू होगा। जैसे होली-प्लेस की यात्रा पर जाते हैं, तो हॉस्पिटल भी यात्रा ही है जहाँ कर्म के हिसाब को हल्का करने के लिए आयेंगे।" बाबा ने कहा कि हॉस्पिटल को जब होली-स्थल समझेंगे तब वह वायब्रेशन्स सबको आयेंगे। दूसरा–यहाँ पर जो भी आत्मायें पेशेन्ट (मरीज) बनकर आयेंगी वे इस हॉस्पिटल से पेशेन्स (धीरज) में रहने की शक्ति धारण करके जायेंगी। तीसरा–यह हॉस्पिटल दूसरे हॉस्पिटल्स से भिन्न होगा। भिन्न-भिन्न कमरे वा मशीनरी तो वहाँ भी होती लेकिन यहाँ एक ऐसा भी कमरा है जहाँ अनेक जन्मों के लिए बीमारी से विदाई मिल सकती है। राजयोग का कमरा सदाकाल के लिए हर एक को बीमारी से मुक्त करेगा। पिछले कर्मों के हिसाब-किताब तो कुछ योग से, कुछ भोग से चुक्तू करने पड़ेंगे लेकिन अनेक जन्मों के लिए एवर हेल्दी और वेल्दी बनने के लिए–यह जो कमरा बनाया है, यह सदा के लिए बीमारियों से विदाई और परमात्मा पिता से बधाई लेने का कमरा है। इसलिए यह दूसरे स्थानों से न्यारा है।

फिर बाबा ने सभी आये हुए सहयोगी सो योगी बच्चों को याद-प्यार दी और कहा कि–जिन बच्चों ने भी संकल्प से, बोल से, कर्म से–जो भी सेवा की है, निमित्त बने हैं, इस शुभ कार्य के निमित्त बनने वाले बच्चों को बधाई देना। जो भी निमित्त बने हैं, उन्हें बापदादा की, ब्राह्मण परिवार की दुआयें मिलती हैं। बाबा ने कहा कि इस हॉस्पिटल में नई विधि से ट्रीटमेंट करना।

वह नई विधि है—अपनी शुभ भावना और शुभ कामना के वायब्रेशन्स । इन वायब्रेशन्स से ट्रीटमेंट करेंगे तो हर एक हेल्दी, वेल्दी और हैपी बन जायगा ।ऐसा कहते बाबा ने कहा कि सफलता आप ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है । इसलिए सफलता तो है ही । ओम् शान्ति ।

२७.११.९१

योग के प्रयोग से प्रगति की प्रमोशन लो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज अमृतवेले बापदादा के पास जाते ही मुख की मधुर मुस्कान और नयनों के अलौकिक मिलन का अनमोल अनुभव करते आगे बढ़ती गई । बापदादा बोले—आओ मेरी बेहद की वैरागी, स्वत: सहजयोगी बच्ची, आओ ! क्या समाचार लाई हो ?" मैं बोली—"बाबा, आज तपस्या वर्ष का समाचार लाई हूँ । चारों ओर सब अपनी-अपनी लगन अनुसार तपस्या में लगे हुए हैं और अच्छे-अच्छे अनुभव कर रहे हैं । विशेष तो स्वयं के पुरुषार्थ और सेवा में आपकी एकस्ट्रा मदद के बहुत विचित्र अनुभव कर रहे हैं ।" बापदादा मीठा मुस्कराये और बोले—"बच्ची, लगन तो अच्छी है और रहेगी भी । अब तो तपस्या वर्ष के सम्पन्न होने का भी समय समीप आ रहा है । इस थोड़े से रहे हुए समय में और भी अधिक लाभ उठा सकते हैं । क्योंकि तपस्या वर्ष विशेष खुले मन से वरदान प्राप्त करने का वर्ष है । इसमें दो वरदानों का अनुभव और ज्यादा कर सकते हैं । एक तो—स्व पुरुषार्थ वा सेवा में सहज श्रेष्ठ प्राप्ति का प्रत्यक्षफल । दूसरा—निश्चय की दृढ़ता द्वारा असम्भव से सम्भव होने के प्रत्यक्ष नजारे अनुभव कर सकते हैं । अभी भी और अधिक योग के प्रयोग द्वारा स्वयं के कड़े संस्कार-स्वभाव और औरों की वृत्ति को परिवर्तन करने की विधि पर रिसर्च (Research) करने का अनुभव बढ़ाना है ।"

इसलिए बापदादा ने वर्ष सम्पन्न के पहले स्मृति सो समर्थी मास जनवरी में विशेष शक्तिशाली प्रयोग करने लिए समय और इशारा दिया है। इसमें जो जितना सच्चाई-सफाई से, खुले दिल से, शुभ भावना-कामना के सम्बन्ध से स्व और सेवा प्रति प्रयोग कर प्रगति की प्रमोशन लेने चाहें, वह ले सकते हैं। लेकिन नियम, संयम और स्व साधना की आवश्यकता है। फिर तो बाबा को सेवा का समाचार सुनाया। बाबा बोले—"बच्चे, इस छोटे से प्यारे ब्राह्मण जीवन में जो पाना चाहो वह पा लो। जो बनने चाहे वह बन जाओ, जितना बनाने चाहो उतना वर्तमान और भविष्य बनाओ। उड़ो और उड़ाओ।" ऐसे कहते बाबा ने देश-विदेश के सर्व बच्चों को अपने सम्मुख बहुत बड़ी सेना के रूप में इमर्ज किया और मीठी मुस्कान और नयनों द्वारा याद-प्यार दी और स्वयं में लवलीन कर लिया।

२९.४.९२

त्याग करना छोड़ना नहीं, भाग्य लेना है

(मीटिंग में आये हुए भाई-बहनों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज अमृतवेले बापदादा के पास विशेष सन्देश लेकर जाना हुआ। तो जाते ही बाबा ने सभी बच्चों का आह्वान करते हुए नयनों से स्वागत किया और स्वागत करते बाबा बोले—आओ मेरे लाइट-हाउस, माइट-हाउस बच्चे, आओ। फिर बाबा को हमने मीटिंग का समाचार सुनाया और टीचर्स भट्ठी में जो क्लासेज चली हैं रिफ्रेशर कोर्स की, उसका भी समाचार सुनाया। बाबा सुन रहे थे और बहुत मीठा मुस्करा रहे थे। मुस्कराने में एक तो स्नेह का मुस्कराना होता और दूसरा होता है कुछ राजयुक्त मुस्कराना। तो पहले जो बाबा मुस्करा रहे थे वह तो स्नेह का था लेकिन जब हम समाचार सुना रहे थे तो बाबा का मुस्कराना जो था वह रहस्ययुक्त था। मैं देख रही थी—बाबा

सुन भी रहे हैं और मुस्करा भी रहे हैं। तो मैंने कहा—बाबा, आपने तो पहले से ही सुन लिया होगा, फिर भी आप कहते हैं कि मैं बड़े ध्यान से सुन रहा हूँ। तो बाबा ने कहा—ध्यान से इसलिए सुन रहा हूँ कि बच्चों का जो समाचार सुना रही हो ना, मैं सब बच्चों के दिल के संकल्प को भी देख रहा हूँ और समाचार सुनते मुस्करा रहा हूँ। नेचुरल है उत्कंठा तो होगी कि क्या बात है?

तो बाबा ने कहा—"बच्चों का उमंग-उत्साह भरा संकल्प बहुत अच्छा है। लेकिन बाबा इस बारी क्या चाहता है कि बच्चे दूसरे वर्ष भी यह तो नहीं कहेंगे कि—हाँ, आगे से करेंगे। क्योंकि बाबा के पास तो देखो—बच्चों के कितने बार के वायदे हैं तो बाबा जब पहले वर्ष के वायदे देखते हैं, फिर दूसरे वर्ष के देखते हैं, फिर तीसरे वर्ष के देखते हैं—तो बाबा देखकर के मुस्कराते हैं। फिर बाबा ने कहा कि वायदा करने की हिम्मत रखी, इसके लिए तो बाबा मुबारक देते ही हैं। क्योंकि फिर भी अच्छा किया ना। तो अच्छे की तो बाबा हमेशा मुबारक देते हैं। लेकिन अभी बाबा यह चाहते हैं कि जो कहा, वह किया—उसके लिए कुछ भी हो जाए, कुछ भी करना पड़े, कुछ भी छोड़ना पड़े, कुछ भी त्याग करना पड़े। लेकिन त्याग ही भाग्य है, यह छोड़ना नहीं है लेकिन भाग्य लेना है। इसीलिए बाबा फिर भी यही और अन्डरलाइन करा रहे हैं कि इस वर्ष यही लक्ष्य रखो कि जो वायदा किया है उसे निभाना ही है और एक वर्ष अगर आप पास हो गये तो फिर अभ्यासी हो जायेंगे। तो यह लक्ष्य रखकर सेवा के मैदान में आओ तो बहुत अच्छा होगा और उसकी रिजल्ट भी अच्छी निकलेगी।"

फिर बाबा ने कहा—"देखो, ५ वर्ष के प्लैन बनाये हैं। तो ५ वर्ष ही सेवा के साथ याद और निर्विघ्नता का बैलेन्स भी रखना पड़ेगा। जैसे आप लोगों ने यह लक्ष्य रखा है कि ९६ तक हम संख्या को भी बढ़ायें, क्वालिटी को भी बढ़ायें और आवाज भी चारों ओर फैले। उसके लिए जो आप लोगों ने प्लैन सोचा है वह प्लैन बहुत अच्छा है। लेकिन इस प्लैन को प्रैक्टिकल करने के लिए जब तक पहले यह लक्ष्य नहीं रखेंगे कि जो कहते हैं वह करेंगे, तब तक सफलता नहीं मिलेगी।" फिर बाबा ने कहा—दुनिया वाले भी कहते हैं ना कि

कोई भी बात भूलती है तो गांठ बांध लो । लेकिन बाबा कहते हैं कि मस्तक में यह गोल्डन शब्द लिख दो कि "मैंने जो बाबा के आगे वायदा किया है, जो कहा है—वह मुझे करना ही है ।" तो बाबा मुस्करा भी रहे थे और यह बोल भी रहे थे । फिर बाबा ने कहा—"प्लैन तो अच्छे हैं, बाबा तो कहते ही हैं कि सेवा के बिना भी व्यर्थ संकल्प बहुत चलेंगे । इसीलिए बुद्धि को सेवा में बिजी भी रखना है । लेकिन ऐसे नहीं हो कि बिजी रहते हुए बैलेन्स को छोड़ दें, यह बाबा नहीं चाहते हैं । बिजी भी रहो लेकिन बैलेन्स में रहो । तो फिर सेवा का जो आपने लक्ष्य रखा है कि इतनी सेवा करके ही दिखायें— वह सहज पूरी हो सकती है, कोई मुश्किल नहीं है ।"

फिर बाबा ने कहा—"इस बारी यह लक्ष्य रखो कि हमको सिर्फ वाणी से सेवा नहीं करनी है । वाणी से सेवा तो बहुत लोग कर रहे हैं और बहुत प्रभाव भी डाल रहे हैं । लेकिन तुम बच्चों की विशेषता यही है कि आप वृति और वाणी—दोनों की इक्ट्ठी सेवा करो ।" इस पर बाबा ने कहा—मैं तुमको एक चित्र दिखाता हूँ । ऐसे बात करते-करते बाबा ने एक चित्र इमर्ज किया । वह चित्र क्या था ? चतुर्भुज रूप था । जैसे यह विष्णु चतुर्भुज है, अलंकार है—ऐसा नहीं था । लेकिन चतुर्भुज रूप था और ४ भुजायें जो थीं उनमें अलंकार नहीं थे लेकिन हाथ में लिखत थी । ऊपर के दो हाथ पर लिखत थी—'प्रतिज्ञा' और 'प्रत्यक्षता' जो नीचे के हाथ थे उनमें लिखा था—'सत्यता' और 'सभ्यता' । ताज जो था वह रत्न जड़ित का नहीं, लेकिन लाइट का ताज था और लाइट के ताज से लाइट की किरणें निकल रहीं थी, चारों ओर जैसे लाइट फैल रही थी । मस्तक से जैसे आत्मा की लाइट निकलती है वैसे जो किरणें निकल रही थीं उन किरणों से ही शब्द बन रहे थे । वह शब्द थे—'प्योरिटी की पर्सनैलिटी' । तो ऐसा चतुर्भुज रूप दिखाकर बाबा ने कहा कि—हर एक बच्चा जो भी सेवा करे वह यह लक्ष्य रखकर करे । क्योंकि चतुर्भुज आपका लक्ष्य है ना । तो बाबा ने कहा—"वह लक्ष्मी-नारायण तो सतयुग में जाकर बनेंगे, लेकिन इस समय तुम लोग संगमयुग में यही अपना लक्ष्य रखो । यह चार भुजायें जैसे दिखाई हैं, भुजा शक्ति की निशानी है, जो चार बातों की शक्ति

है—उन चार बातों की शक्ति की चार भुजायें आपको दिखाई हैं। भुजा से बहुत कुछ कार्य हो सकता है, जो भी कार्य होगा भुजाओं से ही होगा ना। इन चार बातों की शक्ति द्वारा आप कोई भी कार्य करेंगे तो आपके उस कर्त्तव्य में, सेवा में यह पवित्रता की जो पर्सनैलिटी है वह सभी को दिखाई देगी।"

फिर बाबा ने कहा—"इस बारी यही लक्ष्य रखो कि हम सेवा करते साधारण नहीं लगें लेकिन हमारे से यह पर्सनैलिटी दिखाई दे। यह भाषण अच्छा करते हैं, प्वाइंट्स बहुत अच्छी देते हैं—वह साधारण बात है। लेकिन इन्हों में प्योरिटी की पर्सनैलिटी है, प्योरिटी की किरणें पड़ रही हैं—यह नवीनता देखें। तब तो जल्दी-जल्दी आपकी ओर आकर्षित हों और आपकी संख्या बढ़े। तो कुछ नवीनता दिखाओ। वाणी निमित्त हो लेकिन जो आकर्षण हो, जो टच करने वाली चीज हो वह आपके पवित्रता की पर्सनैलिटी हो। इस विधि से अगर आप सभी सेवा करेंगे तो जो लक्ष्य आपने रखा है वह पूरा होना कोई बड़ी बात नहीं है। बापदादा तो बच्चों के सदा ही सहयोगी हैं ही और वैसे भी अभी साधन और व्यक्ति अर्थात् अज्ञानी आत्मायें—यह दोनों ही आपके सहयोगी बनने के लिए समीप आ रहे हैं। सिर्फ उन्हों को कोई नवीनता की झलक दिखाओ तो जो समीप आ रहे हैं वे एकदम में आ जायेंगे। इसीलिए अभी आपको यह धरनी भी बहुत मदद देगी क्योंकि व्यक्ति और साधन—सभी आपके सहयोगी बनने में समीप होंगे।"

इसी रीति से बाबा ने यह दृश्य दिखाया और कहा कि जो भी मीटिंग में आये हुए हैं उन सभी बच्चों को याद-प्यार देना और यही कहना कि प्रत्यक्षता करने की भुजायें आप हो। तो प्रत्यक्ष करने वाली भुजायें जो हैं वह प्रतिज्ञा को साथ लेकर के अगर प्रत्यक्ष करने का काम करेंगी तो आपकी दो भुजायें नहीं, लेकिन जैसे हजार भुजाओं वाला बाबा है, वैसे आपकी दो भुजायें हजार भुजाओं जितना काम करेंगी, रिजल्ट निकालेंगी। ऐसे कहते बाबा ने सभी को याद-प्यार दिया। मधुबन निवासी बच्चों को भी विशेष बाबा ने याद-प्यार दिया और कहा कि मधुबन निवासियों ने जो सेवा की है उसकी बहुत-बहुत ऐसे ५ बारी बाबा ने बहुत-बहुत कहा और बोला कि इन्होंने सारी सीजन में

रात-दिन जो सेवा की है—तो सेवा का फल तो बाबा इन्हों को सूक्ष्म में देता ही है लेकिन दादी के लिए कहा कि मधुबन निवासियों को विशेष ५ फल खिलाना। इसी रीति से बाबा ने मधुबन निवासियों को भी याद-प्यार दी। सेवाधारी तो साथ में हैं ही। ओम् शान्ति।

२३.६.९२

लगाव से मुक्त होना ही अव्यक्त वर्ष मनाना है

(मातेश्वरी जी के स्मृति-दिवस पर अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का सन्देश)

आप सबकी याद और प्यार लेकर हम अमृतवेले बाबा के पास वतन में पहुंची। आज जाते ही बाबा और मम्मा—दोनों को देखा। दोनों ही आपस में कुछ बातचीत कर रहे थे। ऐसे लग रहा था जैसे साकार में 'बाबा' मम्मा को बुलाते थे और गद्दी पर बिठा कर बातचीत करते थे। तो इसी रीति से वही साकार दृश्य सामने आया। जैसे ही मैं सामने पहुँची तो मम्मा और बाबा, दोनों ने बहुत मीठी दृष्टि देते हुए कहा— शिव शक्ति सेना को मुबारक हो। मैंने ऐसे महसूस किया जैसे मैं अकेली नहीं हूँ लेकिन पूरी शक्ति सेना सामने है और शक्ति सेना से ही मम्मा-बाबा मुलाकात कर रहे हैं और यह 'बोल' बोल रहे हैं, उसके बाद फिर बाबा ने कहा—आओ बच्ची, आज विशेष मम्मा के लिये याद-प्यार लाई हो या बापदादा के लिए लाई हो? तो मैंने कहा—त्रिमूर्त्ति के लिए लाई हूँ। तो बाबा ने कहा—फिर भी आज तो विशेष मम्मा का दिन है, मम्मा के प्रति भोग लगा रही हो।

फिर बाबा ने मम्मा को कहा कि आप सुनाओ कि आपकी और हमारी क्या रूह-रिहान चल रही थी। तो मम्मा मुस्कराई और कहा कि—"आज बाबा हमसे पूछ रहे थे कि एडवांस पार्टी की तैयारी कहाँ तक हुई है और मैं बाबा

से पूछ रही थी कि साकारी वतन में शक्ति सेना की तैयारी कितनी हुई है ? आपस में यह रूह-रिहान कर रहे थे ।" फिर बाबा ने मेरे से पूछा—आप और क्या समाचार लाई हो ? मैंने कहा—बाबा, एक तो मीटिंग का है । दूसरा—सभी के मन में यही है कि अभी अव्यक्त वर्ष-९३ आ रहा है । तो विशेष फरिश्ता स्वरूप बनने के लक्ष्य से अव्यक्त वर्ष में सेवा का और स्वउन्नति का प्लैन बना रहे हैं । तो बाबा ने कहा—मम्मा, इनको एक सीन दिखाते हैं ।

इतने में मैंने देखा—कई ब्राह्मण आत्मायें बादल के एकदम ऊपर जैसे आकाश में फरिश्ते रूप में आधे सर्कल में, एक सर्कल फिर दूसरा सर्कल—इस डिजाइन में दिखाई दे रहे थे । यह सीन ऐसे लग रही थी जैसे बादल के ऊपर अव्यक्त ज्योतिस्वरूप में फरिश्ते जगमगा रहे हैं । फिर बाबा ने पूछा—ये फरिश्ते देखे ? मैंने कहा—हाँ बाबा, बहुत अच्छे लग रहे हैं । हमारी दृष्टि ऊपर फरिश्तों की तरफ थी । बाबा ने कहा—तुम चारों ओर देखो । तो मैंने देखा कि आधी छतरी के आकार में ऊपर फरिश्ते थे और वे सब एक गोल स्थान से महीन तारों से बंधे हुए थे । वे तारें इतनी महीन थीं जो बहुत ध्यान से देखने से पता चलता था । तो बाबा ने मम्मा से कहा कि—ताली बजाओ और देखें कि इन तारों से ये फरिश्ते कितना अलग होते हैं । मम्मा ने ताली बजाई । तो जो तारें बंधी हुई थीa वे कोई की थोड़ी छूटी और कोई की बंधी हुई से ऊपर हो ही नहीं सकी । कोई-कोई की बहुत तारें टूट गईं लेकिन कोई-कोई की तार (रस्सी) उनके साथ-साथ उठ रही थी । कोई जमीन से तो उड़ गये लेकिन तारों सहित ही उड़े ।

जब सीन पूरी हो गई तो बाबा ने कहा—मम्मा, इसका अर्थ तो बच्ची को सुनाओ । मम्मा ने कहा—"आप फरिश्ता वर्ष मनाने जा रह हो । फरिश्ता माना जिसका किसी भी लगाव से रिश्ता नहीं । उसको कहते हैं फरिश्ता । तो अभी बाबा दिखा रहे हैं कि लगाव बहुत सूक्ष्म है । एक हैं मोटे लगाव । मोटे लगाव को तो समझ गये हो । लेकिन जो सूक्ष्म लगाव 'बॉडी कान्सेस' है, वह ऊपर उड़ने नहीं देता, फरिश्ता बनने नहीं देता । अभी तक वे तारें नहीं टूटी हैं । भले उड़ रहे हैं लेकिन एक-दो तारें (रस्सियां) साथ में ही उड़ रही हैं । जब कोई भी

बात में झुकाव होता है तो ये सभी बाते होती हैं।" तो बाबा ने यह दृश्य दिखाया कि पहले अपने सूक्ष्म लगाव को चेक करो—हमारा कोई भी सूक्ष्म लगाव जुटा हुआ तो नहीं है ? ऐसे तो नहीं—उड़ भी रहे हों लेकिन वे तारें भी साथ-साथ जा रही हों।

बाबा ने कहा—"अव्यक्त वर्ष मना रहे हो। तो अव्यक्त वर्ष का अर्थ ही है कि सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप की अनुभूति में रहना और लगाव के कारण जो झुकाव होता है, जिसके कारण सारी बातें होती हैं, उस लगाव को कट करना। उससे मुक्त हो जाओ। तो इस वर्ष का यही एम आब्जेक्ट रखो। चाहे सेवा भी करो लेकिन यदि ब्रह्मा बाबा से प्यार है, चाहे व्यक्त पालना ली है या अव्यक्त पालना ली है—लेकिन बाबा प्यार का सबूत देखना चाहते हैं। जिससे प्यार होता है उसके प्रति त्याग भी होता है। बाबा से प्यार है। तो जैसे ब्रह्मा बाबा फरिश्ते रूप में हैं, तो बाबा के प्यार के पीछे क्या आप यह छोटे-छोटे महीन लगाव नहीं छोड़ सकते ? क्या आप यह त्याग नहीं कर सकते ? तो यही त्याग कर फरिश्ता रूप बनना है। प्यार के पीछे सबूत देने वाले सपूत बच्चे कितने हैं—बाबा भी यह रिजल्ट देखेंगे।"

बाबा ने कहा—" इसीलिए कान्फ्रेन्स भी करो तो जैसे पहले कान्फ्रेन्स हुई, ऐसे मेले की रीति नहीं करो। मेले में झमेला होता है। इस अव्यक्त वर्ष में कान्फ्रेन्स करो तो पहले ब्राह्मण आत्माओं को यह अनुभव होना चाहिए कि जैसे पहले कान्फ्रेन्स करते थे ऐसे यह कान्फ्रेन्स नहीं लेकिन यह अव्यक्त कान्फ्रेन्स है। चाहे भाषण करो, चाहे कुछ भी करो लेकिन चलते-फिरते अव्यक्त रूप में सेवा करते कान्फ्रेन्स करो। कर्म और योग अर्थात् सेवा और तपस्या—दोनों का बैलेन्स हो। यही तो अव्यक्त रूप है, फरिश्ता रूप है। तो कान्फ्रेन्स इस बार ऐसे लगे जैसे अव्यक्त वतन में बच्चे इक्ट्ठे हुए हैं।" इसके लिए एक सलोगन हरेक को याद रखना है। वह एक सलोगन बाबा ने सुनाया—'सी फादर, सी सेल्फ (See father, see self)।' अपने को और बाबा को देखना। दूसरे को सहयोग देना और सहयोग लेना लेकिन और कोई बात दूसरे की नहीं देखना। यदि कोई कुछ करता भी है तो आप उसको

अपने वायब्रेशन्स से ठीक करो। ऐसे नहीं—यहाँ आवाज हो रहा था तो मैंने भी आवाज कर लिया, संग के रंग में आ गये, वायुमण्डल में आ गये। हरेक समझे—मुझे बाबा को सबूत देना है। अपनी जिम्मेवारी हरेक स्वयं ले। तो इस बारी अव्यक्त वर्ष में बाबा यह सबूत देखना चाहते हैं और सपूत बच्चों की लिस्ट बाबा चेक करेंगे। सपूत बच्चों का सर्टीफिकेट बाबा के पास रहेगा। इसीलिए यह सलोगन सदा याद रखना।"

फिर बाबा ने कहा—"तपस्या वर्ष में जिन चार बातों में निर्विघ्न बनने वा बैलेन्स रखने के लिए कहा था उसकी रिजल्ट ५०-५०% है। अभी तक १००% तक रिजल्ट नहीं है। इसीलिए अटेन्शन रखकर अब बचे हुए ६ मास में १००% लाओ। जो करेगा वो बाबा के दिलतख्त-नशीन बनेगा।" फिर बाबा ने सबको याद-प्यार दिया और मधुबन निवासियों को संगठन रूप में इमर्ज करके उनके मस्तक के ऊपर मम्मा और बाबा ने हाथ रखा जो चारों ओर घूम रहा था। बाबा ने कहा—मधुबन निवासियों ने सेवा का सबूत बहुत-बहुत अच्छा दिया है। अब अव्यक्त वर्ष में अव्यक्त फरिश्ता बनने में वा सबूत देकर सपूत बनने में मधुबन निवासी नम्बरवन लेंगे। फिर मीटिंग वालों को बाबा ने कहा—विशेष आत्माओं को विशेषता सम्पन्न याद-प्यार। साथ-साथ सभी को विशेष याद दी। ओम् शान्ति।

६.७.९२

समर्पित जीवन का आधार-हिम्मत

(मलेशिया में चली एशिया के टीचर्स की रिट्रीट में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज अमृतवेले जब मैं बापदादा के पास गई तो बाबा ने मुझसे सेवा का समाचार पूछा। मैंने बाबा से कहा कि मैं मलेशिया में पहुँची हूँ जहाँ ब्राह्मणों के लिए एक रिट्रीट रखी है। इस समय यहाँ एशिया की सभी टीचर्स

की एक मीटिंग भी रखी गई है। बाबा ने कहा—"भारत अविनाशी खण्ड है और एशिया में होने के कारण एशिया निवासी भी बाबा के दिल के करीब हैं। बापदादा जब निमित्त टीचर्स को देखते हैं तो दिल में प्यार के साथ-साथ नाज भी आता है कि कितनी हिम्मत के साथ-साथ बाबा के यह बच्चे विश्व की सेवा में विश्व के कोने-कोने में गये हैं।" फिर बाबा ने पूछा—आपको मालूम है कि ये सब किस आधार पर बाबा के बच्चे बने? तो उत्तर मिला—हिम्मत के आधार पर। हिम्मत के आधार पर ही आप बाबा को समर्पित हुए, बाबा के बने। बाबा ने कहा है कि हिम्मत ही आपके जीवन का आधार है।

फिर बाबा ने मुझे कहा—"सभी बच्चों को कहना कि कभी भी हिम्मत नहीं हारें। तो बाबा आपको सदा बचाते रहेंगे। जैसे किसी डूबते हुए व्यक्ति को पानी से बचाया जाता है, वैसे बाबा आपको भी विघ्नों से ऐसे ही ऊपर उठा लेंगे लेकिन कभी भी हिम्मत नहीं हारना। यह हिम्मत एक अमूल्य हीरे की तरह है जिसे सदा सम्भाल कर रखना। इस रिट्रीट से यह हीरा सौगात के रूप में लेकर के जाना। अगर आप कभी हिम्मत नहीं हारेंगे तो बाबा भी बच्चों से वायदा करते हैं कि सदा आपको हर विघ्न से बचाते रहेंगे। बापदादा का वायदा सदा याद रखना और अपनी हिम्मत को बढ़ाते रहना।"

जब किसी कुमार वा कुमारी की सगाई होती है तो वह एक-दो के प्रति स्नेह व्यक्त करने के लिए स्नेह की निशानी एक-दो को अंगूठी पहनाते हैं। अंगूठी अंगुली में बंध जाती है। जैसे अंगूठी का वह बन्धन है वैसे ही बाबा के वायदे का बन्धन सदा बांधे रखना। अंगूठी सदा सोने की ही पहनाते हैं और कभी-कभी उस पर हीरा भी होता है। इसी प्रकार बाबा भी आपके वायदे के बन्धन में प्यार की निशानी हिम्मत का हीरा दे रहे हैं। फिर बाबा ने कहा कि—"सदा कमल-आसन पर विराजमान रहना। कमल आसन को कभी नहीं छोड़ना। जब आप लोग मधुबन जाते हो तो अपना आसन भी जरूर साथ लेकर जाते हो, इसी प्रकार जहाँ भी जाओ अपना कमल-आसन जरूर साथ में ले जाना।" तो आपको आसन भी मिला, स्थिति भी मिली और हीरा भी

मिला। फिर बाबा ने कहा कि मलेशिया निवासी बच्चों का दिल बहुत बड़ा है। इसलिए सदा उमंग-उत्साह में नाचते रहते हैं—यह भी करें, वह भी करें... । अन्त में बापदादा ने सभी बच्चों को बहुत-बहुत याद-प्यार दिया। ओम् शान्ति।

१५.७.९२

बच्चों की मेहनत और बाप की मोहब्बत

(डबल विदेशी बच्चों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज अमृतवेले सतगुरुवार के दिन बाबा से जब मिलना हुआ तो बाबा को सुनाया—प्रोग्राम प्रमाण जो चक्कर बना था वो समाप्त होने को आ रहा है। सभी विदेशी बच्चों का याद-प्यार दिया। बाबा मीठा मुस्करा रहे थे। जब साथ-साथ हम याद-प्यार दे रही थी, मुझे ऐसा लगा जैसे बाबा के नयनों में सब बच्चे इमर्ज हैं। जैसे टी.वी. में सब स्पष्ट दिखाई देता है कि क्या सीन है, ऐसे बाबा के नयनों के बीच दिखाई दे रहा था कि बाबा के नयनों में डबल विदेशी बच्चे समाए हुए हैं और बाबा बड़े प्यार से बच्चों से मिलन मना रहे हैं। तो बाबा ने हमसे पूछा—बच्ची, इस चक्कर में क्या देखा? मैंने कहा—बाबा, यह देखा कि सबके मन में बहुत दृढ़ संकल्प है कि हमको बाबा को प्रत्यक्ष करना है, हमको फरिश्ता बनना है। इसी संकल्प को लेकर सभी अपना-अपना पुरुषार्थ कर रहे हैं। तो बाबा ने कहा—"मैं भी बच्चों को देखता हूँ। रोज मैं भी चक्कर लगाता हूँ और वतन में बैठे देखता हूँ दिल का चार्ट कि बच्चों के दिल में क्या-क्या चलता है। बाबा दिलाराम है, देखता है कि बच्चों के दिल में कौन है? दिलाराम के सिवाय और कोई को नहीं बिठा सकते, एक को बिठाया तो दूसरे को नहीं बिठा सकते।"

उसके बाद बाबा ने पूछा—तुमने सेवा में क्या देखा? मैंने कहा—बाबा,

यहां की जो सेवा है, जैसे चाइनीज, जापानीज मेहनत की सेवा है लेकिन सभी प्यार से कर रहे हैं। बाबा ने कहा—"जितनी बच्चे मेहनत करते उसका हजार गुणा मैं मोहब्बत में उन्हें आगे बढ़ाता हूँ। बच्चों की मेहनत, बाबा की मोहब्बत। बच्चे एक कदम की मेहनत करते, बाप पदम गुणा मोहब्बत यानी दिल का प्यार उन्हों को देते हैं। इसलिए मेहनत मोहब्बत में चेंज (change) हो जाती है।" तो मैंने कहा—यह बात हमने देखी कि मेहनत तो है लेकिन सभी प्यार से कर रहे हैं। तो बाबा ने कहा—यह एकस्ट्रा लिफ्ट (extra lift) होती है। जो बच्चे मेहनत करते हैं उनके लिए मां-बाप के दिल से नैचुरल प्यार-मोहब्बत निकलता रहता है। तो मोहब्बत उन्हों के लिए एकस्ट्रा लिफ्ट (Extra lift) हो जाती। लिफ्ट कहो या गिफ्ट (Gift) कहो, इसलिए बच्चे चल रहे हैं। बाबा देखता है कि निमित्त मेहनत है लेकिन मोहब्बत के नशे में बच्चे आगे बढ़ रहे हैं। मैंने कहा—बाबा, सभी डबल विदेशी बच्चों ने खास याद दी है।

बाबा ने कहा—"बाबा सभी बच्चों के नयनों में एक नूर की रीति से समाया हुआ है, बाबा के नयनों में सभी बच्चे नूर के समान समाए हुए हैं। अगर आंखों से नूर चला जाए तो कुछ नहीं रहता। तुमको याद है कि बाबा शुरू में तुम बच्चों को क्या कहते थे? तुम नूरे रत्न हो, बाबा के नूरे रत्न। सेवा के लिए तुम नूरे जहान हो, जहान के नूर तुम हो। अगर तुम ब्राह्मण जहान के नूर नहीं बनते तो जहान सुखी हो नहीं सकता। तुम नूरे रत्न हो, नूरे जहान हो। नूर, नहीं तो जहान नहीं। तो देखो, जहान क्या है, कहां जा रहा है? सभी के दिल में होता कि आखिर होना क्या है, दुनिया कैसे चलेगी? उन्हों को पता नहीं है कि जहान के नूर जाग गए हैं अभी। यह जहान आप नूरे जहान की सेवा से फिर जग जायेगा, तीसरी आंख मिल जायेगी।" बाबा ने एक दृश्य दिखाया। बहुत सारे लाइट के पंख थे। आत्माएं नहीं थीं, शरीर नहीं था—सिर्फ पंख थे। पंख तीन प्रकार के थे। दो-दो पंखों की एक-एक जोड़ी बनी हुई थी। तीनों ही प्रकार के पंख लाइट के थे लेकिन लाइट की चमक में अन्तर था। जैसे एकदम ज्यादा लाइट होती, फिर मध्यम होती, फिर उससे थोड़ी कम

होती । दूसरी बात क्या थी—जो नम्बरवन पंख थे उनमें पतले-पतले हीरे चमक रहे थे, दूसरे नम्बर के पंखों में हीरे थे लेकिन कम थे और तीसरे नम्बर के पंखों में नहीं थे ।

बाबा ने कहा—"बाबा तो सभी को कहते कि पंख लगाओ । कौनसे पंख लगाओ ? उमंग-उत्साह के । उमंग-उत्साह के पंख लगाने से तुम बहुत फास्ट (तीव्र) जायेंगे । पंख लगाने से क्या होता ? मनुष्य उड़ता रहता है । बाबा ने सभी को पंख दिए हैं । लेकिन बाबा सभी को कहता कि जो पंख चाहिए वो लो । नम्बर वन चाहिए, नम्बर टू चाहिए, नम्बर थ्री चाहिए—जो आप पसन्द करो, जो लेना चाहो वो बाबा से लो । बाबा दाता है, फिर भी जो बच्चे अपनी इच्छा से हिम्मत रखकर नम्बरवन पंख लगाते वो चमकते रहते, आत्मा प्वाइंट ऑफ लाइट (ज्योतिर्बिन्दु) होकर एकदम चमकती रहती, अपनी चमक दुनिया में फैलाते रहते । दूसरे नम्बर वाले—चमक है लेकिन कम है । तीसरे उड़ते हैं, पंख हैं लेकिन सेवा से प्वाइंट ऑफ लाइट होकर चमकें व दूसरों को चमकाएं—वो कम हैं । कई बच्चों में प्यार है, प्यार के आधार से चल रहे हैं लेकिन शक्ति नहीं है । ये पंख हैं उड़ने की शक्ति । शक्ति कम है । यह प्यार एक धागा है । बाबा से प्यार है, प्यार के कारण बंधे हैं, अलग नहीं हो सकते । लेकिन शक्ति नहीं । नम्बरवन में चमक है, शक्ति है, प्यार है । दूसरे नम्बर में शक्ति व प्यार थोड़ा कम है । तीसरे नम्बर वाले सिर्फ प्यार वाले है, शक्ति नहीं । बाबा तो कहता—सर्वशक्तिवान से सर्व शक्तियां ले लो । कई सिर्फ प्यार की शक्ति लेते और कोई सर्व शक्तियां लेते हैं—हरेक अपनी हिम्मत से लेते हैं । सभी डबल विदेशी बच्चों को कहना—बाप बच्चों को प्यार व शक्ति—दोनों के बैलेन्स में देखना चाहते हैं । शक्ति है तो सदा हल्के होकर उड़ेंगे तथा फरिश्ते रूप का दूसरों को साक्षात्कार करा सकेंगे ।

बाबा ने कहा—बाबा तो ऑफर (Offer) करता है लेकिन ऑफर (Offer) को स्वीकार करना बच्चों का काम है । बाबा कहता—जो चाहिए वो लो लेकिन लेने वाले स्वयं हिम्मत न रखें तो बाबा क्या करे ? बाबा ने कहा—डबल विदेशी बच्चों पर डबल नाज है ! डबल विदेशी बच्चों को

इण्डिया वाले बच्चों से काफी परिवर्तन करना पड़ता । डबल विदेशियों को डबल परिवर्तन (कल्चर व फिलॉसफी) करना पड़ता । डबल परिवर्तन करते हुए याद में, सेवा में आगे बढ़ रहे हैं । डबल विदेशियों का डबल परिवर्तन देख बाबा को डबल नाज है ! बाबा को विश्व कल्याणकारी बाप का नशा डबल विदेशी बच्चों को देख कर इमर्ज (Emerge) होता है—ऐसे बाबा ने बहुत प्यार से कहा । मैंने कहा—बाबा, मैं हांगकांग में हूँ, हांगकांग वालों ने स्पेशल याद दी है । बाबा ने कहा—"बाप का बच्चों से प्यार है, बच्चों का बाप से । उमंग-उत्साह है । देखो, कोई छोटा बच्चा कमाल का काम करता है तो माँ-बाप खुश होते । बच्चे को बाहों में समा लेते । बच्चों को कहना कि यहां सेवा चाइनीज की है, सिन्धियों की भी मेहनत की सेवा है, बाबा सभी हांगकांग निवासियों को अपनी उमंग-उत्साह की बांहों में समा रहे हैं । कोई समस्या आए तो उमंग-उत्साह की बाहों में समा जाना फिर समस्या ऐसे लगेगी जैसे बादल आया और चला गया । यह सीन साकार रूप में इमर्ज करना कि बाबा मुझे बाहों में समा रहा है ।" ओम् शान्ति ।

२९.८.९२

वृत्ति और वाणी की साथ-साथ सेवा करो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज विशेष आप सबकी याद लेकर बापदादा के पास गई और आपकी याद बापदादा को दी । याद देते समय बाबा ने पूछा—बच्ची, क्या समाचार लाई हो ? तो मैंने बाबा को सुनाया कि—बाबा, मधुबन में कान्फ्रेन्स के लिए मीटिंग हो रही थी जिसमें बहुत अच्छे-अच्छे सेवा के प्लैन बने हैं । यह सुनते ही बाबा मुस्कराए और कहा कि—"सेवा के प्लैन जो बनाते हो, वो तो सबकी राय से जो भी बनाए हैं वह ठीक हैं । परन्तु बाबा को एक बात मिस की है ।" मैंने कहा—बाबा, वह कौनसी बात ? तो बाबा बोले —"इस बार मैंने

सीजन की अन्त में यही विशेष सन्देश दिया था कि वर्तमान समय डबल सेवा की आवश्यकता है—एक वाणी की और वाणी से भी ज्यादा वृत्ति की। तो वृत्ति यानी शुभ भावना, शुभ कामना, रूहानियत की दृष्टि। (तो बाबा ने पूछा) और तो सारे प्लैन बनाये हैं लेकिन इसके लिए क्या प्लैन बनाया है?" मैंने कहा—बाबा, मीटिंग का टाइम कम होता है तो यह रह जाता है। बाबा ने बताया—"जब तक यह रूहानियत का प्लैन नहीं बनाया है, रूहानी व शक्तिशाली शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति नहीं बनी है—तब तक जो भी प्लैन बनाते हो वो अधूरा है। जैसे बीज बहुत बढ़िया हो लेकिन उसको पानी और धूप ठीक रीति से नहीं मिले तो बीज से जैसा फल चाहते हैं वैसा नहीं मिलता है। तो पहले जो बाबा ने डायरेक्शन दिये और इस वर्ष के लिए भी इशारा दिया था कि 'सेवा' और 'तपस्या' दोनों का बैलेन्स हो—इस पर कहाँ तक अटेन्शन है?" बाबा ने कहा—प्लैन तो बने ही हैं और जो कान्फ्रेन्स का सोचा है वह तो होनी ही है। लेकिन बाबा यह चाहते हैं कि थोड़े समय में बच्चे अपने में और सेवा में सफलता की अनुभूति ज्यादा करें। उसकी विधि बाबा सुनाते हैं कि 'वृत्ति' और 'वाणी'—दोनों की इक्ट्ठी डबल सेवा हो। उसका अटेन्शन इस कान्फ्रेन्स में या जो भी सेवा के प्लैन बनाये हैं, अव्यक्त वर्ष का भी जो प्लैन बनाया है—उसमें हर बच्चे को अवश्य रखना है। लेकिन अव्यक्त वर्ष मनाना माना बाप समान फरिश्ता बनना। मनाना माना बनना। तो वो फरिश्ता कैसे बनेंगे? अभी इसमें कितना टाइम बाकी रहा है? टाइम कितना फास्ट जा रहा है! तो जैसे समय की गति फास्ट जा रही है, इसी रीति से यह जो अटेन्शन है वह अभी और अन्डरलाइन करो। कभी भी कोई कार्य शुरू करते हो तो पहले वृत्ति की सेवा करो, फिर वाणी की करो। बाबा का विशेष कहना था कि मधुबन के या चारों ओर के मेनारिटी गुप्त ऐसे बच्चे हैं जो इस पर प्रैक्टिकल अटेन्शन दे भी रहे हैं लेकिन मैजारिटी को और अटेन्शन देने की आवश्यकता है।

बाबा ने कहा—"तपस्या में प्रोग्राम से बैठना—यह लहर भी ठीक है। प्रोग्राम बनाते हैं, दो-चार घण्टा बैठते हैं—इसमें अटेन्शन अच्छा है। प्रोग्राम

प्रमाण ठीक चल रहे हैं। लेकिन कर्मयोगी की जो स्टेज है, कर्म करते हुए बिल्कुल तपस्या का रूप दिखाई दे—इस पर और अटेन्शन देना है। कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी तपस्या की स्टेज वैसी ही रहे जैसे फरिश्ता ऊपर से आता है और काम करके फिर चला जाता है—ऐसी स्थिति रहे। कर्म करते हुए भी ऐसे लगे जैसे यहाँ तपस्या हो रही है। संगठन में होते हुए भी ऐसे लगे जैसे तपस्या में बैठने पर तपस्या की खुशबू आती है, पॉवर की फीलिंग आती है, साइलेन्स की अनुभूति होती है। ऐसे सम्बन्ध में, कर्म में आते हुए, कोई भी हलचल में आते हुए भी अचल रहें, तपस्वी लगें—इस पर और अटेन्शन देने की आवश्यकता है। ब्रह्मा बाबा से प्यार है। प्यार में सभी फुल पास हैं, प्यार में कोई भी पीछे नहीं हैं। लेकिन एक बात में पास हैं, दूसरी बात जो प्यार का रिटर्न देने की है उसमें पास होना है। बाबा जो रिटर्न चाहता है वह यही है कि बच्चे बाप समान फरिश्ता बनें। जैसे ब्रह्मा बाबा फरिश्ता है ऐसे आप लोग साकार में फरिश्ता बनो। प्यार के रिटर्न में बाबा चाहते हैं कि हर एक बच्चा कर्म करते, संगठन में कोई हलचल की बात भी हो या और कोई भी बात हो—उसमें भी ऐसे लगे कि तपस्वी बैठे हैं, तपस्वी काम कर रहे हैं, तपस्वी चल-फिर रहे हैं। यही बाबा रिटर्न चाहता है।"

बाबा ऐसा नहीं सुनना चाहता कि—संगठन ऐसा था, वातावरण ऐसा था, समस्या ऐसी थी, वायुमण्डल ऐसा था, ऐसा हुआ इसलिए ऐसा हो जाता है.. । बाबा चाहता है कि बच्चे ऐसा सैम्पल बनकर दिखायें जो कुछ भी हो जाए वा कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन अपनी कर्मयोग की ऐसी ही स्टेज बनायें जैसे बैठने के टाइम बहुत अच्छी-अच्छी स्थितियों की अनुभूति करते हैं—ऐसे लगता है जैसे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, कोई भी गुण की अनुभूतियों में, लाइट-माइट में रहते हैं। ऐसा ही कर्म में भी दिखाई दे—स्वयं को भी अनुभूति हो, दूसरों को भी अनुभूति हो। तो बाबा इस वर्ष अव्यक्त वर्ष मनाने का यही लक्ष्य देते हैं। फरिश्ता वर्ष के कार्यक्रम से हर बच्चे की अवस्था ब्रह्मा बाबा के समान हो, कर्मयोग में पावरफुल स्थिति हो। ऐसी स्टेज बनाने का सभी बच्चे लक्ष्य रखें तभी ब्रह्मा बाबा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। सिर्फ वाणी से नहीं

होगा। सिर्फ वाणी से सब अच्छा-अच्छा तो कहेंगे लेकिन ब्रह्मा बाबा से कनेक्शन तब जुटेगा जब आप लोग दिल का रिटर्न ब्रह्मा बाबा को देंगे। और आपके दिल का रिटर्न ही औरों के दिल में ब्रह्मा बाबा के प्यार या ब्रह्मा बाबा के अनुभूति का साक्षात्कार करायेगा। तो अव्यक्त वर्ष मनाना चाहते हो तो इस विधि से मनाओ। फिर जैसे शुरू में ब्रह्मा बाबा के वा बापदादा के साक्षात्कार होते थे, ऐसे अन्त में भी होंगे। ओम् शान्ति।

१०.१२.९२

हर दृश्य साक्षी दृष्टा बनकर देखो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज वतन में बापदादा से मिलन मनाते साकारी दुनिया का समाचार सुनाया। यूं तो बापदादा हमसे पहले ही जानते हैं, देखते हैं लेकिन फिर भी मिलन मनाते कुछ लेन-देन तो करते ही हैं। बापदादा बिल्कुल ही न्यारे और प्यारे रूप से मुस्करा रहे थे। बाद में बोले—"बच्ची, यह सब तो होना ही है। बच्चों को एवररेडी बनाने के लिए यह सब बीच-बीच में दृश्य आने ही हैं, जिससे बच्चों को साक्षी-दृष्टा बन सब दृश्य देखने का अभ्यास करने का चांस मिलता है। इसलिए बच्चों को सदाकाल तख्त-नशीन बेफिक्र बादशाह बन अपनी रूहानी सेफ्टी की स्थिति में स्थित रहना है।

दुनिया में घरु लड़ाई है (अयोध्या की घटना के बाद कई शहरों में हिंसा की घटनाए हो रही थी) लेकिन बच्चों को अपने शान्तिधाम घर में बैठ, मास्टर शान्ति के सागर बन चारों ओर शान्ति की लहरें फैलानी हैं। अव्यक्त वर्ष आरम्भ होने के पहले ही फरिश्तेपन की स्थिति में स्थित रहने के अनुभव का चांस मिला है। सदा अपने को चेक करो कि—हलचल के वायुमण्डल में भी सेकेण्ड में अचल रह सकते हैं वा हलचल के वायुमण्डल के प्रभाव में आ जाते हैं? क्योंकि दिन प्रतिदिन वायुमण्डल तो अति में जाना ही है, इसलिए नथिंग-न्यु की वृत्ति से लाइट-हाउस बन शान्ति दो, शक्ति दो।

११.२.९३

अव्यक्त वर्ष त्रिमूर्त्ति वरदान का वर्ष

('यूनिवर्सल हार्मनी कान्फ्रेन्स' के बाद अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज आप सभी का याद-प्यार लेते हुए हम बाबा के पास पहुंची तो आज वतन में न्यारा ही दृश्य देखा। बाबा के पहले हमें एक और सीन दिखाई दी। जैसे मैं आगे बढ़ती गई तो देखा कि दो परियां आकाश और धरनी के बीच जैसे खड़ी थीं। उनमें से एक के हाथ में माला थी और दूसरी परी के हाथ में तिलक था। विक्ट्री के रूप में वी (V) आकार का तिलक था। तो जैसे ही मैं आगे बढ़ी तो वे दोनों ही परियां ऊपर से नीचे आईं और एक परी ने हमारे गले में हार डाला और दूसरी परी ने तिलक दिया। जब वे मेरे को तिलक देते हार डाल रही थीं तो मैंने देखा—मैं अकेले नहीं हूँ, और भी मेरे पीछे-पीछे बहुत थे और वह परियां सभी को तिलक देते माला डाल रही थीं। मैं मुस्करा रही थी। उसके बाद मैं और आगे बढ़ी तो देखा—बाबा जैसे ऐसे बाहें पसारते हैं, इस रीति से खड़े थे और हम सभी को बाबा बड़े स्नेह से देखते अपनी बांहों में समाते, दृष्टि दे रहे थे। जैसे ही बाबा ने दृष्टि देना शुरू किया तो हम सभी बाबा के सामने आते गये। दादियां तो बाबा के सामने होती ही हैं। दृष्टि देते समय बाबा के चेहरे पर बहुत-बहुत मधुरता भरी मुस्कान थी। जैसे कोई बच्चों को शाबास देते हैं, ऐसे बाबा के नयनों से दिखाई दे रहा था। बाबा की दृष्टि से, मुस्कराहट से ऐसे लग रहा था जैसे बाबा हम सबको शाबास दे रहे हैं। ऐसे मिलन मुलाकात हुई।

उसके बाद बाबा ने कहा—बच्ची, क्या समाचार लाई हो? तो हमने पहले कान्फ्रेन्स का सुनाया, फिर रिट्रीट शुरू हुई है उसका भी सुनाया। तो बाबा ने कहा—बापदादा अपने सर्व विश्व-कल्याणकारी बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। फिर मैंने बाबा से पूछा—बाबा, आज यह जो परियां स्वागत कर रही थीं, इसका मतलब क्या था? तो बाबा ने कहा—तुमने ध्यान से देखा कि यह

परियां कौन थीं ? इतने में फिर से वे परियां इमर्ज हुई । उन परियों में एक के ऊपर लिखा था 'सफलता' और दूसरी पर लिखा था 'उमंग-उत्साह' । तो बाबा ने कहा—"बच्चों का स्वागत बाप तो करते ही हैं लेकिन जो भी ईश्वरीय सेवा होती है, उसमें रिजल्ट जो निकलती है वह इन दो बातों के आधार से ही निकलती है । बच्चों में एक तो सफलता का दृढ़ संकल्प था, इसलिए यह सफलता आपके आगे जैसे माला के रूप में आई ।" क्योंकि माला से एक तो स्वागत होता है और माला विजय की भी निशानी होती है । तो बाबा ने कहा कि—यह सफलता जैसे विजय की माला लेकर आपके सामने आई । दूसरा, जो उमंग-उत्साह है वह भी विजय का आधार है, इसलिए इन दोनों परियों ने (सफलता और उमंग-उत्साह ने) आप लोगों का स्वागत किया ।

बाबा देख रहे हैं—देश-विदेश दोनों तरफ के बच्चों में इस वर्ष उमंग-उत्साह भी है और सफलता का निश्चय भी है ! तो जहाँ निश्चय होता है वहाँ विजय जरूर होती है । तो यह दोनों ही साथ-साथ आगे बढ़ाते रहना । क्योंकि जहाँ बच्चे उमंग-उत्साह का संकल्प करते हैं, निश्चय रखते हैं कि सफलता है ही—तो बीच-बीच में थोड़ा-सा हलचल भी जरूर होती है । लेकिन हलचल माना परिवर्तन । उस हलचल में ऐसा समझो कि यह मेरे परिवर्तन का एक आधार है । सिर्फ जो संकल्प रखा है उसे और अन्डरलाइन करते रहेंगे तो सफलता मिलती रहेगी । क्योंकि यह वर्ष विशेष त्रिमूर्त्ति वरदान का वर्ष है । बाप, दादा और जगदम्बा—तीनों के वरदान का वर्ष है । जगदम्बा एडवांस पार्टी की विशेष आधार है । तो एडवांस पार्टी भी आपको एडवांस में ले जा रही है । साथ-साथ जो भी महारथी एडवांस पार्टी में गये हैं, वे भी जगदम्बा के साथ आप सबको इस वर्ष के लिए विशेष मुबारक और वरदान सहयोग के रूप में दे रहे हैं । इसलिए इस वर्ष के एक-एक दिन को सफल करना है । सफलता का आधार है—स्वयं परिवर्तन होकर के दूसरों को परिवर्तन करने में सहयोगी बनना । जैसे इस वर्ष को बापदादा की प्रत्यक्षता के लिए सद्भावना वर्ष के रूप में मना रहे हो और बाप को फरिश्ते रूप में प्रत्यक्ष करेंगे, ऐसे लक्ष्य रखो कि हम सभी जो ब्राह्मण आत्मायें हैं, हम सभी को भी

फरिश्ते रूप में प्रत्यक्ष होना है । अपनी जो दृष्टि है, मन्सा संकल्प और बोल हैं, सम्बन्ध-सम्पर्क है—इन सबसे हर ब्राह्मण आत्मा में भी फरिश्ते रूप की प्रत्यक्षता करनी है । यही इस वर्ष में लक्ष्य रखो । ऐसा सन्देश देते बाबा ने सभी को बहुत-बहुत याद दी और कहा कि हर एक मेरा बच्चा स्नेही, सहयोगी, सेवाधारी है । तो सभी को सभी के साथ याद-प्यार दी । ऐसे याद-प्यार लेते हुए हम अपने साकार वतन में आ गई । ओम् शान्ति ।

२५.३.९३

सफलता का आधार है -- स्वयं परिवर्तन होकर दूसरों को परिवर्तन करने में सहयोगी बनना

(ज्ञान सरोवर के निमित्त अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज हम बाबा के पास गयी, आप सबका याद-प्यार दिया और याद-प्यार के साथ-साथ बाबा को दादी जी का सन्देश सुनाया । तो बाबा बहुत मीठा मुस्कराये और कहा—"बच्ची, ड्रामा में जो नूंध नूंधी हुई है वह किसी भी तरह पूरी होनी ही है । ड्रामा में ज्ञान-सरोवर मिलना—यह देखने में बहुत कठिन आ रहा था लेकिन जब टाइम आता है तो असम्भव से सम्भव हो जाता है । ड्रामा अनुसार बाबा को कराना है तो कैसे भी किसकी भी बुद्धि को टच करके करा लेता है । लेकिन होना है तो कराता है । "देखो, ड्रामा में ज्ञान-सरोवर बनने का पार्ट है । इसलिए तो गवर्मेन्ट की मदद भी सहज मिली है और गवर्मेन्ट को भी यह मालूम पड़ गया है कि यह स्प्रीचुअल एज्युकेशन है । उसको सिद्ध करने के लिए यह ज्ञान-सरोवर का स्थान निमित्त बना है । इसलिए जब गवर्मेन्ट तक बात पहुंच गई है और गवर्मेन्ट की तरफ से सब

कार्य अभी पूरा हो रहा है तो अब यह तो बनना ही है।

दूसरा बाबा ने कहा—ब्राह्मण बच्चों की संख्या भी बहुत बढ़नी है, कम नहीं होनी है। तो मेरे ब्राह्मण बच्चों के लिए भी स्थान चाहिए। तीसरा बाबा ने कहा—"यह वर्ष अव्यक्त वर्ष है। इस वर्ष को वरदान ही है—सफल करो तो सफलता सहज प्राप्त होगी। तो ड्रामा में इसी वर्ष में ही ज्ञान-सरोवर भी मिला है, पहले नहीं मिला। तो इस वर्ष में अनेक आत्माओं का सफल होना है, इसलिए हो रहा है।" चौथी बात बाबा ने सुनाई—वैसे भी अन्त में बच्चों को एसलम देना ही है। तो कहां जायेंगे? एशलम तो चाहिए ना। तो यह एसलम भी है।" ऐसे बाबा ने हरी झण्डी दिखाई। बाकी कई बच्चे कहते हैं कि विनाश हो जायेगा। तो बाबा ने कहा—अगर बैंक में पैसा होगा या जेब में पैसा होगा वह भी जायेगा या सिर्फ मकान जायेगा? अगर जाना ही है तो क्या भी हो—पैसा भी जायेगा, मकान भी जायेगा। लेकिन थोड़ा समय भी इसका मजा ले लें, सफल कर लें तो जिसने सफल किया उसका तो २१ जन्म के लिए बाबा के बैंक में जमा हो गया, नहीं तो ऐसे ही जायेगा। इसीलिए यह सफल होना ही है। ओम् शान्ति।

५.४.९३

आकारी से निराकारी और निराकारी से आकारी बनने का खेल

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज अमृतवेले आप सबकी याद-प्यार लेते हुए बाबा के पास वतन में पहुंची तो हर दिन का दृश्य न्यारा-प्यारा होता है। आज जाते ही देखा—जैसे कि 'आकार' निराकार में समा रहा है। लाइट की बहुत ऊंची पहाड़ी के बीच बाबा का अति सूक्ष्म आकारी रूप दिखाई दे रहा था। अभी-अभी अति सूक्ष्म आकारी रूप देख रहे थे, अभी-अभी आकार गायब होकर निराकार

शिव-बाबा दिखाई देता था। तो निराकार और आकार—यह खेल देखते-देखते, नेचुरल है जो भी कुछ देखा जाता है तो अपनी भी स्टेज वही हो जाती है, तो हमें भी ऐसे अनुभव हो रहा था कि आकारी से निराकारी और निराकारी से आकारी स्टेज अति प्यारी और सहज बनती जा रही है। तो कुछ समय यह दृश्य देखा। उसके बाद फिर बाबा जैसे कि उस लाइट की ऊंची पहाड़ी से नीचे आये और नयन मुलाकात करते हुए पूछा—बच्ची, क्या समाचार लाई हो ? मैं तो मुस्कराई—बाबा को तो पता ही होता है। फिर भी बाबा ने पूछा तो मैंने सुनाया कि—बाबा, कल समर्पित भाइयों की सेरीमनी थी। तो बाबा ने कहा—बाबा ने देखा। ऐसे कहते हुए बाबा जैसे एक सेकेण्ड से भी कम समय के लिए कहां चले गये ! फिर बाबा सामने आये तो मैंने पूछा—बाबा, आप कहाँ चले गये थे ? बाबा ने कहा—बाबा तो सारे वर्ल्ड का चक्कर एक सेकेण्ड में लगा सकते हैं। मैंने पूछा—बाबा, आपने क्या देखा ?

तो बाबा बोले—"आज मैं जब चक्र पर गया तो अमृतवेले के समय देखा—कोई बाबा से रूहरिहान कर रहा है, कोई मिलन मना रहा है, कोई क्या, कोई क्या कर रहा है। मैंने वैराइटी दृश्य देखे।" बाबा ने कहा—बच्चों का प्यार और बच्चों का संकल्प जो भी चलता है बच्चों के मन में इमर्ज होने वाला संकल्प भी बाबा के पास पहले ही स्पष्ट हो जाता है। बाबा को हर बच्चे के संकल्प का रेसपान्ड देना होता है। मैंने कहा—बाबा, सारा दिन आप यही काम करते रहते हो, क्या इसमें ही बिजी रहते हो ? बाबा ने कहा—"जितना मैं बिजी हूँ उतना कोई बिजी नहीं रह सकता और जितना मैं फ्री हूँ उतना कोई नहीं रह सकता। भले आप बच्चे मेरे सहयोगी हो लेकिन सारे विश्व की जिम्मेवारी तो बाप की है ना। तो जिम्मेवारी के हिसाब से एक-एक बच्चे को—चाहे ब्राह्मण हैं, चाहे विज्ञानी हैं, चाहे भक्त हैं, चाहे धर्म नेतायें हैं—सबको सन्तुष्ट करना होता है। क्योंकि अपने-अपने पार्ट में जिसको भी कुछ भी होता है तो वह बाप के पास ही आते हैं। मुझे सिर्फ ब्राह्मण बच्चों का काम नहीं है, सभी मेरे बच्चे हैं—चाहे अन्जान हैं, चाहे जानने वाले हैं। बच्चों को सहयोग देना बाप की जिम्मेवारी है। इसलिये मैं कितना बिजी हूँ। मैं फ्री भी हूँ क्योंकि

मेरे कार्य की गति फास्ट है, सेकेण्ड में मैं कुछ भी कर सकता हूँ। शरीर के बन्धन से, कर्म के बन्धन से मुक्त हूँ।"

फिर बाबा ने कहा—बाबा तो सभी बच्चों को याद कर रहे थे। इस समय ४ प्रकार के कार्य चल रहे हैं। एक तो वर्तमान समय डबल विदेशियों की सीजन चल रही है। दूसरा—मधुबन में मधुबन निवासी अपने-अपने कार्य में लगे हुए हैं। तीसरा—होलीस्थल (हॉस्पिटल) का कार्य चल रहा है। चौथा—ज्ञान-सरोवर का कार्य चल रहा है। यह चार कार्य चल रहे हैं। तो सभी कार्य कैसे चल रहे हैं? अच्छे चल रहे हैं या अच्छे ते अच्छे चल रहे हैं? बाबा ने कहा—सभी बच्चे जिन्होंने भी हिम्मत रखी है, तो हिम्मत वाले बच्चों को मदद देने के लिए बापदादा सदा ही बंधा हुआ है। कोई हिम्मत का जरा भी संकल्प करते हैं तो बाबा उनका साथ देने के लिए सदा एवररेडी है। तो बाबा ने कहा कि सभी बच्चे हिम्मत रखने में अच्छे हैं और हिम्मत के आधार पर ही सभी कार्य सफल भी हो रहे हैं। तो हिम्मत कभी भी नहीं छोड़ना।

फिर मैंने कहा—बाबा, ये जो सेरीमनी हुई उसके लिये विशेष सन्देश क्या है? तो बाबा ने कहा—"जिन कुमारों की विशेष सेरीमनी हुई उन बच्चों को कहना कि सदा यही वरदान याद रखें कि कर्म में साक्षीपन और स्थिति में सदा बाबा को साथी बना कर रखना है। क्योंकि कोई भी कर्म करते, वस्तुओं और व्यक्तियों के सम्बन्ध में आते यह साक्षीपन की स्थिति अथक भी बनायेगी और सफलता का बहुत सहज अनुभव भी करायेगी। तो जो भी सेरीमनी पर विशेष आये हैं वे यह दो शब्द कर्म में 'साक्षीपन' और स्थिति में 'साथीपन' का वरदान सदैव साथ रखें और विशेष यही दो शब्द अनुभव में लायेa तो सफलता का अनुभव करते जायेंगे।

ज्ञान-सरोवर वालों को भी विशेष याद-प्यार दी और कहा कि जो भी निमित्त बने हैं उन सभी को विशेष बाबा की हिम्मत, उमंग-उत्साह भरी याद-प्यार देना। हॉस्पीटल तथा मधुबन वालों के लिये कहा कि सदा विधि द्वारा वृद्धि को प्राप्त करने वाली आत्मायें हो। ऐसे ही सदा विधि से वृद्धि को प्राप्त करते रहना। फिर मैंने कहा—बाबा, अभी तो डबल विदेशियों की सीजन

समाप्त हो रही है और जो भी मधुबन से रिफ्रेश होकर गये हैं। सभी बहुत याद और अपनी स्थिति के पत्र भेज रहे हैं। तो बाबा ने कहा कि सभी डबल विदेशियों को बापदादा की डबल याद-प्यार देना। डबल याद-प्यार क्यों देता हूँ? क्योंकि इन्हों को डबल कार्य करना है। मैंने पूछा—बाबा, डबल कार्य कौनसा करना है? तो बाबा ने कहा—एक तो विदेश की सेवा करनी है और दूसरा विदेश से भारत की सेवा करनी है। इसीलिये डबल विदेशियों को डबल याद-प्यार देना। जिन्होंने भी पत्र लिखे हैं याद-प्यार के, रूहरिहान के वह सब बाबा के पास पहुँचे हैं। जैसे मधुबन से जाकर उमंग-उत्साह से चल रहे हैं, ऐसे अविनाशी भव। ऐसे कहते सभी को बापदादा ने पद्म गुणा याद-प्यार दी। ओम् शान्ति।

८.४.९३

सन्तुष्ट रहो और सन्तुष्ट करो

(मीटिंग में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज जब हम बाबा के पास सन्देश लेकर के गई तो जाते ही बाबा को सुनाया कि सभी बच्चों की यह शुभ आशा है और बड़े अधिकार से सभी ने बाबा को आने के लिए कहा है। बाबा सुनते हुए मुस्करा भी रहे थे और साथ-साथ जैसे हमें देख रहे थे ऐसे आप सभी को भी देख रहे थे। ऐसे लग रहा था जैसे बाबा वतन में नहीं हैं लेकिन मधुबन में सबसे दृष्टि द्वारा मुस्कराते हुए मिलन मना रहे हैं। थोड़े ही समय में बाबा ने हमें देखा और मुस्कराते हुए बोले—"बच्ची, बाप को बच्चों के अधिकार का सन्देश सुनकर बहुत खुशी हुई है और बच्चों को यह तो अनुभव होता ही है कि जितना बच्चे बाप को याद करते हैं, तो बाप उससे भी ज्यादा आप बच्चों को याद करते हैं। क्योंकि बाप के आगे तो सारा समय बच्चे ही रहते हैं, जो अमूल्य रत्न होते हैं वे सदा ही बाप के सामने होते हैं। यह जो बच्चे आये हैं वह हैं भी बाबा के साकार

कार्य में सहयोगी राइट हैण्ड बच्चे । तो सहयोगी बच्चों को बाप कैसे भूल सकता है ! हैण्ड के बिना तो कोई काम ही नहीं होता है । भले करावनहार मैं हूँ लेकिन साकार में करने वाले तो यही मेरे राइट हैण्ड बच्चे हैं । हैण्ड कभी अलग नहीं हो सकते हैं । तो यह राइट हैण्ड बच्चे सदा बाप के सहयोगी भी हैं और साथ भी हैं ।" मेरा संकल्प चल रहा था कि बाबा याद तो दे रहे हैं लेकिन मेरा सन्देश तो और था । बाबा ने मेरे संकल्प को कैच किया और कहा—बच्चों ने अधिकार से निमन्त्रण दिया है और बड़ी हुज्जत से बुलाया है, तो बाबा भी बच्चों के ऊपर एक हुज्जत रखते हैं । उस समय बाबा का जो रूप था वह बहुत अन्तर्मुखी था—जैसे कोई बात में लीन हो जाते हैं । इसी स्वरूप से बाबा ने कहा—"एक बात बच्चों की बाप के सामने बार-बार आती है । बच्चों ने वायदे भले बहुत बार मन से वा लिखकर के किये हैं, मिलन भी मनाया है । परन्तु वह आश अभी पूरी नहीं की है ।" मैंने कहा—बाबा, वह कौनसी आश आपकी रह गई है ? तो बाबा ने कहा—"बहुत छोटी-सी बात है । बाप यह तो देखते हैं कि बच्चे चाहते भी हैं, लक्ष्य रखकर चलते भी हैं लेकिन लक्ष्य और करना—उसमें अन्तर पड़ जाता है । बाबा यही चाहते हैं कि कोई भी कारण को निवारण करते हुए सभी बच्चे स्वयं सदा सन्तुष्ट रहें और दूसरों को, जो सहयोगी हैं, उन्हों को भी सन्तुष्ट करते हुए चलें ।" बाबा का भाव यही था कि कारण नहीं बतायें, कारण को निवारण करते हुए स्वयं भी सन्तुष्ट रहें और औरों को भी सन्तुष्ट रखें । बाबा ने कहा—'बाप समान'-' बाप समान' बच्चे कहते हैं लेकिन अगर यह आश बाबा की पूर्ण कर दें तो यही 'बाप समान' बनना है—तो हम तो सुनते-सुनते मुस्करा ही रही थी । फिर बाबा ने कहा—"मैं जानता हूँ कि यह कठिन सब्जेक्ट तो है, इसमें कई बातें बच्चों के सामने आती हैं । लेकिन इसमें पास होने के लिए कुछ मिटना पड़ता है और कुछ मिटाना पड़ता है । इसी पुरुषार्थ से सफल हो जायेंगे ।"

बाबा की इस आश को पूर्ण करने के लिए सिर्फ यह दृढ़ प्रतिज्ञा करो—अगर मुझे इसके लिए कोई सर्विस का चांस भी छोड़ना पड़े या नाम और शान भी छोड़ना पड़े तो मैं छोड़ूंगी लेकिन इस व्रत को नहीं छोड़ूंगी ।

जब इतना दृढ़ संकल्प करेंगे तब आप यह बाबा की आश पूर्ण कर सकेंगे। तो बाबा चाहते हैं—बच्चे इस थोड़ी-सी कठिन सब्जेक्ट में पास होकर दिखायें। इसमें पास होना—यही निशानी है पास विद आनर बनने की और सदा बाबा के पास वा साथ रहने का यही साधन है। तो पास होना है, पास करना है और पास रहना है। तो बाबा बच्चों को आफर करते हैं कि अव्यक्त वर्ष में अभी और ६ मास जो बाकी हैं, उसमें ऐसा करके दिखाओ। जैसे सेवा का कोई भी विशेष कार्य होता है तो समझते हो कि हमारा भी इसमें सहयोग हो, हमारा भी नाम हो तो बहुत अच्छा। ऐसे इसके लिए भी ६ मास यह लक्ष्य रखो कि मुझे इसमें (सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने में) नम्बर आगे लेना है। तो जो बच्चे इस बात में पास होंगे—ऐसे पास बच्चों से मिलने बाबा आयेंगे, मिलेंगे, हंसेंगे-हँसायेंगे, पिकनिक करेंगे। लेकिन बाबा ६ मास इसकी रिजल्ट देखना चाहते हैं। मैंने कहा—बाबा, यह तो आपने बड़ा काम दे दिया है! बाबा ने कहा—"बड़ी बात क्या है! यह तो होना ही है अव्यक्त वर्ष मनाना माना ही बाप समान बनना है और बाप समान बनने का अर्थ ही है कि बाबा की यह आश पूर्ण करके दिखाना। बच्चों ने हुज्जत वा अधिकार रखा है तो बाबा ना करने नहीं चाहते हैं क्योंकि बाबा को अपने से भी ज्यादा बच्चों का स्नेह-रिगार्ड बहुत है। लेकिन जैसे बच्चों ने हुज्जत रखी है ऐसे बाप भी हुज्जत रखते हैं।"

फिर बाबा ने कहा—"बच्चों को यह रिजल्ट देखनी चाहिए कि जितना समय बीत चुका इतने समय में स्वयं की रिजल्ट और सेवा की रिजल्ट—दोनों में अपने से वा सेवा से सन्तुष्ट हैं? बाबा ने तो मुरली में बच्चों को बार-बार यह इशारा दिया है कि ९ लाख सतयुग की पहली स्थापना की जो संख्या है उसे पूरा करना है। तो इसके लिए सेवा में और स्वयं में कितना कुछ करना है! फिर बाबा ने हमसे ज्ञान-सरोवर का समाचार पूछा। मुझे जितना मालूम था उतना सुनाया। बाबा ने कहा—जब भी कोई कार्य शुरू करते हो तो पहले ब्रह्मा बाबा का विशेष सलोगन सदा याद रखो—"कम खर्च बालानशीन।" दूसरा बाबा ने ओम् शान्ति भवन के हाल को याद किया और कहा

कि—"बाबा यह ओम् श. भवन का हाल देखकर बहुत खुश होते हैं और सभी खुश होते हैं। क्योंकि यह जि ही सिम्पल है उतना ही ब्युटीफुल है। तो कुछ भी बनाओ उसमें लक्ष्य ो कि सिम्पल भी हो और ब्युटीफुल भी हो, प्यारा भी हो तो कुछ न्यारा भी लगे। तो यह दो बातें ध्यान में रखते हुए काम करना।" उसके बाद बाबा ने सभी के प्रति याद-प्यार दिया और कहा—सदा सहयोगी और सदा साथ रहने वाले विशेष बच्चों को एक-एक को एक-दो से ज्यादा याद-प्यार देना। ओम् शान्ति।

३०.४.९३

प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष रूप दिखाओ

आज विशेष दादी जानकी और अपनी दादी वा अन्य दादियों के याद-सन्देश के साथ-साथ देश-विदेश के बाबा के बच्चों की याद लेकर बाबा के पास पहुंची तो दूर से ही मधुर रूप से मीठी मुलाकात हुई। बापदादा बोले—आज विशेष बच्चों की याद लाई हो। मैं बोली—"बाबा, दादी जानकी विदेश सेवा पर तो गई। अब और दादियां भी सब अपने-अपने सेवास्थान पर जा रही हैं। मधुबन में भी सीजन चेंज हो रही है। ब्राह्मणों के मिलन-मेले बाद अब योग-शिविर शुरू हो रहे हैं।" बाबा मुस्कराये और ऐसे लगा जैसे बाबा विशेष बच्चों को इमर्ज कर उनसे मिलन मनाने में बिजी हो गये और कुछ समय बाद बोले—"अपने मुरब्बी बच्चों को देख-देख कितना दिल हर्षाता है! आदि से अब तक सदा हर कार्य में साथी बन स्थापना और वृद्धि में सहयोगी रहे हैं। कभी-कभी बापदादा बच्चों को अथक सेवा और अधिक सेवा में बिजी देख मन ही मन में बच्चों को बहुत प्यार करते हैं—वाह मेरे साथी बच्चे, वाह! बस, बाप बच्चों में, बच्चे बाप में लवलीन हो जाते। ऐसे विशेष बच्चों को बाप भी अन्दर ही अन्दर दुआयें देते।"

ऐसे कुछ समय तो बापदादा बच्चों के स्नेह में ही समाये हुए थे। फिर

कुछ समय बाद बाबा बोले—"बच्ची, इस बारी विदेश वाले वा भारत वाले बच्चों ने मनाया भी बहुत है, सुहेज भी किये हैं और साथ में प्रतिज्ञायें भी बहुत की हैं। बाबा बच्चों की खुशी में सदा खुश हैं। बच्चे एक गुणा तो बाप पद्म गुणा खुश होते हैं। अब बाप प्रतिज्ञा को प्रत्यक्ष रूप में देखना चाहते हैं। क्योंकि बाप जानते हैं कि अब दिन-प्रतिदिन समय बहुत नाजुक हो रहा है और होना है। एक तरफ—माया कड़े संस्कार-स्वभाव के रूप में, अनुमान, ईर्ष्या के रूप में आकर याद, सेवा और स्नेह में हलचल मचाने की कोशिश करती रहती है। दूसरे तरफ—प्रकृति भी वायु, जल, अन्न दूषित करती रहती। तीसरे तरफ—मनुष्य आत्माओं की परेशानियों, असन्तुष्टता से भरे हुए दुखदायी वायब्रेशन्स बढ़ते जाते हैं। चौथी तरफ—विकारी अशुद्ध आत्माओं के विकारों के संस्कार वार करते हैं। ऐसे अति में जाने वाले वायुमण्डल में सेफ रहने के लिए बच्चों को अब बहुत सदा शक्तिशाली स्थिति, बेहद की वैराग वृत्ति और सदा हर आत्मा की विशेषता देखने की दृष्टि और उपराम हो कर्म करने की कृति की आवश्यकता है, किसी भी व्यर्थ वा अशुद्ध वायब्रेशन का प्रभाव वार न कर सके।" इसलिए बापदादा ने विशेष लास्ट में इशारा भी दिया कि सदा स्वयं शुद्ध वायब्रेशन्स-धारी बन दूसरों की भी पावरफुल वायब्रेशन्स से सेवा करो। लेकिन इस सूक्ष्म सेवा की सफलता का आधार है कि हर एक स्वयं को चेक करे कि—

(१) मैं स्वयं अपने स्वयं के व्यर्थ वायब्रेशन वा अशुद्ध संस्कारों के प्रभाव से मुक्त हूँ?

(२) अपने सहयोगी साथियों के व्यर्थ वातावरण के प्रभाव से मुक्त हूँ?

(३) बाहर के तमोगुणी अशुद्ध आत्माओं के वातावरण वायुमण्डल से मुक्त हूँ?

जो स्वयं के व्यर्थ वायब्रेशन्स वा अशुद्ध संस्कारों से मुक्त नहीं है वह औरों के प्रभाव से मुक्त हो नहीं सकता और मुक्त आत्मा ही शक्तिशाली वायब्रेशन्स से औरों की सेवा कर सकती है। बापदादा तो हर बच्चे को अब बेहद की स्थिति और सेवा में बिजी देखना चाहते हैं। इसलिए अनेक प्रभावों

की हद (limit) से मुक्त होना अति आवश्यक है। सभी बच्चों ने अब तक जो वाणी वा सम्पर्क द्वारा सेवायें की हैं, कर रहे हैं—वह ड्रामा अनुसार बहुत अच्छी की हैं। लेकिन अब यह सूक्ष्म बेहद की सेवा करने का समय है। क्योंकि सूक्ष्म की गति फास्ट होती है। समय की गति भी फास्ट जा रही है। तो सेवा भी फास्ट करो और डबल लाइट बन उड़ो। ऐसे मधुर बोल बोलते बापदादा ने सब बच्चों को बहुत-बहुत याद दी और कहा कि सदा सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने की मुबारक हो ! मुबारक हो ! ! डबल विदेशी बच्चों को भी बहुत-बहुत याद दी। ऐसे मीठी दृष्टि लेते मैं इस साकार दुनिया में पहुंच गई। ओम् शान्ति।

८.६.९३

आपरेशन नहीं-शिवमन्त्र स्वरूप बच्चों के लिए छू-मन्त्र है

(दादी जी के प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज अमृतवेले विशेष अपनी प्यारी दादी जी की याद-प्यार और आंख के ऑपरेशन का समाचार लेकर बापदादा के पास गई। बापदादा से स्नेह सम्पन्न मिलन मनाते समाचार सुनाया तो बापदादा बहुत-बहुत लवलीन रूप से मुस्कराये और बोले—"बच्ची तो सदा बाप के समीप साथी है। इसलिए स्नेह और सहयोग की छत्रछाया में ही सदा चलती-उठती और रहती ही है। न बाप उनसे अलग है, न वह बाप से अलग रहती। जैसे ब्रह्मा बाप और शिव बाबा जुड़वे हैं वैसे मेरे अनन्य बच्चे भी सदा निमित्त भाव से सेवा में कम्बाइन्ड हैं। स्वप्न में भी अलग नहीं हो सकते। यह ऑपरेशन तो सिर्फ शिव-मन्त्र स्वरूप बच्चों के लिए छू-मन्त्र छोटा-सा खेल है। शरीर का हिसाब तो चुक्तू होता रहता। लेकिन श्रेष्ठ आत्माओं का श्रेष्ठ हिसाब तो सदा बाप के साथ जुड़ा हुआ है। बच्ची बहुत बिजी रहती है। तो ड्रामा में यह

भी रेस्ट मिलने का आधार बना है। यह दो दिन बच्ची को सूक्ष्मवतन में ही रेस्ट करनी है। ऐसे बच्चों को तो विशेष स्व-उन्नति और सेवा की नवीनता के प्लैन गुह्य टचिंग्स होने का चांस मिलता है। इसलिए विशेष वतन का अनुभव होना है। ऐसे कहते बापदादा ने मीठी दादी को अपनी बाहों में समा लिया। साथ-साथ हमारी मोहिनी बहन, मुन्नी बहन और सर्व अहमदाबाद निवासी बच्चों को भी बहुत-बहुत याद-प्यार दी और बोले—बच्चों को स्थूल कार्य का चांस बहुत है। लेकिन स्थूल और सूक्ष्म रूहानी प्रोग्रेस के बैलेन्स की ब्लैसिंग्स बच्चों को सदा मिलती रहती हैं और जितना चाहें उतना बाप द्वारा सहयोग का स्पेशल अनुभव कर सकते हैं। ओम् शान्ति।

२४.६.९३

एडवांस और एडवाइज़र पार्टी का मिलन

(मीठी मम्मा के स्मृति दिवस पर अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज जब हम वतन में गई तो हर समय वतन का दृश्य तो न्यारा और अति प्यारा होता ही है। आज जाते ही देखा कि बाबा सामने ही बाहें पसार कर मुस्कराते हुए खड़े हैं और "आओ बच्चे, आओ बच्चे" कहकर बुला रहे हैं। हमने देखा—जैसे लाइट के बादलों के बीच में फरिश्तों के फेस दिखाई देते हैं, ऐसे दो साइड से लाइट के बादलों के बीच अलग-अलग फेस दिखाई दे रहे थे। एक तरफ बादलों के बीच में कुछ ब्राह्मण आत्मायें थीं और दूसरे तरफ के बादलों में सिर्फ आकार रूप में कुछ फेस दिखाई दे रहे थे, बाकी सारा शरीर मर्ज था। तो जैसे ही बाबा ने "आओ बच्चे, आओ बच्चे" कहा तो हमने देखा—जो सभी लाइट के बादलों के पीछे छिपे हुए आकारी सूक्ष्म रूप में थे उससे थोड़ा प्रत्यक्ष में दिखाई दिये। सामने जो दो साइड दिखाई दे रहे थे, उसमें एक साइड में आगे-आगे मम्मा, दीदी तथा पीछे विश्वकिशोर भाई और

मुख्य एडवांस पार्टी में जो गये हुए हैं, वे सभी थे । दूसरी साइड में आगे-आगे हमारी दादी और दादी जानकी थी और बाकी सब दादियां तथा अन्य भाई-बहनें पीछे-पीछे थे । दोनों ग्रुप को बाबा ने दृष्टि दी और नैनों के इशारे से ही कुछ बोले । तो ऐसे लगा जैसे आटोमेटिक डायरेक्शन मिलता है, ऐसे नयनों के इशारे से कुछ डायरेक्शन मिला और दोनों ग्रुप जो अलग-अलग दिखाई दे रहे थे—उनके बीच में जैसे एक ब्रिज बन गई और ब्रिज (पुल) बनने से दोनों ग्रुप एक-दूसरे के समीप आ गये तथा एक-दूसरे से नयन मुलाकात करने लगे ।

उसके बाद बाबा ने कहा—"आज तो मम्मा का दिन है । मम्मा, आप बच्चों को क्या सुनाती हो ?" मम्मा ने कहा—बाबा, हमको तो आज यह दृश्य बहुत अच्छा लग रहा है । आगे मम्मा ने कहा—"देखो, एक तरफ है एडवांस पार्टी और दूसरे तरफ है एडवाइजर पार्टी । हम एडवांस पार्टी वाले तो एवररेडी हो गये हैं । लेकिन अभी एडवाइजर पार्टी को एवररेडी होने में थोड़े टाइम की देरी है । यह टाइम ही दोनों ग्रुप के बीच में एक अन्तर के रूप में है । अभी आप लोग भी एवररेडी बन जाओ तो फिर यह ब्रिज बन जायेगी और विश्व का बहुत जल्दी परिवर्तन हो जायेगा । बच्चों को याद होगा कि आदि से लेकर साकार में भी मम्मा एक बात कहा करती थी कि निर्मान बनो तो निर्माण का कार्य बहुत तीव्र गति से चलेगा । मम्मा अभी भी यही दो शब्द सभी बच्चों को अन्डरलाइन कराती है कि निर्मान बनो और निर्माण करो । ऐसे कहते हुए मम्मा ने दादी और दादी जानकी से पूछा—अभी आप लोगों का ग्रुप तैयार है ? तो दोनों दादियां बड़ी गम्भीरता से मुस्करा रही थीं । उस मुस्कराहट में गम्भीरता भी थी और रमणीकता भी थी । दोनों दादियाँ मम्मा को दोनों ही भाव से देख रही थीं । तो मम्मा ने पूछा—अच्छा, बताओ, कितने रत्नों की माला बाबा के गले में डाली है ? तो दोनों दादियां सिर्फ मुस्करा रही थीं, कोई जवाब नहीं दे रही थी । मम्मा ने कहा—"अभी तो बापदादा के गले में ९ लाख की माला चाहिए । अभी तो छोटी माला है, आपको तो बहुत बड़ी माला तैयार करनी पड़ेगी ।" दादी ने मम्मा से पूछा—मम्मा, आपके एडवांस पार्टी

की तैयारी पूरी हो गई है ? मम्मा ने कहा—पूरी तो नहीं हुई है लेकिन अभी एडवांस पार्टी के और भी अच्छे-अच्छे रत्न हम फास्ट गति से बुला रहे हैं। ऐसे दोनों ग्रुप्स की चिटचैट चल रही थी।

बाबा दोनों ग्रुप्स की रूहरिहान सुनते हुए मुस्करा रहे थे। उसके बाद बाबा ने कहा—"देखो बच्ची, बाबा ने इस वर्ष सभी बच्चों को बहुत ही पावरफुल इशारे दिये हैं। जैसे समय फास्ट जा रहा है ऐसे समय की गति प्रमाण आप बच्चों की गति समय से भी फास्ट होनी चाहिए। अभी वर्तमान समय बाबा बच्चों द्वारा संकल्प और बोल में एक शब्द का परिवर्तन देखना चाहते हैं। वो एक शब्द है कि हर संकल्प वा बोल में, हर बात में कारण के बजाए 'निवारण' शब्द आये।" जैसे डबल विदेशी बच्चों को इस सीजन में विशेष कहा था कि समटाइम शब्द समाप्त करके एवररेडी हो जाओ। इसी रीति से बाबा कहते हैं—कारण के बजाए निवारण शब्द सब बातों में लाओ। 'यह कारण है'—यह नहीं बोलो ; 'यह निवारण है।' यह बोलो। निवारण खुद को भी दो और दूसरों को भी दो; कारण न खुद के लिए बनो, न दूसरों को बनाओ। क्योंकि यह कारण शब्द ही है जो तीव्र गति को ढीला कर देता है और 'निवारण' शब्द तीव्र गति से निर्माण का कार्य करेगा। इसलिए बाबा आज मम्मा के दिन पर सभी को मम्मा की तरफ से और तुम्हारी प्यारी दीदी वा विश्व किशोर भाई तथा जो एडवांस पार्टी के अनन्य बच्चे हैं, उन सबकी तरफ से यही एक शब्द—परिवर्तन (कारण शब्द को निवारण शब्द में परिवर्तन) के स्मृति की सौगात देते हैं। बाबा ने कहा—"जैसे कोई भी गिफ्ट बहुत सम्भाल कर रखी जाती है और उस गिफ्ट से बहुत प्यार होता है। तो एडवांस पार्टी की यह गिफ्ट (कारण के बजाए निवारण शब्द की गिफ्ट) सम्भालकर रखना। इस गिफ्ट को प्रैक्टिकल में लाना ही सम्भालना है।" ऐसे महावाक्य उच्चारण करते हुए बाबा ने सभी बच्चों को वतन में इमर्ज किया और बहुत स्नेह से याद-प्यार दी।

रिट्रीट हाउस के उद्घाटन समारोह में आये हुए सभी भाई-बहनों को भी बाबा ने बहुत-बहुत याद-प्यार देते कहा—"सभी बच्चों के संकल्प वा कर्म में

हिम्मत है। इसलिए हिम्मत का फल प्रत्यक्ष रूप में बाबा की मदद का अनुभव कर रहे हैं। बाबा सर्व बच्चों के सहयोग की अंगुली देख हर्षित हो रहे हैं। जिन बच्चों ने रात-दिन लगकर के इस रिट्रीट हाउस को इतना सुन्दर सजाया है उन रत्नों को बाबा विशेष रूप से, मेहनत का प्रत्यक्षफल—मोहब्बत से दिल के अन्दर समा रहे हैं। सभी ने बड़े प्यार से सेवा की है—चाहे संकल्प से की, चाहे कर्म से की, चाहे धन से की। इसलिए इस रिट्रीट हाउस में एक-एक वस्तु में जैसे प्यार भरा हुआ है और आगे भी सब प्रकार से सफल करते रहना तथा सफलता का बर्थ-राइट (जन्मसिद्ध अधिकार) प्रत्यक्ष रूप में देखते रहना।" फिर बाबा ने सभी भारतवासी बच्चों को, मधुबन को भी इमर्ज किया। सभी को बाबा ने दृष्टि दी और कहा—सब अमूल्य रत्न हो, सदा उड़ती कला में रहने वाले हो। ऐसे याद-प्यार का वरदान लेते हुए जब मैं बाबा को भोग स्वीकार कराने लगी तो फिर से पहली वाली सीन इमर्ज हुई—सभी आपस में मिल रहे थे और भोग खिला रहे थे। फिर बाप, दादा, मीठी मम्मा, दीदी और विश्वकिशोर भाई ने पंचमुख याद-प्यार दी। सभी की याद-प्यार तथा सन्तुष्टमणि बनने वा सन्तुष्टता की लाइट-माइट फैलाने की गिफ्ट लेते हुए मैं अपने साकार वतन में आ गई।